CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

भारतीय भाषाओं में लिप्यंतरण

(Transliteration in Indian Languages)

2·2

भाग–१

(लिप्यंतरण—सिद्धांत व प्रयोग; हिंदी : मराठी / गुजराती / बंगला / उर्दू / अंग्रेजी)

डॉ० राम प्रकाश सक्सेना

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

भारतीय भाषाओं में लिप्यंतरण

(Transliteration in Indian Languages)

भाग–१

(लिप्यंतरण—सिद्धांत व प्रयोग; हिंदी : मराठी / गुजराती / बंगला / उर्दू / अंग्रेजी)

लेखक

डॉ० राम प्रकाश सक्सेना

एम० ए० (अंग्रेजी; भाषाविज्ञान; हिंदी); बी० टी०;
एल-एल० बी०; पी-एच० डी० (भाषाविज्ञान)

भाषाविज्ञान, विदेशी तथा भारतीय भाषा विभाग

नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर

मुद्रण स्थल

नागपुर विद्यापीठ मुद्रणालय
नागपुर
१९७९

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

प्रकाशक :
बलराज अहेर
कुलसचिव
नागपुर विद्यापीठ, नागपुर

⊕

मूल्य २४ रुपये

⊕

© नागपुर विद्यापीठ

⊕

मुद्रक :
क० मा० सावंत
व्यवस्थापक
नागपुर विद्यापीठ मुद्रणालय
नागपुर

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

श्रद्धेय गुरुवर पंडित विद्यानिवास जी मिश्र
को सादर भेंट
राधानाथ

श्रद्धेय स्वर्गीय पिताजी
की
स्मृति में

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

सुवाक

हर्ष का विषय है कि हम डॉ. राम प्रकाश सक्सेना की एक अन्यतम कृति "भारतीय भाषाओं में लिप्यंतरण"– 'भाग-१' का प्रकाशन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त आर्थिक सहायता से कर रहे हैं। लेखक इस विश्वविद्यालय के भाषाविज्ञान, विदेशी व भारतीय भाषा विभाग में पिछले छह वर्षों से अधिव्याख्याता हैं। इस अल्प समय में इन के लगभग दो दशक लेख विभिन्न प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं या अखिल भारतीय भाषाविद सम्मेलनों में पढ़े जा चुके हैं। इस से पूर्व प्रकाशित इन की पुस्तक "बदायूं जनपद की बोली का एककालिक अध्ययन" का बोलियों पर अधुनातन पद्धति से किए गए वैज्ञानिक कार्यों में एक विशेष स्थान है।

भारत में भाषाविज्ञान पर मौलिक पुस्तकों का अभाव है। यह अभाव भारतीय भाषाओं में तो और भी खलता है। इस दृष्टि से डॉ. सक्सेना का प्रयास श्लाध्य है। इन्होंने जिस महान उद्देश्य को लेकर यह पुस्तक लिखी है, वह भी सराहनीय है। देवनागरी एक अखिल भारतीय लिपि है। यदि भारत की सभी भाषाएँ अपनी प्रचलित लिपियों के साथ-साथ देवनागरी में भी लिखी जाएँ, तो यह अनेक दृष्टियों से बड़ा लाभप्रद होगा। लेखक की यह पुस्तक इस दृष्टि से बड़ी उपयोगी होगी, क्योंकि इस में प्रथम बार इस विषय पर वैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया गया है।

धीरे-धीरे भारतीय भाषाओं में प्रत्येक विषय पर पुस्तकें लिखी जा रही हैं। इन पुस्तकों में संदर्भ के रूप में विदेशी व्यक्तियों, स्थानों व पुस्तकों आदि के नामों का उल्लेख रहता है। इन के सही उच्चारण न जानने के कारण बहुत से लेखक इन नामों को रोमन लिपि में लिख देते हैं। यह प्रवृत्ति काम चलाऊ अवश्य है, पर भविष्य में इन नामों को भारतीय लिपियों में लिखना आवश्यक भी होगा और श्रेयस्कर भी। लेखक का प्रस्तुत कार्य व्यक्तिवाचक संज्ञाओं की वर्तनी के मानकीकरण की ओर एक अप्रतिम प्रयास है।

लेखक ने जिस सूक्ष्मता से कई भाषाओं का अध्ययन व अवलोकन करके जो निष्कर्ष निकाले हैं, वे उन के अध्यवसाय, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा शोध वृत्ति के परिचायक है। मुझे विश्वास है कि यह नवीन शोध पुस्तक विशेषज्ञ तथा सामान्य पाठक दोनों में समादृत होगी।

वा. मो. काळमेघ

दिनांक : २८-३-७९

कुलगुरु
नागपुर विद्यापीठ
नागपुर

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

पुरोवाक

किसी अलिखित भाषा को लिपि देने अर्थात उसको लिखित बनाने, एक लिपि से दूसरी लिपि में रूपांतरित करने, लिपि-सुधार, वर्तनी-सुधार आदि का सीधा संबंध भाषाविज्ञों से है। किंतु खेद है कि भारत में भाषाविज्ञों की कमी है। सभी प्रकार की शिक्षा का माध्यम भाषा होते हुए भी भाषा के नाम पर जो कुछ भी पढ़ाया या किया जाता है, उसमें साहित्य का वर्चस्व बना रहता है। परिणामस्वरूप साहित्य के प्रकांड पंडितों तक को यह कहते सुना जाता है कि "हिंदी में जैसा लिखा जाता है वैसा पढ़ा जाता है।" ऐसे कथन भाषा से संबंधित सामान्य सिद्धांतों की अनभिज्ञता के द्योतक हैं। इस प्रकार के कथन कितने भ्रामक हैं तथा अशिक्षित व अर्ध शिक्षित नेताओं और जनता को कितना गुमराह करते हैं, इसका आकलन केवल भाषाविज्ञ ही कर सकता है। किसी विषय पर भ्रामक प्रचार जब अधिक हो जाता है, तब उस विषय पर वस्तुनिष्ठ अध्ययन की प्रक्रिया में कई प्रकार की बाधाएँ उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। फिर भी भाषाविज्ञों का कर्तव्य है कि वे इन विषयों पर वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रस्तुत करें। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए ऊपर इंगित की गई समस्याओं में से केवल लिप्यंतरण तथा तत्संबंधित समस्याओं का वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है।

आचार्य विनोबा भावे तथा अन्य कर्मठ व्यक्तियों की ओर से यह प्रयत्न चल रहा है कि सभी भाषाएँ देवनागरी में लिखी जाएँ। वैज्ञानिक दृष्टि से विचार करने पर यह प्रतीत होता है कि यह कार्य इतना आसान नहीं है जितना साधारणतया समझा जाता है। प्रस्तुत शोध कार्य से तत्संबंधित बहुत सी संभावित कठिनाइयाँ तथा उनके समाधान प्रकाश में आएँगे।

बचपन में मैं पुस्तकों में 'सिकंदर', 'अरस्तू', 'अफ़लातून' आदि नाम पढ़ा करता था। मुझे कुछ दिनों बाद 'अलेक्ज़ेंडर, एरिस्टॉटिल, प्लेटो' आदि भी पढ़ने को मिले। पर यह मेरी समझ में बहुत बाद में आया कि ये क्रमशः एक व्यक्ति नाम के दो संस्करण हैं। मैं यही सोचा करता था कि ऐसा क्यों है। जब मैं नागपुर विश्वविद्यालय में भाषाविज्ञान का प्राध्यापक होकर आया तब मुझे मराठी सीखने की आवश्यकता महसूस हुई। सीखने की इसी प्रक्रिया में मराठी में प्रयुक्त 'टिळक' का अपने राष्ट्रनेता 'बाल गंगाधर तिलक' से संबंध स्थापित करने में मुझे कठिनाई हुई। उसी समय से मेरे मन में यह जिज्ञासा थी कि व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के लेखन में भी इतना अंतर क्यों होता है, इसकी छानबीन की जाए। यह पुस्तक इस दिशा में भी एक प्रयास है।

इसी प्रकार मराठी, गुजराती व बंगला सीखते समय अंग्रेज़ी से आगत शब्दों को मैं स्वभावतः हिंदी की भांति लिख जाता था, जबकि इन में से बहुत से शब्द इन भाषाओं में भिन्न लिखे जाते हैं। उसी समय यह इच्छा जाग्रत हुई कि समय मिलने पर हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं में आगत शब्दों की वर्तनियों का व्यतिरेकी अध्ययन प्रस्तुत किया जाए, जिस से द्वितीय भाषाशिक्षण में शिक्षक व छात्र दोनों लाभ उठा सकें। इस आशय से भी यह अध्ययन प्रस्तुत है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

प्रस्तुत पुस्तक एक वृहत परियोजना का प्रथम सोपान है। संपूर्ण परियोजना में अंग्रेज़ी तथा सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं (नेपाली सहित) के लिप्यंतरण का हिंदी के साथ तुलनात्मक व व्यतिरेकी अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा। इस पुस्तक में विभिन्न प्रकार की लिपियों में लिखित भाषाओं में से 'मराठी, गुजराती, बंगला, उर्दू व अंग्रेज़ी' को हिंदी के साथ व्यतिरेकी अध्ययन के लिए लिया गया है।

प्रस्तुत शोध कार्य में भाषाविज्ञान की जिस शब्दावली का प्रयोग किया गया है, वह "मानविकी—V, भाषाविज्ञान" (वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का स्थाई आयोग, भारत सरकार, नई दिल्ली) से ली गई है। इस में कुछ शब्द संप्रति-प्रचलित शब्दों से कुछ भिन्न भी हैं। अतः सुविधा के लिए पृष्ठ ३ पर इन शब्दों के अंग्रेज़ी पर्याय के साथ-साथ हिंदी में प्रचलित अन्य पर्याय भी दिए गए हैं।

इस पुस्तक के लिए विषय-सामग्री एकत्रित करने तथा उस की पुष्टि करने में कई मित्रों तथा महानुभावों का कृपापूर्ण स्नेहिल सहयोग मिला। इन में से कुछ नाम इस प्रकार हैं— मराठी के लिए मेरे सहकर्मी तथा मित्र डॉ. सु. बा. कुलकर्णी (अध्यक्ष, भाषाविज्ञान, विदेशी तथा भारतीय भाषा विभाग), गुजराती के लिए श्री नरेंद्र परीख (प्राचार्य, महाविद्यालय उपलेटा, ज़िला – राजकोट, गुजरात), डॉ. उषा नायर (गुजराती लेक्चरर, पश्चिम क्षेत्रीय भाषा केंद्र, पुणे) और श्री भास्कर व्यास (गुजराती लेक्चरर, वृ. म. वसंत वाणिज्य एवं ज. म. ठाकर कला महाविद्यालय, नागपुर) तथा बंगला के लिए डॉ. नील माधव सेन (रीडर, डेक्कन कॉलेज, पुणे)। इन सब के प्रति आभार प्रदर्शन करने में मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। आदरणीय गुरुवर्य डॉ. रमेश चंद्र महरोत्रा (अध्यक्ष, भाषाविज्ञान विभाग, रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर) ने कुछ नामों के लिप्यंतरण के विषय में अपने सुझाव देकर मुझे अनुगृहीत किया। पुस्तक के प्रथम अध्याय में (विशेषतः १.७) कुछ सुझावों के लिए मैं आदरणीय गुरुवर्य डॉ. देवीशंकर द्विवेदी (अध्यक्ष, भाषाविज्ञान विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र) का आभारी हूँ। आदरणीय गुरुवर्य डॉ. अशोक रामचंद्र केळकर (प्रोफ़ेसर, अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान, डेक्कन कॉलेज, पुणे) ने ग्राह्यता के सिद्धांत (७.४) पर अपने अमूल्य सुझाव देकर मुझे अनुगृहीत किया। उन्होंने 'acceptability' के स्थान पर 'tolerability' शब्द का सुझाव दिया है। भविष्य में इस विषय पर विस्तृत चर्चा के समय लेखक इन सुझावों का लाभ अवश्य उठाएगा। इस कार्य को आगे बढ़ाने की प्रेरणा मुझे आदरणीय डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव (अध्यक्ष, भाषाविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली) से मिली। उन के प्रति मौन हो कर विनत हूँ। मैं अपनी पत्नी डॉ. साधना सक्सेना का भी आभारी हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक को पूरा करने में समय-समय पर मेरी मदद की।

मेरे सविनय निवेदन पर श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. उदयनारायण तिवारी ने इस पुस्तक की 'भूमिका' लिखकर लेखक को अनुगृहीत किया है। किंतु देर से प्राप्त होने के कारण 'भूमिका' पुस्तक में प्रकाशित नहीं हो पाई, इस का मुझे खेद है तथा मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। फिर भी इस पुस्तक के संबंध में 'भुमिका' में दिए गए कुछ वाक्य मल पृष्ट पर उद्धृत कर दिए गए हैं।

मैं अपने विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. वा. मो. काळमेघ का आभारी हूँ, जिन्होंने 'मुवाक' लिखकर लेखक को प्रोत्साहित किया। प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन विश्वविद्यालय

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त अनुदान से हो रहा है। अतः उस का सहयोग भी अविस्मरणीय है। मैं नागपुर के कोठारी प्रेस तथा मजूमदार प्रेस का भी कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक में प्रयुक्त गुजराती व बंगला वर्णों का प्रबंध किया। अंत में मैं विद्यापीठ मुद्रणालय के सभी कर्मचारियों तथा व्यवस्थापक श्री क. मा. सावंत को साधुवाद देता हूँ। इन सबके सहयोग से ही इस पुस्तक को पाठकों के समक्ष आने का अवसर मिल रहा है।

मेरे पिताजी स्वर्गीय श्री महीलाल मेरे प्रथम गुरु भी थे। उन्होंने मुझ में बचपन से ही शोध की जिज्ञासा जाग्रत की। वे प्रत्येक विषय पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार करने को प्रेरित करते थे। आज वे नहीं है। अतः उन की स्मृति में यह पुस्तक उन सब गुरुजनों को सादर समर्पित है, जिन्होंने इस जिज्ञासा-ज्योति को प्रज्वलित रखकर लेखक को शोध कार्य में निरत रहने की प्रेरणा दी।

यहाँ लिप्यंकन एवं लिप्यंतरण पर अभी तक हुए कुछ कार्यों का संक्षिप्त वर्णन समीचीन होगा। यूरोप तथा अमेरिका में भाषाविज्ञान के अध्ययन की प्रगति के साथ-साथ लिप्यंकन एवं लिप्यंतरण की समस्या विद्वानों के सम्मुख आई। इस के समाधान के लिए कई लेखन प्रणालियों का आविर्भाव हुआ। इन सभी प्रणालियों द्वारा रोमन लिपि को विविध संकेतों से सुसज्जित कर उसे विश्व की समस्त भाषाओं एवं बोलियों के लेखन के लिए सक्षम बनाने का प्रयत्न किया गया। स्वतंत्रता से पूर्व भारत के लिए रोमन लिपि के संबंध में दो महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित हुए। पहला लेख १९३५ ई. में कलकत्ता विश्वविद्यालय के शोधपत्र 'डिपार्टमेंट ऑव लेटर्ज़' भाग २७ में प्रकाशित डॉ. सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या का है, जिसका शीर्षक है—'भारत के लिए रोमन लिपि'। दूसरा लेख, जो १९४२ ई. में एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित हुआ, प्रो. डेनियल जोन्ज़ का है। इसका शीर्षक है—'भारत के लिए राष्ट्रीय लिपि की समस्या'। इसमें लेखक ने रोमन लिपि को भारत में राष्ट्रीय लिपि के रूप में स्वीकार करने की संस्तुति की है। भारतीय संविधान में, जो २६ जनवरी १९५० को लागू हुआ, देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को भारत की राजभाषा स्वीकार किया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि देश में रोमन लिपि की चर्चा बंद हो गई तथा संपूर्ण देश के लिए सामान्य लिपि के रूप में देवनागरी की स्वीकृति की आवश्यकता प्रतीत होने लगी। अगस्त १९६१ में विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्रियों तथा केंद्रीय मंत्रियों का एक सम्मेलन दिल्ली में हुआ, जिसमें समस्त भारतीय भाषाओं के लिए एक सामान्य लिपि का होना वांछनीय ही नहीं आवश्यक माना गया। देवनागरी लिपि को अखिल भारतीय लिपि का स्वरूप और क्षमता देने के उद्देश्य से इस में हिंदीतर भाषाओं के विशिष्ट स्वनों के लिए नवीन प्रतीकों का समावेश किया गया। इसके लिए भारत सरकार ने १९६६ में 'मानक देवनागरी' तथा 'परिवर्धित देवनागरी' नाम की दो पुस्तिकाएँ प्रकाशित कीं। दूसरी पुस्तिका में संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित चौदह भाषाओं में लिखित अनुच्छेद ३५१ का देवनागरी लिप्यंतरण भी दिया गया। केंद्रीय हिंदी निदेशालय से प्रकाशित त्रैमासिक 'भाषा' तथा नागरी लिपि परिषद, दिल्ली से प्रकाशित त्रैमासिक 'नागरी संगम' में अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्यिक अंशों का देवनागरी लिप्यंतरण दिया जाता है। देवनागरी में (मराठी के संदर्भ में) स्वनिक लिप्यंकन के लिए १९७८ में डॉ. अशोक रा. केळकर का लेख 'मराठीचें श्रवणप्रत्ययी लेखन' ('मराठी संशोधन पत्रिका', वर्ष–२५, अंक–२, मुंबई) प्रकाशित हुआ है। कुछ अन्य व्यक्तियों ने भी कुछ पुस्तकों का देवनागरी लिप्यंतरण किया है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

इसी श्रृंखला में यह मेरा लघु प्रयास है। विद्वान पाठकों से निवेदन है कि वे इस पुस्तक के संबंध में अपने सुझाव भेजने का कष्ट करें। मैं सभी के प्रति अग्रिम कृतज्ञता प्रकट करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

राम प्रकाश सक्सेना

१०, यूनिवर्सिटी क्वार्टर्ज
अमरावती रोड
नागपुर–४४००१०
दिनांक : २८–३–१९७९

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

विषय सूची

सुवाक — पृष्ठ पाँच

पुरोवाक — पृष्ठ सात से दस

वर्तनी व मुद्रण संबंधी कुछ तथ्य तथा भूल-सुधार — पृष्ठ पंदरह से इक्कीस

कुछ वर्ण तथा उनके स्वनात्मक मूल्य — पृष्ठ १ से २

कुछ हिंदी शब्द व उनके हिंदी और अंग्रेज़ी पर्याय — पृष्ठ ३

प्रथम अध्याय

१. प्रस्तावना

पृष्ठ ५ से ३२

१.१ लिप्यंतरण

१.२ अनुवाद और लिप्यंतरण

१.३ लिप्यंतरण और प्रतिलेखन

१.४ लिप्यंतरण की आवश्यकता

१.५ लिप्यंतरण के प्रकार

१.६ लिप्यंतरण से संबंधित तथ्य तथा समस्याएँ :

१.६.१ संपूर्ण लिप्यंतरण के अंतर्गत, १.६.२ प्रासंगिक लिप्यंतरण के अंतर्गत : १.६.२.१ पुस्तकों के नाम तथा उद्धरण, १.६.२.२ व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ : १.६.२.२.१ भिन्न भाषाओं में रूप-भिन्नता के कारण, १.६.२.२.२ अन्य कारण; १.६.२.२.३.१ जब दो भाषाओं की लिपि एक हो, १.६.२.२.३.२. जब दोनों भाषाओं की लिपियाँ भिन्न हो, किंतु उन लिपियों का स्रोत एक हो, १.६.२.२.३.३ जब दोनों भाषाओं की लिपियाँ भिन्न हों; १.६.२.३ लिप्यंतरण की सीमाएँ और समाधान में विकल्प; १.६.३ समीकृत लिप्यंतरण।

१.७ प्रस्तुत कार्य की आवश्यकता तथा उपयोगिता

१.८ प्रस्तुत पुस्तक में लिपियों का चयन

१.९ भिन्न लिपियों में लिप्यंतरण : चीनी, तिब्बती व जापानी के संदर्भ में

१.१० देवनागरी लिपि, हिंदी वर्तनी तथा कुछ वर्णों के स्वनात्मक मूल्य :

१.१०.१ देवनागरी लिपि, १.१०.२ हिंदी वर्तनी, १.१०.३ कुछ वर्णों के स्वनात्मक मूल्य

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

द्वितीय अध्याय

२. हिंदी तथा मराठी

पृष्ठ ३३ से ४४

२.१ दोनों भाषाओं के कुछ वर्णों के स्वनात्मक मूल्यों में अंतर
२.२ व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का लिप्यंतरण
२.३ आगत शब्दों का लिप्यंतरण

तृतीय अध्याय

३. हिंदी तथा गुजराती

पृष्ठ ४५ से ५५

२.१ गुजराती की वर्णमाला
३.२ हिंदी व गुजराती वर्णों के क्रम, संख्या, आदि में व्यतिरेक
३.३ गुजराती के स्वनिम
३.४ गुजराती के कुछ वर्णों के स्वनात्मक मूल्य तथा उच्चारण संबंधी विशिष्टताएँ
३.५ व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का लिप्यंतरण
३.६ आगत शब्दों का लिप्यंतरण

चतुर्थ अध्याय

४. हिंदी तथा बंगला

पृष्ठ ५७ से ७४

४.१ बंगला की वर्णमाला
४.२ हिंदी तथा बंगला वर्णों के क्रम व संख्या में व्यतिरेक
४.३ बंगला के स्वनिम
४.४ बंगला के कुछ वर्णों व वर्ण समूहों के स्वनात्मक मूल्य
४.५ व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का लिप्यंतरण
४.६ आगत शब्दों का लिप्यंतरण

पंचम अध्याय

हिंदी तथा उर्दू

पृष्ठ ७५ से ८६

५.१ उर्दू भाषा
५.२ उर्दू लिपि
५.३ उर्दू के वर्ण तथा उन के स्वनात्मक मूल्य
५.४ उर्दू वर्ण संबंधी कुछ अन्य विशेषताएं
५.५ हिंदी वर्ण तथा उर्दू में उनके संवादी वर्ण
५.६ व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का लिप्यंतरण
५.७ आगत शब्दों का लिप्यंतरण

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

षष्ठ अध्याय

६. हिंदी तथा अंग्रेज़ी

पृष्ठ ८७ से १००

६.१ अंग्रेज़ी भाषा, लिपि तथा साहित्य

६.२ संपूर्ण लिप्यंतरण

६.३ प्रासंगिक लिप्यंतरण :

६.३.१ हिंदी से अंग्रेज़ी : ६.३.१.१ व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ, ६.३.१.२ आगत शब्द; ६.३.२ अंग्रेज़ी से हिंदी : ६.३.२.१ अंग्रेज़ी स्वन तथा उनके लिए प्रयुक्त हिंदी वर्ण, ६.३.२.२ वर्तनी से प्रभावित लिप्यंतरण, ६.३.२.३ अंग्रेज़ी संयुक्त शब्दों के आदय वर्णों से निर्मित नाम

सप्तम अध्याय

उपसंहार

पृष्ठ १०१ से १०४

७.१ संपूर्ण लिप्यंतरण

७.२ व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का लिप्यंतरण

७.३ आगत शब्दों का लिप्यंतरण

७.४ नए शब्दों की आदात्री भाषा की वर्तनी व्यवस्था से अनुरूपता तथा दात्री भाषा-भाषी की ग्राह्यता के सिद्धांत

परिशिष्ट

पृष्ठ १०५ से १०६

(अ) सहायक ग्रंथ सूची

(क) हिंदी

(ख) अंग्रेज़ी

(आ) सामग्री प्राप्ति के अन्य स्रोत

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

वर्तनी व मुद्रण संबंधी कुछ तथ्य तथा भूल-सुधार

संप्रति हिंदी में कई वर्तनी–व्यवस्थाएँ प्रचलित हैं। प्रस्तुत पुस्तक में जिस वर्तनी–व्यवस्था का पालन किया गया है, उस से संबंधित संकेत १.१०.२ में दिए गए हैं। उदाहरणार्थ, तत्सम शब्दों के अंत में, जहाँ कुछ लोग संस्कृत के अनुकरण पर हलंत–चिह्न का प्रयोग करते हैं, हलंत–चिह्न का प्रयोग नहीं किया गया है। दूसरे, वर्गीय नासिक्य व्यंजन के लिए 'अनुस्वार' का प्रयोग किया गया है।

कुछ स्वनों के लिए विशिष्ट वर्ण तथा विशेपक चिह्न मुद्रणालय में नहीं थे। अतः कंपोज़ीटरों ने उपलब्ध वर्णों तथा विशेपक चिह्नों में काट-छाँट कर इन को बनाने का प्रयत्न किया है। इस कारण यथार्थता का थोड़ा अभाव रह गया है। उदाहरणार्थ, फ़्रेंच तथा पुर्तगाली के संदर्भ में पृष्ठ ६ पर पंक्ति २७ में, पृष्ठ १९ पर १७ वीं पंक्ति में तथा पृष्ठ २० पर १, २ व ३ पंक्तियों में एक विशेपक चिह्न का प्रयोग हुआ है, जिसे फ़्रेंच में 'सेदी' (cédille) कहते हैं। यह चिह्न 'c' वर्ण के नीचे तब प्रयुक्त होता है जब 'c' के बाद 'a,o' या 'u' हो। यह इस बात का दयोतक है कि 'c' का उच्चारण [स्] होगा। मुद्रण में यह चिह्न 'c' के नीचे सटकर नहीं लग पाया है और 'c' के नीचे 's' जैसा छपा है। दूसरे, इस पुस्तक में कुछ वर्णों को रेखांकित किया गया है। मुद्रण की कठिनाई के कारण कुछ स्थानों पर जिस वर्ण के नीचे रेखा होनी चाहिए, उस के नीचे न आकर दूसरे वर्ण के नीचे लग गई है।

रूसी में कुछ व्यंजनों के तालव्यरंजित (palatalized) रूप, जिन्हें रूसी में 'कोमल व्यंजन' कहा जाता है, भी प्रयुक्त होते हैं। ये अपने संवादी तालव्यरंजित-रहित व्यंजनों, जिन्हें रूसी में 'कठोर व्यंजन' कहा जाता है, से व्यतिरेकी स्थिति में हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्वन लिपि में किसी व्यंजन के तालव्यरंजित रूप के लेखन में उस व्यंजन वर्ण के ऊपर दाहिनी ओर 'j' [य्] लिखा जाता है। अंग्रेज़ी (रोमन लिपि) में लिप्यंतरण करते समय इस के लिए वर्ण के बाद 'y' लिख दिया जाता है। पृष्ठ १४ पर पंक्ति २९ व ३१ में जो रूसी नाम देवनागरी में लिखे हैं, उन में यह अंतर नहीं दर्शाया गया है। उदाहरणार्थ, 'रेस्पूब्लिक' में 'र्' तथा 'ल्' तालव्यरंजित हैं। अंग्रेज़ी की तर्ज़ पर इन को 'र्य्' व 'ल्य्' लिखा जा सकता है। दूसरे, फ़्रेंच का लुंठित अलिजिह्वीय है हिंदी की भाँति वर्त्स्य नहीं। अंतर्राष्ट्रीय स्वन लिपि में इसे [R] द्वारा लिखा जाता है। इस पुस्तक में इस को 'र्' वर्ण द्वारा ही दर्शाया गया है। तीसरे, बंगला के संदर्भ में वर्ण 'ऑ' ह्रस्व व दीर्घ दोनों स्वरों के लिए प्रयुक्त हुआ।

प्रूफ़ रीडरों की सावधानी के बावजूद इस पुस्तक में कुछ ग़लतियाँ हो गई हैं। कुछ को 'ग़लतियाँ' न कहकर 'कमियाँ' कहा जा सकता है। कुछ ग़लतियाँ ऐसी हैं, जिन से अर्थ के अनर्थ होने की संभावना नहीं है तथा पाठक स्वयं समझ सकता है। कुछ सामान्य ग़लतियों का विवरण इस प्रकार है :—

(१) कई स्थानों पर मात्राओं की ग़लतियाँ हो गई हैं। उदाहरणार्थ, 'रूप, अनुरूप स्वरूप, पुनरुत्थान, लिपि, अनभिज्ञ' के स्थान पर 'रुप, अनुरुप, स्वरुप, पुनरूत्थान, लिपी, अनिभिज्ञ' छप गए हैं।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

(२) कहीं 'अनुस्वार' नहीं लग पाया है और कहीं अतिरिक्त लग गया है।

(३) कई स्थानों पर 'चंद्रबिंदु' के स्थान पर 'अनुस्वार' छपा है।

(४) कई शब्दों, यथा – काफ़ी, फ़ारसी, फ़्रेंच, आदि, में नीचे का नुक़्ता छूट गया है।

(५) कई स्थानों पर 'कॉमा' व 'हाइफ़न' छूट गए हैं या अतिरिक्त लग गए हैं। कई स्थानों पर 'हाइफ़न' के स्थान पर 'डैश' तथा 'डैश' के स्थान पर 'हाइफ़न' छप गए हैं।

(६) कई स्थानों पर 'ठ्य' व 'द्य' के स्थान पर 'ठ्‌य' व 'द्‌य' मुद्रित हो गए हैं।

(७) कई स्थानों पर 'ड.' के स्थान पर 'ङ' छप गया है।

(८) 'श्री' के स्थान पर 'श्री.' छपा है।

(९) प्रथम दो अध्यायों में 'ह्रस्व' के स्थान पर 'ह्स्व' छपा है। मराठी में दूसरा रूप शुद्ध है।

(१०) कई स्थानों पर ' ' के स्थान पर " " मुद्रित हुआ है। इस भूल का कारण यह है कि पोर्टेबुल टाइपराइटर में प्रथम चिह्न नहीं है। अतः इस के स्थान पर दूसरे का ही प्रयोग होता है। पुस्तक की टंकित प्रति से यह भूल मुद्रण में स्थानांतरित हो गई है।

(११) आजकल हिंदी में 'ज्ञान प्रकाश' आदि नामों को दो प्रकार से लिखा जाता है—(१) 'ज्ञान' व 'प्रकाश' को मिलाकर—'ज्ञानप्रकाश', (२) 'ज्ञान' व 'प्रकाश' को अलग-अलग—'ज्ञान प्रकाश'। किंतु मराठी में अनिवार्यतः प्रथम प्रकार की परंपरा का पालन किया जाता है। ग़लती से मराठी के संदर्भ में कुछ स्थानों पर दूसरे प्रकार से छप गया है।

पृष्ठ १६ पर टिप्पणी (१) के संदर्भ में यह तथ्य यहाँ बताना आवश्यक प्रतीत होता है कि इस पुस्तक में वर्ण के बाद '०' के स्थान पर '.' का प्रयोग हुआ है, यथा—'यू० पी०' के लिए 'यू. पी.'।

पृष्ठ ३८ पर १४. के अंतर्गत जो संस्कृत नाम दिए हैं, उस संदर्भ में यह कहना यहाँ समीचीन होगा कि संस्कृत में कुछ नामों की दो–दो वर्तनियाँ प्रचलित हैं, यथा— वसिष्ठ – वशिष्ठ, ऊर्मिला – उर्मिला, उर्वशी – ऊर्वशी।

पृष्ठ ५ पर पंक्ति ८ में 'पेइ तथा गेनोर' के स्थान पर 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' होना चाहिए। पेइ तथा गेनोर ने 'A Dictionary of Linguistics' में लिप्यंतरण (transliteration) की जो परिभाषा दी है, वह इस प्रकार है—"The representation of a sound, phoneme or word or utterance in the conventional symbols of another language or system of writing." (p. 219)

अन्य प्रमुख भूलों का विवरण यहाँ प्रस्तुत है। 'सुधार' के अंतर्गत 'अनावश्यक' का अर्थ है कि 'भूल' में दिए गए शब्दों की उस स्थान पर आवश्यकता नहीं है, ग़लती से मुद्रित हो गए हैं।

पृष्ठ	पंक्ति	भूल	सुधार
५	११	वद	वद्
	१२	धञ्	घञ्
	२२	कोप	कोश, पृष्ठ ५७६

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

पृष्ठ	पंक्ति	भूल	सुधार
५	२३	"Transliteration is the representation of sounds words or	Transliteration is the "representation of the sounds, words, or
	२५	A Dictionary of Linguistics	The New Encyclopaedia Britannica, पृ. ९३.
८	३७	'ग'	(ग)
९	१	किसी	किन्हीं
	११	पहूंची	पहुँची
११	२९	रखना चाहिए	रखा जाए
	३६	"chhetre"	"chhetra"
१३	३	"अव"	[अव्]
	२९	अलिकसुंदर	अलिकसुन्दर
१४	२९	—किख्	—किख़्
१८	२८	दोनों...गुच्छे	दो...गुच्छ
१९	९	ferbıero	febrero
२०	४	—óś—	—ös—
	१०	Jàwahàrlal	Jawaharlal
२१	१२	[फ़]	[फ़्]
	२३	को	के
२३	६	"क"..."क्स"	'क्'...'क्स्'
	१५	( )	'अनावश्यक'
	३०	प्रभूत	प्रसूत
२४	१, ५	[फ़]	[फ़्]
२५	१४	[चन्दर]	[चन्दर्]
	२३	(श)	/श्/
	२४	[श] व [स]	[श्] व [स्]
	३५	फीवर	फ़ीवर
२६	७	परिवर्तन	परिवर्त
	३४	उच्चारण	"उच्चारण" और
	३५	अशुद्ध	शुद्ध

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

पृष्ठ	पंक्ति	भूल	सुधार
२८	३	रूपिम	रूपिम के
	८	ईसा	"ईसा
	९	फालान	फ़ा–लान्
	२२	ज्यप्	ज्यप्
	२२, २३	–येह	–येह्
	३०	फा–	फ़ा–
२९	३	चैन्...ओर सर्योदय	चेन्.....और सूर्योदय
	४	शान्ताओ	शान्–ताओ
	५	–यी	–यी
	१०	——स-	——स्-
	११	——ग–भेद्	——ग्–मेद्
	१३	–रस्	–रस्-
३०	२	भाषाओं– ...नेपाली–	'हाइफ़न' के स्थान पर 'डैश'
	४	शताव्दी "में	शताव्दी में
	५	स्पष्ट	स्पष्टत:
	१३	कहते हैं।	कहते हैं।" (देवनागरी — विकास परिवर्धन और मानकीकरण, पृ. ९)
३१	१, ६, ८ (दो बार)	हलंत	हलंत–चिह्न
	११	हलंत	हलंत–चिह्न
३२	२५	"स्टेन्डर्ड" "नेशनल"	'अनावश्यक'
	२५-२६	"स्टेन्डर्ड" "नेशनल" (देहली से प्रकाशित दैनिक "हिंदुस्तान")	'अनावश्यक'
	२६	इंदोर	इंदौर
	३२	पेन्ट, स्टेन्ड	पैन्ट, स्टैन्ड
	३३	पेण्ट, स्टेण्ड	पैण्ट, स्टैण्ड
३४	९	लिए होता	लिए भी होता
	१८	पार्शिक	पार्श्विक
	३०	[अऑ]	[अओ]

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

पृष्ठ	पंक्ति	भूल	सुधार
३५	१२	( )	[ ]
	१४	[अइँ] तथा	[अउँ] तथा
		इँ=[इउँ]	इं=[इउँ]
	३६	ओरंगावाद	औरंगावाद
३७	३	मख्खन लाल	मख्खनलाल,
		विठ्ठल भाई	विठ्ठलभाई
	४	अकारांत	आकारांत
	९	पंचमढी	पचमढी
४०	९	रिव्रसमस	ख्रिसमस
	१३	चेत	चैत
४३	३,४,६,	—न्ट	—न्ट्
	९	"ज" और "न"	"ज्" और "न्"
	११	"ट", "ड"	"ट्", "ड्"
	१६	हिंदी उच्चारण...	हिंदी
		मराठी उच्चारण	मराठी
	१८	एड्यकेइशन्~जू	एडचूकेंइशन् ~ – जू –
	२२	ज्यूनियर	ज्युनियर ~ ज्युनिअर
४४	२३	फ्लोर	फ़्लोर
	३५	–जिट	—जिट्
४८	४	३.४	३.५
४९	२६	स्नाम	नाम
५०	१४	[ज]	[ज़]
५२	८	पोप	पौंप
५३	१	३.५	३.६
	१०	कप्टन	कैप्टन/कप्तान
	१७	फँसी	फ़ैंसी
	१८	फैशन	फ़ैशन
	१९	फैक्ट्री	फ़ैक्टरी/फ़ैक्ट्री

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

पृष्ठ	पंक्ति	भूल	सुधार
५४	२	फ्राक	फ़्राक
	१६	गजेटेड	गज़ेटेड
५५	५	फार्मेसी	फ़ार्मेसी
५७	४	आसाम	असम
५८	१७	̶	̶
	२१	[य़]	[य]
५९	२९	र	र्
६०	८	गोविंद	गोविन्द
	३३	/श/ . . (श, स, ष)	/श्/ . . . [श्, स्, ष्]
६१	४	—शॉररा—	—शॉरॉ—
	२४	—ल्याण्ड	—ल्य़ाण्ड
	३०	वलिभिया	वलिभिय़ा
६२	८ (चौथा शब्द)	आसनसोल	आसानसोल
	२० (दूसरा शब्द)	पुना	पूना
	२९	प्यारिस	प्य़ारिस
६३	४	—ल्याण्ड	—ल्य़ाण्ड
	२२	विलेत	बिलेत
६४	१७	भियेना	भिय़ेना
	२०	"व"	"ब"
	२१	वि—, व—, व—, —वि—	वि—, ब—, ब—, —वि—
६७	२६	केनिया	केनिय़ा
६८	१०	त्रिवान्द्रम	त्रिबान्द्रम
	१३	भूवनेश्वर	भूबनेश्वर
६९	२४	ओउँ	ओँउ
७३	५	बिल्डि̶	बिल्डि̶
	१७	उट, पेन्सिल	उट पेन्सिल
७४	१८	होमियोपाथी	होमिय़ोपाथी

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

पृष्ठ	पंक्ति	भूल	सुधार
७६	१९	उनका	उन के
७७	७	ज्	ज़्
७९	६,७	ये दो पंक्तियाँ	'मद्द' के नीचे आनी चाहिए
८३	१३	करर् सिंग~सिंघ	करन् / सिङ्.~सिंग~सिंघ
८५	१५	ब्रेजनेफ़	ब्रेज़्नेफ़
८६	७	तथा फारसी	'अनावश्यक'
८६–८७ के बीच में	शीर्षक पृष्ठ	षष्ठम	षष्ठ
९७	२६	स्वन	उपस्वन
९८	१६	स्थान	स्थान पर
१०२	५	स्टेश्नों	स्टेशनों

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

कुछ वर्ण तथा उनके स्वनात्मक मूल्य

पुस्तक में प्रयुक्त वर्ण	अंतर्राष्ट्रीय स्वन लिपि में प्रयुक्त चिह्न	स्वनात्मक मूल्य
दीर्घ अ	[ə:]	यह 'अ' का दीर्घ रूप है, 'आ' नहीं।
अ̠	[ʌ]	अर्धविवृत, पश्च, अगोलित स्वर। अंग्रेजी के 'but' 'cup' आदि शब्दों में प्रयुक्त।
अॅ	[æ/ɜ]	दीर्घ, अर्धविवृत, अग्र, अगोलित स्वर। यह वर्ण मराठी में प्रयुक्त होता है।
ह्रस्व ऑ	[ɔ]	ह्रस्व, अर्धसंवृत, पश्च, गोलित स्वर।
ऑ	[ɔ:]	दीर्घ, अर्धसंवृत, पश्च, गोलित स्वर।
ऍ	[ĕ]	ह्रस्व, अर्धसंवृत, अग्र, गोलित स्वर=ह्रस्व 'ए'।
ऐ	[æ/ɜ]	दीर्घ, अर्धविवृत, अग्र, अगोलित, मूल स्वर।
ऐ̆	[ɜ̆]	ह्रस्व, अर्धविवृत, अग्र, अगोलित, मूल स्वर = ह्रस्व 'ऐ'।
ओ̆	[ŏ]	ह्रस्व, अर्धसंवृत, पश्च, गोलित स्वर।
औ		दीर्घ, अर्धविवृत, पश्च, गोलित, मूल स्वर। 'ऑ' से अधिक संवृत।
ॱ		बंगला के संदर्भ में 'अनुस्वार' के लिए प्रयुक्त।

टिप्पणी :

१. [æ]: अंतर्राष्ट्रीय स्वन लिपि में यह दीर्घ, अर्धविवृत, अग्र, अगोलित स्वर है और यह [ɜ] से अधिक विवृत है। व्यावहारिक दृष्टि से [æ] और [ɜ] दोनों के लिए हिंदी में 'ऐ' और मराठी में 'अॅ' वर्ण का प्रयोग किया गया है।

२. अंतर्राष्ट्रीय स्वन लिपि में [a] और [ɑ] अलग-अलग स्वन हैं। द्वितीय प्रथम से अधिक पश्च है। व्यावहारिक दृष्टि से दोनों के लिए हिंदी में 'आ' का प्रयोग किया गया है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

पुस्तक में प्रयुक्त वर्ण	अंतर्राष्ट्रीय स्वन लिपि में प्रयुक्त चिह्न	स्वनात्मक मूल्य
क़्	[q]	अघोष, अलिजिह्वीय स्पर्श ।
ख़्	[X]	अघोष, मृदु तालव्य संघर्षी ।
ग़्	[ɣ]	घोष, मृदु तालव्य संघर्षी ।
ज़्	[z]	घोष, वर्त्स्य संघर्षी ।
झ़्	[ʒ]	घोष, तालव्य संघर्षी ।
ट्‌	[t]	अघोष, वर्त्स्य स्पर्श; अंग्रेज़ी में प्रयुक्त 't' ।
ड्‌	[d]	घोष, वर्त्स्य स्पर्श; अंग्रेज़ी में प्रयुक्त 'd' ।
थ़्	[θ]	अघोष, दंत्य संघर्षी ।
द़्	[ð]	घोष, दंत्य संघर्षी ।
य़		वंगला के संदर्भ में 'य़' के लिए; इसका उच्चारण [य] होता है। वंगला में 'य' का उच्चारण [ज] होता है। इस अंतर को वनाए रखने के लिए देवनागरी में भी 'य़' वर्ण का प्रयोग अनिवार्य समझा गया ।
व़्	[V]	घोष, दंत्योष्ठच संघर्षी; अंग्रेज़ी में प्रयुक्त ।

टिप्पणी :

देवनागरी के शेष वर्णों के स्वनात्मक मूल्य हिंदी की भाँति प्रयुक्त हुए हैं ।

<u>कुछ अन्य चिह्न</u>

[ ]	स्वनिक प्रतिलेखन ।
/ /	स्वनिमिक प्रतिलेखन ।
~	जिन दो इकाइयों के बीच यह चिह्न, वे परस्पर मुक्त – परिवर्तन में ।
?	शब्द के पूर्व प्रयुक्त, पुनर्निर्मित (Reconstructed form) शब्द के लिए ।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

कुछ हिंदी शब्द व उनके हिंदी और अंग्रेज़ी पर्याय

पुस्तक में प्रयुक्त शब्द	हिंदी में अन्य प्रचलित शब्द	अंग्रेज़ी पर्याय
अक्षर	वर्ण	syllable
अनुकूलन		adaptation
अनुच्चरित वर्ण		silent letter
आगत शब्द		loan word
आगत मिश्र		loan blend
उद्धरण		quotation
उपस्वन	संस्वन, संध्वनि	allophone
ग्रसन्य		pharyngeal
चित्रलिपि		hieroglyphic script
प्रतिलेखन		transcription
प्रभावी भाषा		dominant (upper) language
भावव्यंजक लिपि		ideogrammatic script
भावार्थक संज्ञा		infinitive
मर्मर स्वर		murmured vowel
मूल भाषा / दात्री भाषा		original/donor language
मूल रूप		original form
मृदुतालव्य रंजित		velarized
रूपिम	मर्पिम, रूपग्राम	morpheme
लिप्यंतरण		transliteration
वर्ण	अक्षर	letter
वर्णमाला		alphabet
विशेषक चिह्न		diacritic mark
व्यतिरेक		contrast
वर्तनी		spelling
श्वासद्वारीय		glottal
संघर्षहीन प्रवाही		frictionless continuant
संध्यक्षर		diphthong
स्वन	ध्वनि	phone
स्वरभक्ति		anaptyxis
स्वनिम	ध्वनिग्राम, ध्वनिम	phoneme

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

प्रथम अध्याय

प्रस्तावना

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

१. प्रस्तावना

१.१ लिप्यंतरण :

इसके लिए संस्कृत में "लिप्यंतर" व अंग्रेजी में Transliteration शब्द प्रयुक्त होते हैं। लिपि + अंतर = लिप्यंतर। संक्षेप में लिपि का अंतर ही लिप्यंतर है। इसी अर्थ में हिंदी में "लिप्यंतरण" शब्द प्रचलित है। डॉ. भोलानाथ तिवारी ने इसको इस प्रकार परिभाषित किया है :— "किसी रचना या सामग्री को एक लिपि से दूसरी लिपि में करना"[१] लिप्यंतरण है।"

पेइ तथा गेनोर के अनुसार "किसी भाषा के स्वनों, शब्दों या उच्चारों की दूसरी भाषा की लेखन व्यवस्था में प्रयुक्त प्रतीकोंद्वारा अभिव्यक्ति लिप्यंतरण है।"[२]

१.२ अनुवाद और लिप्यंतरण :

"अनुवाद" शब्द का संबंध "वद" धातु से है, जिसका अर्थ होता है "बोलना" या "कहना"। "वद" धातु में "घञ्" प्रत्यय लगाने से "वाद" शब्द बनता है। और फिर उस में "पीछे", "वाद में", "अनुवर्तिता" आदि अर्थों में प्रयुक्त "अनु" उपसर्ग जुड़ने से "अनुवाद" शब्द निष्पन्न होता है। अनुवाद का मूल अर्थ है "पुनःकथन" या "किसी के कहने के वाद कहना"[३]। किंतु आधुनिक काल में इसका अर्थ भिन्न है, जिसे डॉ. तिवारी ने निम्न शब्दों में व्यक्त किया है :—

"एक भाषा में व्यक्त विचारों को, यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद हैं।"[४]

"भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद है इन्हीं प्रतीकों का प्रति-स्थापन, अर्थात एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम (कथनतः और कथ्यतः) समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग।"[५]

---

१. भाषाविज्ञान कोष.

२. "Transliteration is the representation of sounds words or utterances of one language by means of the symbols used in the writing system of another language" — A Dictionary of Linguistics.

३. अनुवाद विज्ञान, पृ. ९.

४. वही, पृ. १७.

५. वही, पृ. १८.

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

स्थूल रूप से अनुवाद और लिप्यंतरण में तीन अंतर हैं :—

(१) अनुवाद मौखिक भी हो सकता है और लिखित भी। किंतु लिप्यंतरण का संवध केवल "लिखित" से होता है।

(२) प्रथम में भाषा वदल जाती है, द्वितीय में यह अनिवार्य नहीं है। उदाहरण से यह कथन अधिक स्पष्ट हो जाएगा। "राम बाज़ार जा रहा है" का अंग्रेजी अनुवाद होगा : 'Ram is going to the market'। किंतु हम प्रथम वाक्य को रोमन लिपि (Ram bazar ja raha hai) में भी लिख सकते हैं। इसी प्रकार इस अंग्रेजी अनुवाद को देवनागरी लिपि में भी लिख सकते है— "राम इज़ गोइंग टु द माकेट"[1]। इस से यह स्पष्ट होता है कि अनुवाद में यह आवश्यक नहीं है कि लिपि वदले और लिप्यंतरण में यह आवश्यक नहीं है कि भाषा वदले। इसका कारण यह है कि अनुवाद में दो भाषाएं या वोलियां होती है, जिससे भाषाओं का परिवर्तन अनिवार्य है। लिप्यंतरण का संवंध चूंकि लिपि से है, अतः भाषाओं का परिवर्तन अनिवार्य नहीं हैं। यहां एक वात स्पष्ट करना जरुरी है। कभी कभी एक से अधिक भाषाएं एक ही लिपि में लिखी जाती हैं, यथा—हिंदी, मराठी, संस्कृत व नेपाली देवनागरी में लिखी जाती हैं। इसी प्रकार अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, इटालियन आदि भाषाएं रोमन लिपि में लिखी जाती हैं। सामान्यरूप से यह कहा जाता है कि यदि हम हिंदी का अनुवाद मराठी में करें, तो भाषा वदलेगी, लिपि नहीं। इसी प्रकार यदि हम अंग्रेजी का अनुवाद फ्रेंच में करें, तो भी भाषा वदलेगी, लिपि नहीं। पर सूक्ष्मरूप से विचार करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यदि एक लिपिका प्रयोग एक से अधिक भाषाओं द्वारा किया भी जाता है, तो भी प्रत्येक भाषा की लिपि एक स्वतंत्र व्यवस्था होती है। इस प्रकार वैज्ञानिक दृष्टि से यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि इसको भिन्न लिपि ही माना जाए, यथा — हिंदी देवनागरी व मराठी देवनागरी, अंग्रेजी रोमन व फ्रेंच रोमन।

यदि दो भाषाएं एक ही लिपि में लिखी जाती हों, तो भी निम्न प्रकार के अंतर द्रष्टव्य हैं :—

क—दोनों में वर्णों की संख्या या तो वरावर नहीं होतीं (जैसे मराठी में "ळ" है, हिंदी में नहीं) या यदि वरावर हो भी, तो उन में विशेषक–चिह्न द्वारा कुछ न कुछ अंतर अवश्य होता है (जैसे फ्रेंच का "ç" अंग्रेजी में नहीं होता)।

ख—दोनों में वर्णो का संयोग भिन्न हो सकता है, जैसे "न्य" हिंदी में नहीं होता, जवकि मराठी में है।

कुछ वर्णो का स्वनात्मक मूल्य दोनों भाषाओं में भिन्न-भिन्न होता है, यथा—

---

१. मानक अंग्रेजी (आर. पी.) में व्यंजन के पूर्व "र" का उच्चारण नहीं होता, यथा—"माकेट" न कि "मार्केट"।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

वर्ण	स्वनात्मक मूल्य	
	हिंदी	मराठी
च	अघोष, तालव्य स्पर्श संघर्षी	१. अघोष, तालव्य स्पर्श-संघर्षी २. अघोष, दंत्य स्पर्श-संघर्षी
	अंग्रेजी	फ्रेंच
t	१. अघोष, वर्त्स्य स्पर्श २. अघोष, महाप्राण, वर्त्स्य स्पर्श	अघोष, दंत्य स्पर्श

३. अनुवाद में यह आवश्यक नहीं है कि लिप्यंतरण की आवश्यकता पड़े। जैसे "मैं जा रहा हूँ" का अंग्रेज़ी अनुवाद यदि किया जाय, तो लिप्यंतरण की आवश्यकता न होगी। किंतु यदि "श्याम योगासन का अभ्यास करता है" जैसे वाक्यों का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया जाए, तो "श्याम" ओर "योगासन" का अनुवाद न होकर उन का केवल लिप्यंतरण होगा, चाहे यह कितना ही अपूर्ण क्यों न हो।

१.३ लिप्यंतरण और प्रतिलेखन :

व्यक्तिवाचक संज्ञा आदि, जिनका अनुवाद नहीं किया जाता और जिन्हें थोड़े-बहुत रूपांतर के साथ प्राय: मूल रुप में ही लक्ष्य भाषा में लिख दिया जाता है, के लेखन में डॉ. तिवारी ने दो रास्तों का सुझाव दिया है :—

क—लिप्यंतरण—अर्थात स्रोत भाषा की वर्तनी में प्रयुक्त अक्षरों के स्थान पर लक्ष्य भाषा में प्राप्त समध्वनीय अक्षरों के न होने पर लगभग समध्वनीय अक्षरों या उनके भी न होने पर निकट ध्वनीय अक्षरों या उसके भी न होने पर जो भी वर्ण उपयुक्त हो उसका प्रयोग करना। उदाहरणार्थ, अंग्रेजी 'film' के लिए "फिल्म"।

ख—प्रतिलेखन—अर्थात स्रोत भाषा के शब्द की वर्तनी पर ध्यान न देकर उसके उच्चारण को आधार मानकर लक्ष्य भाषा में उस उच्चारण के अनुरुप लिखना। उदाहरणार्थ—'Rousseau' का उच्चारण स्रोत भाषा में "रूसो" जैसा है। अत: हिंदी में उसे "रूसो" लिखना। कोई शब्द लिप्यंतरणीय है या नहीं, इसका एक मात्र उत्तर यह है कि यदि स्रोत भाषा में वर्तनी और उच्चारण में अंतर है, तो लिप्यंतरण नहीं किया जा सकता। ऐसी दशा में उच्चारण को आधार मानकर प्रति-लेखन करना चाहिए।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

उसी पृष्ठ पर डॉ. तिवारी के ही अनुसार "लिप्यंतरण के निर्णय का आधार भी उच्चारण या ध्वनि ही है। इस लिए मेरे विचार में अनुवादक को लिप्यंतरण न करके प्रतिलेखन ही करना चाहिए। यह रास्ता निरापद होता है। ऐसा करने से शब्द यदि लिप्यंतरणीय है तो अपने आप लिप्यंतरण हो जाएगा ओर नहीं है तो प्रतिलेखन होगा।"[१]

इस पुस्तक में प्रतिलेखन को लिप्यंतरण के अंतर्गत माना गया है।

१.४ लिप्यंतरण की आवश्यकता :

लिप्यंतरण की आवश्यकता कई परिस्थितियों में पड़ सकती है। इस को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से तीन वर्गों में रखा जा सकता है :—

(१) जब कोई लिखित भाषा किसी सामाजिक, राजनीतिक तथा भाषिक कारणोंसे दूसरी लिपि को अपनाती है।[२] यह स्थिति भी कई प्रकार की हो सकती है।

---

१. "अनुवाद विज्ञान", पृ. ५५
डॉ. तिवारी ने "अल्फावेट" के लिए "अक्षर" शब्द का प्रयोग किया है, जबकि लेखक ने "वर्ण" का।

२. जब कोई अलिखित भाषा किसी लिपि को अपनाती है, तो ऐसी स्थिति में निम्न बातें संभव हैं :—

(क) अमुक भाषा अपने परिवार की अपने आसपास बोली जाने वाली भाषा, यदि वह लिखित हो, की लिपि अपना सकती है। उदाहरणार्थ "भीली" भाषा "देवनागरी" लिपि को अपनाए, क्योंकि भीली संप्रति आर्यभाषा (कुछ विद्वानों का मत है कि इस की आधार-भाषा कोई आर्येतर भाषा रही होगी) है और मध्यप्रदेश में (जहां उनकी जनसंख्या बहुत अधिक है) उसके आसपास की मानक भाषा हिंदी है, जो देवनागरी में लिखी जाती है।

(ख) ऐसी स्थिति भी हो सकती है कि "गोंडी" द्रविड़ परिवार की भाषा है और यह हिंदी तथा मराठी क्षेत्र में बोली जाती है, जहाँ देवनागरी लिपि प्रयुक्त होती है। ऐसी स्थिति में संभावना यह है कि गोंडी देवनागरी को अपनाए।

(ग) किन्हीं राजनीतिक कारणों से किसी भाषा के लोग विदेशी लिपि अपनाना चाहें। नागादेश के लोग अपनी भाषाओं के लिए रोमन लिपि का प्रयोग करना अधिक पसंद करते हैं।

इन परिस्थितियों में क्रमशः यह होता है कि—

(१) यदि दोनों ही भाषाओं (यथा-हिंदी व भीली) की स्वन प्रणाली में अधिक अंतर न हो, तो अलिखित भाषा लिखित भाषा की सभी अच्छाइयों और बुराइयों को अपना लेती है। उदाहरणार्थ भीली में "बात्" शब्द है। अतः इस शब्द को भीली में भी "बात्" न लिख कर "बात" लिखने की शतप्रतिशत संभावनाएँ हैं।

(२) अन्य परिवार की भाषा लिखने के लिए लिपि में कुछ संशोधन करने अनिवार्य हो जाएंगे, यथा ह्रस्व आ, ए, ओ के लिए नए लिपि चिह्न आदि।

(३) 'ग' की स्थिति में दूसरी की ही भांति व्यवहार होने की संभावनाएँ हैं।

इन सभी स्थितियों में लिप्यंतरण की समस्या नहीं आती। अतः इन को पाद-टिप्पणी में दे दिया गया है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

(अ) किसी सामाजिक व राजनीतिक कारणों से कोई भाषा अपनी प्रचलित लिपि कों छोड़ कर नई लिपि को अपना ले। उदाहरणार्थ "तुर्की" ने अरवी लिपि को छोड़ कर रोमन लिपि को अपना लिया।

(आ) जब कोई भाषा व उसकी लिपि अप्रचलित या लुप्तप्राय हो जाती है, तो पूरी भाषा किसी प्रचलित नई लिपि में लिख ली जाती है। उदाहरणार्थ इजिप्शियन, अक्खादियन व सुमेरियन शिलालेखों को उनकी लिपि का अर्थ समझने (decipher) के वाद रोमन लिपि में लिख लिया गया है।

(इ) द्वितीय भाषा शिक्षण में छात्रों की सुविधा के लिए लक्ष्य भाषा को छात्रों की पूर्व सीखी हुई लिपि में लिप्यंतरित कर लिया जाता है। उदाहरणार्थ अंग्रेजी भाषियों को हिन्दी सिखाने के लिए आरंभ में रोमन लिपि का प्रयोग किया जाता है। जब संस्कृत यूरोप में पहूंची उस समय वहां के लोग देवनागरी, ब्राह्मी आदि लिपियां नहीं जानते थे। अतः उन्होनें संस्कृत का अध्ययन रोमन लिपि में लिप्यंतरित करने के वाद किया।

(ई) तुलनात्मक या व्यतिरेकी अध्ययन के लिए लक्ष्य भाषा को शोधकर्ता अपनी लिपि में लिप्यंतरित कर लेता है।

प्रथम दो (अ व आ) द्वितीय दो (इ व ई) से इस रूप में भिन्न हैं कि प्रथम दो में पुरानी लिपि त्याग दी जाती है अर्थात उस का केवल ऐतिहासिक महत्व रह जाता है। द्वितीय दो में दोनों लिपियों का प्रयोग चलता रहता है। कभी-कभी ऐसा देखा गया है कि एक ही भाषा भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न लिपियों में लिखी जाती है। भारत में पंजावी गुरुमुखी लिपि में तथा पाकिस्तान में अरवी-फारसी लिपि में लिखी जाती है। प्राचीन काल में भारत के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में संस्कृत खरोष्टी लिपि में तथा अन्यत्र ब्राह्मी लिपि में लिखी जाती थी। १६ वीं से १८ वीं शताव्दी के वीच मराठी साहित्य देवनागरी लिपिमें तथा मराठी के दस्तावेज (documents) "मोड़ी" लिपि में उपलब्ध हैं।

(२) जब एक भाषा दूसरी भाषा में प्रयुक्त व्यक्तिवाचक संज्ञाओं व उद्धरणों को अपनी लिपि में लिखती है।

(३) जब कोई भाषा आगत शब्दों (व आगत मिश्र शब्दों) को लिखती है।

इन तीनों वर्गों के लिप्यंतरणों में प्रमुखतः अंतर इस प्रकार हैं—

प्रथम वर्ग के लिप्यंतरण में लिप्यंतरित भाषा के कुछ स्वनों, जो कि नई लिपि में नहीं लिखे जा सकते, के लिए नवीन वर्णों या वर्ण-युग्म या विशेषक चिह्न को नई लिपि में अपना लिया जाता है। उदाहरणार्थ संस्कृत में "आ", "ट" आदि के लिए रोमन लिपि में '*ā*, *ṭ*' आदि वर्णों का समावेश कर लिया गया। देवनागरी में उर्दू के कुछ स्वनों के लिए "क़, ख़, ग़, फ़, ज़" तथा अंग्रेजी के लिए "ऑ" वर्णों को सम्मलित कर लिया गया। कभी कभी कुछ वर्णों को हटा भी दिया जाता है, जैसे संस्कृत लिखने में रोमन के "*f*", "*q*" आदि वर्णों की कोई आवश्यकता नहीं होती। पर ऐसा वहुत कम होता है। उर्दू में अरवी व फारसी (जिसकी लिपि उर्दू ने अपनाई है) के वहुतसे वर्णों (जैसे— ث, ع, ص, ط, ظ, ض, ذ) की कोई आवश्यकता नहीं है, फिर भी उर्दू में इन का

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

प्रयोग होता है। द्वितीय वर्ग के लिप्यंतरण में कभी कभी कुछ शब्दों (व्यक्तिवाचक संज्ञा आदि) के कुछ स्वनों को दूसरी लिपि में अभिव्यक्त करना संभव नहीं हो पाता। ऐसी दशा में प्रथम की भाँति नए वर्णों का सहारा नहीं लिया जाता, किंतु उन वर्णों का चयन किया जाता है जिनसे समीपतम संभव या मिलती-जुलती ध्वनि प्रकट होती है। तीसरे वर्ग में साधारणतया आगत शब्द आगत भाषा की स्वनिमिक व्यवस्था के अनुसार अपना रूप बदल लेता है। किंतु, कभी-कभी, जब आगत शब्दों की संख्या बहुत अधिक होती है, तो आगत भाषा की स्वनिमिक व्यवस्था में भी अंतर आ जाता है और नए स्वनों के लिखने के लिए नए वर्ण भी अपना लिए जाते हैं। उदाहरणार्थ मराठी में "अॅ" और हिंदी तथा मराठी में "ऑ" वर्णों का समावेश कर लिया गया है।

१.५ लिप्यंतरण के प्रकार :

लिप्यंतरण
- संपूर्ण
- आंशिक
  - प्रासंगिक
  - समीकृत

संपूर्ण : १.४.१ की स्थिति इसके अंतर्गत आती है।

प्रासंगिक : १.४.२ की स्थिति इसके अंतर्गत आती है।

समीकृत : १.४.३ की स्थिति इसके अंतर्गत आती है। यह वास्तव में लिप्यंतरण की सीमांत स्थिति (marginal) है।

१.६ लिप्यंतरण से संबंधित तथ्य तथा समस्याएं :

१.६.१ संपूर्ण लिप्यंतरण के अंतर्गत :

ऐसी स्थिति में (जैसा पूर्व में कहा जा चुका है) दूसरी लिपि के प्रत्येक वर्ण या संयुक्त वर्णों को लिप्यंतरित भाषा की स्वनिमिक व्यवस्था के अनुकूल स्वनात्मक मूल्य प्रदान कर दिया जाता है। ऐसी दशा में नए स्वनों को, जो नई लिपि में नहीं लिखे जा सकते, अभिव्यक्त करने के लिये कुछ अतिरिक्त वर्णों की आवश्यकता महसूस होती है। इस समस्या को दो तरह से हल किया जा सकता है :— (१) नए वर्णों का निर्माण करना। इन को पुराने वर्णों में कुछ विशेषक चिह्न लगा कर बनाया जा सकता है (यथा—क़, ज़ आदि) या पुराने वर्णों में ही कुछ हेर-फेर कर काम चलाया जा सकता है। (२) एक से अधिक वर्णों से किसी एक स्वनिम को अभिव्यक्त करना, यथा— रोमन लिपि में दो वर्णों द्वारा महाप्राण स्वरों को अभिव्यक्त करना : ख = kh, घ = gh इत्यादि। कभी कभी ऐसा भी होता है कि लिप्यंतरित भाषा के लिए नई लिपि के कुछ वर्ण अतिरिक्त हो जाते हैं, यथा—रोमन लिपि में संस्कृत लिखने पर " q " वर्ण है। ऐसे वर्णों को निकाल दिया जाता है। पर वास्तव में ऐसा कम ही होता है। उर्दू के लिये अरबी फारसी लिपि के बहुत से वर्ण (यथा— ش, ز, ع, ط, ظ आदि) सारहीन हैं, फिर भी ये प्रयुक्त होते हैं।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

जव एक भाषा को एक लिपि से दूसरी लिपि में लिखा (लिप्यंतरण) जाता है, तो दो में से किसी एक सिद्धांत का पालन किया जाता है।

(१) स्वनिम (या स्वन) को आधार माना जाए और लिप्यंतरित भाषा के स्वनिमिक व्यवस्था के अनुसार नई लिपि के प्रत्येक वर्ण या संयुक्त वर्ण के लिए एक स्वनात्मक मूल्य निश्चित किया जाए। जव रोमन लिपि में संस्कृत लिखी गई, तो इसी सिद्धांत का पालन किया गया। उदाहरणार्थ देवनागरी में "ज्ञ" एक वर्ण है, किंतु इस का स्वनात्मक मूल्य "ज्+ञ्+अ" है अर्थात ३ स्वन। अतः रोमन लिपि में यह तीन वर्णों द्वारा लिखा जाता है—jña।

(२) इसके विपरीत नई लिपि के वर्णों के स्वनात्मक मूल्य का ध्यान न रखते हुए एक वर्ण के स्थान पर दूसरी लिपि के संवादी वर्ण का प्रयोग किया जा सकता है। उदाहरणार्थ यदि बंगला के "क्षुधा" और "शिक्षक" को देवनागरी में लिखा जाए, तो "क्षुधा" और "शिक्षक" ही लिखा जाए, यद्यपि बंगाली में "क्ष" वर्ण का स्वनात्मक मूल्य या तो [ख] (शब्दारंभ में) है या [क्ख]। यदि देवनागरी में इन्हें उच्चारणानुसार लिखना हो, तो "खुदा" और 'शिक्खॉक' लिखा जाएगा।

ऐसा देखा गया है कि साधारणतया प्रथम सिद्धांत का परिपालन तव किया जाता है जब लिप्यंतरित भाषा की लिपि व दूसरी लिपि (जिसमें लिप्यंतरण किया जा रहा है) भिन्न प्रकार की हों (जैसे रोमन लिपि वर्णात्मक है और देवनागरी अक्षरात्मक)। दूसरे सिद्धांत का परिपालन तव होता है जब दोनों लिपियों का स्रोत एक ही हो। उदाहरणार्थ देवनागरी और बंगला लिपियां प्रथम सिद्धांत का परिपालन नहीं कर सकतीं।

कभी-कभी दोनों सिद्धांतों को मिला दिया जाता है। इसको उदाहरण से समझाया जाए तो अधिक स्पष्ट हो जाएगा। रोमन में 'Rabindranath' लिखा जाता है। यहाँ "b" वर्ण का चयन उच्चारण के आधार पर हुआ है पर प्रथम "a" वर्ण का चयन वर्ण का प्रतिस्थापन मात्र है। यदि इसको भी उच्चारणानुसार लिखा जाए, तो "o" लिखना अधिक उचित होगा।

लिप्यंतरण में एक समस्या और है। उदाहरणार्थ "ज्ञ" वर्ण का स्वनात्मक मूल्य संस्कृत में 'ज्+ञ्+अ', हिंदी में 'ग्+य्+अ' तथा मराठी में 'द्+न्+य्+अ' है। कुछ विद्वान हिंदी तथा मराठी के रोमन लिप्यंतरण में 'jna' अर्थात् 'ज्+ञ्+अ' प्रयोग करते हैं। मेरे विचार में यह ठीक नहीं है। होना यह चाहिए कि लिप्यंतरित भाषा के शब्दों में प्रयुक्त वर्णों का पूर्णरूपेण स्वनात्मक मूल्य ध्यान में रखना चाहिए। इस प्रकार रोमन लिपि में हिंदी में प्रयुक्त "ज्ञान" शब्द को "gyan" और मराठी में प्रयुक्त इस शब्द को "dnyan" लिखना उचित होगा।

किंतु इस सिद्धांत में भी कुछ कमियां हैं। प्रथम तो यह कि यह कार्य इतना सरल नहीं है, जितना दीखता है। जब उच्चारणानुसार लिखने का प्रश्न आता है, तो तत्काल यह भी प्रश्न उपस्थित होगा कि किस क्षेत्र या वर्ग विशेष के उच्चारण को आधार माना जाए। उदाहरणार्थ हिंदी क्षेत्र में ही वर्ण "क्ष" का उच्चारण "छ", "क्छ", "क्श" है। अतः रोमन लिपि में "क्षेत्र" को "chhetre" लिखा जाए या "kshetra"। दूसरे,

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

इससे शब्द की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि विस्मृत हो जाती है। उदाहरणार्थ "ज्ञान" को यदि "gyan" लिखा जाए, तो अगली पीढ़ी को यह पता लगाने में कठिनाई हो सकती है कि इसका मूल रूप क्या था।

दूसरा सिद्धांत कुछ अधिक सरल दीखता है। जब कुछ विद्वानों (जैसे डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या) ने भारतीय भाषाओं को रोमन लिपि में लिखने की बात कही थी, तो उनकी राय यही थी कि वर्णानुसार प्रतिस्थापन कर दिया जाए, न कि उच्चारणानुसार।

इसकी सबसे बड़ी कमी यह है कि एक ही लिपि होने से लोग अपनी भाषाओं के वर्णों के स्वनात्मक मूल्यों को दूसरी भाषा के स्वनात्मक मूल्यों पर लाद देते हैं। उदाहरणार्थ "ज्ञान" शब्द संस्कृत, हिंदी व मराठी तीनों भाषाओं में प्रयुक्त होता है। रोमन में इसे संस्कृत के उच्चारणानुसार "jnan" लिखा जाएगा, मराठी और हिंदी में भी इसे इसी प्रकार लिखा जाए, तो गलत है, क्योंकि हिंदी व मराठी में "ज्ञान" कोई शब्द है ही नहीं।

१.६.२ प्रासंगिक लिप्यंतरण के अंतर्गत :

इसके अंतर्गत व्यक्तिवाचक संज्ञाओ और उद्धरणों का लिप्यंतरण आता है। जैसा पूर्व में कहा जा चुका है कि इस वर्ग के लिप्यंतरण की विशेषता यही है कि जब इन के लिप्यंतरण में कुछ स्वनों को दूसरी लिपि में अभिव्यक्त करना संभव नहीं होता, तब नई लिपि के उन वर्णों का चयन किया जाता है, जिनसे समीपतम संभव स्वन या मिलती जुलती ध्वनि प्रकट हो। केवल इनके लेखन के लिए लिपि में किसी नए वर्ण को नहीं जोड़ा जाता। यह दूसरी बात है कि आगत शब्दों की अधिकता के कारण नए वर्णों का प्रयोग होने लगे, तब तो व्यक्तिवाचक संज्ञाओं व उद्धरणों के लेखन में भी नए वर्ण का प्रयोग होगा ही।

एक भाषा की व्यक्तिवाचक संज्ञाओं को दूसरी भाषा में प्रयुक्त होने पर लिप्यंतरण की समस्या आती है, जो अन्य वर्गों की समस्याओं तथा उद्धरणों के लिप्यंतरण से काफी भिन्न है। अतः इसपर अलग से कहना अधिक समीचीन होगा।

१.६.२.१ पुस्तकों के नाम तथा उद्धरण :

कुछ भाषाओं में ऐसी परंपरा है कि दूसरी भाषाओं की पुस्तकों के नाम तथा उद्धरण अपनी भाषा में अनुवाद करके लिखते हैं। किंतु कुछ भाषाओं में परंपरा कुछ ऐसी है कि पुस्तकों के नाम व उद्धरण मूल भाषा में ही लिखते हैं। जैसे हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अंग्रजी पुस्तकों के नाम (यथा– The Tempest) तथा उद्धरण (यथा– Democracy is the government of the people, by the people and for the people) आदि अंग्रजी में तथा उसकी अपनी लिपि अर्थात रोमन में ही लिखते हैं। ऐसी दशा में लिप्यंतरण का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। परंतु संप्रति अंग्रेजी पुस्तकों के नाम तथा उद्धरण देवनागरी में भी लिखे जाने लगे हैं, यथा–"द टेम्पेस्ट", "डेमॉक्रेसी इज़ द गवर्नमेंट ऑफ द पीपुल, बाइ द पीपुल एंड फॉर द पीपुल"। ऐसे लिप्यंतरण में स्वन या स्वनिम ही आधार रहता है। उदाहरणार्थ यदि हमें 'knowledge' देवनागरी में लिखना हो तो, हम 'नॉलेज' ही लिखेंगे 'क्नॉलेड्ज़' नहीं। पर कभी कभी दूसरी भाषा के कुछ शब्दों के शुद्ध

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

उच्चारण के न जानने के कारण उच्चारण के स्थान पर वर्णों का प्रभाव देखा जा सकता है। देवनागरी में हिंदी भाषी "of" के लिए "ऑफ" ही लिखते हैं, जब कि अंग्रेजी में इसका उच्चारण "अव" है (अंग्रेजी में यह "व" भी संघर्षी है, हिंदी की तरह "संघर्षहीन प्रवाही" नहीं)। इसका कारण यही है कि अधिकतर लोग इस शब्द का सही अंग्रेजी उच्चारण नहीं जानते और "f" वर्ण होने के कारण इसको "फ" लिख देते हैं। इसी प्रकार हिंदी भाषी "Pilgrim's Progress" को "पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस" लिखते हैं, जब कि अंग्रेजी उच्चारण के अनुसार "पिल्ग्रिम्ज़" होना चाहिए। अंग्रेजी घोष स्वन के बाद यह "s" [ज़] उच्चरित होना चाहिए। चूंकि हिंदी भाषी इस नियम से अनभिज्ञ हैं तथा "s" वर्ण देख कर "स" ही लिख देते हैं।

१. ६. २. २ व्यक्तिवाचक संज्ञाएं :

प्रायः ऐसा समझा जाता है कि "नाम" अपना रूप नहीं बदलते किंतु यह वास्तव में शत प्रतिशत सत्य नहीं है। कभी कभी कुछ नाम दूसरी भाषाओं में इतने अधिक बदल जाते हैं कि मूल भाषा का व्यक्ति स्वयं अपने नाम को नहीं पहचान सकता है। बहुत से लोग (मैं स्वयं अपने बचपन में) "प्लेटो" तथा "अफलातून" को दो व्यक्ति समझते हैं जब कि दूसरा शब्द अरबीकृत रूप है, जो उर्दू तथा हिंदी में भी प्रयुक्त होता है।

१. ६. २. २. १ :

एक ही व्यक्तिवाचक संज्ञा के दो भाषाओं में जो भिन्न-भिन्न रूप प्राप्त होते हैं, उसके कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार हैं :—

(१) कुछ भाषाएँ व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का भी अनुवाद कर लेती हैं। अतः नाम के मूल भाषा के रूप तथा अनुवादित रूप में समानता मिलने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। चीनी भाषा का उदाहरण इस प्रकार है :—

अश्वघोष : मा—हेंग् (घोड़े की हिनहिनाहट वाला)। इसका विस्तृत वर्णन १.९ में किया गया है।

(२) कुछ भाषाओं में दूसरी भाषाओं के व्यक्तिवाचक संज्ञाओं को लिखने से पूर्व उन नामों को स्वदेशीकरण की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। परिणामस्वरूप विदेशी नाम भी स्वदेशी जैसे लगते हैं। संस्कृत में यह प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है। कुछ ग्रीक नामों के संस्कृत पर्याय द्रष्टव्य हैं :—

ग्रीक	संस्कृत
आलेक्सान्देर	अलिकसुंदर
सोक्रातेस	सुराष्ट्र

इस प्रकार के कुछ गिने-चुने उदाहरण मराठी में भी मिल जाते हैं, यथा—

अंग्रेजी	मराठी
Stuart	इष्टुर फाकडा
Elphinstone	अल्पिस्तन

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

(३) स्वनिक परिवर्तन के कारण पूर्ववर्ती व परवर्ती भाषा ओं में काफी परिवर्तन होते हैं। परिणामस्वरूप नाम भी अप्रभावित नहीं रहते। संस्कृत व परवर्ती भाषाओं के नामों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :—

संस्कृत	प्राकृत
ऋषभ	उसह, रिसह, उसभ, विसभ, वुसह आदि
कृष्ण	कण्ह, किसन
गौतम बुद्ध	गोतम बुज्झ
बुद्ध धर्म	बुज्झ धम्म
राजगृह	राजगिह
वैशाली	वेसाली, आदि

टिप्पणी :

सांस्कृतिक पुनरूत्थान के कारण कभी कभी अपभ्रंश नामों को तत्समीकृत करने की प्रवृत्ति हो जाती है। स्वतंत्रता के बाद बहुत से प्रचलित नाम बदल कर संस्कृत में प्रचलित नाम रख दिए गए। ऐसी स्थिति में आरंभ में दोनों नाम चलते हैं। बाद में एक ही नाम रह जाता है। उदाहरणार्थ— बनारस—वाराणसी; भेलसा—विदिशा आदि।

(४) कुछ भाषाओं में किसी देश कें नाम का वह रूप प्रचलित होता है, जो उस देश की भाषा में पूर्व काल में प्रचलित था, किंतु संप्रति उस देश के लोग अपने देश को अन्य नाम से पुकारते हैं। हिंदी में "रूस" नाम अब भी प्रचलित है, पर संप्रति रूसी में रूस का जो नाम प्रचलित है उस में "रूस" शब्द आता ही नहीं है।

इसी प्रकार हम लोगों के देश का नाम संप्रति 'भारत' है। पर कुछ भाषाओं में अब भी 'हिंदुस्तान' नाम प्रचलित है। अंग्रेजी का "India" शब्द 'सिंधु' व 'हिंदु' आदि से विकसित हुआ है। 'भारत' से इसका कोई संबंध नहीं है।[1]

(५) कुछ देशों के नाम जातिवाचक संज्ञाओं से मिलकर बनते हैं और जातिवाचक संज्ञाओं का दूसरी भाषा में अनुवाद हो जाता है। United States of America, जिसका संक्षिप्त रूप "U. S. A." है, का हिंदी में अनुवाद हो जाता है— संयुक्त राज्य अमेरिका। इसी प्रकार "रूस" देश का नाम रूसी भाषा में है :—

लिखित रूप :

सोयूज़् सोव्येत्स्किख़् सोत्सिअलिस्तीचिस्किख़् रेस्पूब्लिक्।

उच्चरित रूप :

सयूस् सव्येत्स्किख़् सत्सिअलिस्तीचिस्किख़् रिस्पूब्लिक्।

---

१. इससे मिलती जुलती स्थिति एक और है। हमारे देश में कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के भी पर्याय मिलते हैं, यथा—कृष्ण—गोपाल, मुरारि, मुरलीधर, पीतांबर आदि।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

इस का रूसी संक्षिप्त नाम 'C C C P' (एस. एस. एस. एर.) है। इस को अंग्रेजी में "Union of Soviet Socialist Republics" कहते हैं, जिस का संक्षिप्त रूप "U. S. S. R." है। हिंदी में "सोवियत संघ" व "सोवियत रूस" शब्द अधिक प्रचलित हैं।

(६) कुछ भाषाओं में पूरे नाम के साथ-साथ नाम के संक्षिप्त रूप भी प्रचलित होते हैं। ये तीन प्रकार के हो सकते हैं :—

(अ) व्यक्तियों के नामों में सरनेम (कुलनाम) से पूर्व के नामांश के पहले वर्णका प्रयोग होता है और सरनेम पूरा लिखा जाता है।

आधुनिक आर्य भाषाओं में अभी तक यह प्रवृत्ति रही है कि नामों में संक्षिप्त रूप के रूप में जिस प्रथम वर्ण का प्रयोग किया जाना है वह अंग्रेजी का वर्ण होता है और अंग्रेजी उच्चारण (चाहे वह कितना भी अपूर्ण क्यों न हो) के साथ हमारी भाषाओं में लिखा जाता है, यथा— श्री. बी. डी. जत्ती, श्री. वी. वी. गिरि आदि। पर आजकल कुछ भारतीय भाषाओं में विशेषतः मराठी में संक्षिप्तरूप में देवनागरी के आदय वर्णों का प्रयोग किया जाता है, यथा— 'अशोक रामचंद्र केळकर, पुरुषोत्तम शिवराम रेगे' के लिए क्रमशः 'अ. रा. केळकर, पु.शि. रेगे' आदि। इसके अतिरिक्त संप्रति भारत में प्रकाशित कुछ अंग्रेजी समाचार पत्रों में देवनागरी (या भारतीय भाषा की लिपि) के आदय वर्णों का प्रयोग किया जाता है, यथा— Ka. Naa. Subramanyam (एक लेखक जिनके लेख भारतीय साहित्य पर अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपते रहते हैं), इसी प्रकार मराठी कवि व उपन्यासकार 'चि. त्र्यं. खानोलकर' के लिए कुछ अंग्रेजी समाचार पत्रों में 'C. T.' के स्थान पर 'Chim. Tryam.' देखा जा सकता है। दिल्ली से प्रकाशित बच्चों की पत्रिका 'पराग' के सितंबर १९७८ के अंक में एक उर्दू लेखक का नाम उर्दू के वर्णों के उच्चारण के अनुसार लिखा पाया गया—मीम. ऐन. गम (م۰ ع۰ غم۰).

(आ) व्यक्ति नाम— यदि एक से अधिक शब्दों से मिलकर बनते हैं, तो उन शब्दों के पहले वर्ण का प्रयोग किया जाता है, यथा—

United States of America के लिए U. S. A.,
Uttar Pradesh ,, ,, U. P.,
Madhya Pradesh ,, ,, M. P.,
Rashtriya Swayam Sevak Sangh के लिए R. S. S., आदि।

हिंदी में इस प्रकार के नामों का अधिक प्रचलन नहीं है। यदि संक्षिप्त रूपों का प्रयोग होता भी है, तो अंग्रेजी के वर्णों को उनके उच्चारण सहित लिखा जाता है, यथा— यू. पी., एम. पी., आर. एस. एस., आदि।

(इ) कुछ शब्दों वाली व्यक्तिवाचक संज्ञाओं में प्रत्येक शब्द के प्रथम वर्ण को लेकर ही एक शब्द बन जाता है, यथा—'United Nations Educational, Scientific and Cultural Organisation' से 'UNESCO' बन गया।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

आजकल अंग्रेजी में भी इसका उच्चारण 'यू. एन. ई. एस. सी. ओ.' न होकर सीधे "यूनेस्को" होता है। भारतीय भाषाओं में दो प्रकार की प्रवृत्ति मिलती है :—

(१) अंग्रेजी के वर्णों के संयोग से निर्मित शब्द का अंग्रजी उच्चारण में प्रयोग, यथा—"यूनेस्को"।

(२) कई शब्दों से बने नामों में देवनागरी के आदय वर्णों से भी शब्द बनाने की प्रवृत्ति पाई जाती है, यथा——

संविद	संयुक्त विधायक दल
संसोपा	संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, आदि

टिप्पणी :

(१) जब इस तरह के नाम प्रचलित हो जाते हैं, तो इन वर्णों को मिलाकर लिखा जाता हैं और मिलाकर ही उच्चारण किया जाता है। वैसे संक्षिप्त रूपों में पहले वर्ण के बाद अंग्रजी में "." का चिन्ह लगा रहता है, जिसे 'फुल स्टाप' कहते हैं। मराठी में भी इसी चिह्न का प्रयोग होता है। पर हिंदी में वर्ण के बाद "शून्य" का प्रयोग होता है। पर जिन पत्रिकाओं (यथा-धर्मयुग) में पूर्ण-विराम के लिए "।" का प्रयोग न होकर "." का प्रयोग होता है, वहां वर्ण के बाद "." का ही प्रयोग किया जाता है।

(२) रोमन चूंकि वर्णात्मक लिपि है अत: उसका एक ही वर्ण, चाहे वह स्वर हो या व्यंजन संक्षिप्त रूप में प्रयुक्त होता है। देवनागरी तथा अन्य भारतीय लिपियां (उर्दू को छोड़कर) अक्षरात्मक हैं। अत: यदि शब्द स्वर से आरंभ होता है तो संक्षिप्त रूप में स्वर, यदि व्यंजन से आरंभ होता है, तो व्यंजन तथा उसके बाद का पहला स्वर तथा यदि अनुस्वार हो, तो अनुस्वार सहित, लिखने की प्रवृत्ति है।

यदि शब्दारंभ में संयुक्त व्यंजन है, तो संयुक्त व्यंजन तथा उस के बाद का प्रथम स्वर लिखा जाता है। उदाहरणार्थ—

संदेश कुमार भार्गव—सं. कु. भार्गव

स्वदेश प्रकाश सिंह——स्व. प्र. सिंह

कभी कभी नाम के संक्षिप्त रूप पूर्ण रूप से भी अधिक प्रचलित होते हैं। 'उत्तर प्रदेश' व 'मध्य प्रदेश' के लिए अधिक प्रचलित रूप क्रमशः 'यू. पी.' व 'एम. पी.' हैं। आजकल 'जयप्रकाश नारायण' के लिए. 'जे. पी.' का प्रयोग बहु-प्रचलित है। यहां एक रोचक संस्मरण का वर्णन समीचीन होगा। मध्यप्रदेश के एक विद्यालय के कक्षा नौ के एक छात्र से लेखक ने यह जानना चाहा कि "चंद्र शेखर वेंकट रमण" कौन हैं। कोई छात्र उत्तर न दे सका। जब उनसे पूछा गया कि "नोबल पुरस्कार" किस भारतीय वैज्ञानिक को मिला, तो कुछ छात्र एकदम बोल उठे, "सर सी. वी. रमन" को।

७. तृतीय भाषा के माध्यम से लिप्यंतरण :

भारत में अंग्रेजी काफी समय से विजेताओं की भाषा होने के कारण प्रभावी भाषा रही है। अतः भारतीय भाषाओं ने दूसरे राज्यों (उस समय प्रांतों) के नामों को

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

अंग्रेजी के माध्यम से ग्रहण किया। हिंदी में "तिरुवनंतपुरम्", "वडोदरा" व 'पुणे' सरलता से लिखे जा सकते हैं। किंतु हिंदी ने इन शब्दों को रोमन लिपि (अंग्रेजी उच्चारण) के माध्यम से ग्रहण किया। अतः इनके स्थान पर 'त्रिवेन्द्रम' (Trivandrum), 'बड़ोदा' (Baroda) व 'पूना' (Poona) आदि लिखने की परंपरा हिंदी में प्रचलित हो गई। इसी प्रकार विदेशी भाषाओं में प्रयुक्त नाम भारतीय भाषाओं ने अंग्रेजी के माध्यम से प्राप्त किए। इसी लिए हिंदी में "टॉल्सटॉय" मिलता है। संप्रति इस प्रकार की प्रवृत्ति पनप रही है कि देवनागरी में विदेशी नामों को उनके उच्चारण के अनुसार लिखा जाय। अतः अब 'तोल्स्तोय' रूप भी देखने को मिलता है। यह रूप भी रुसी वर्ण के अनुसार है। उच्चारण के अनुसार "तल्स्तोइ" होना चाहिए, क्योंकि रुसी में "o" का उच्चारण बलाघात न होनेपर "अ" होता है। फिरभी अभी 'Paris' को "पेरिस" ही लिखा जाता है "पारी" नहीं, जो मूल फ्रेंच उच्चारण के अधिक निकट है। इस प्रवृत्ति को पूरी तरह से पनपने में कुछ समय लगेगा।

१.६.२.२.२ :

कभी कभी यह भी देखा जाता है कि एक ही भाषा में कुछ नाम भिन्न प्रकार लिखे जाते हैं। इसके निम्न कारण है :—

(१) पुनः लिप्यंतरण :—यदि स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में और फिर लक्ष्य भाषा से स्रोत भाषा में लिप्यंतरण हो तो कभी कभी स्रोत भाषा में ही उसका रूप बदल जाता है। समयांतर में बदला रूप ही अधिक प्रचलित हो जाता है, यथा—

मूलरुप	रोमन में प्रयुक्त रुप	अब हिंदी में भी प्रचलित रुप
गुप्त	Gupta	गुप्ता
मिश्र	Mishra	मिश्रा
खां	Khan	खान

संप्रति दोनों ही रूप देवनागरी में प्रचलित हैं। किंतु स्वतंत्रता के बाद प्रथम रुपों का प्रचलन बढ़ रहा है।

(२) भिन्न भाषियों द्वारा एक लिपि में भिन्न-भिन्न लिप्यंतरण देखा जा सकता है। इसका कारण यह है कि भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी अपनी भाषा में प्रचलित उच्चारण व रीति का पालन तीसरी भाषा में करते हैं। रोमन लिपि में ही लिप्यंतरण के कुछ भिन्न-भिन्न रूप प्रस्तुत हैं :—

हिंदी व मराठी में प्रचलित रुप	रोमन में लिखित रुप	
	हिंदी भाषी द्वारा	मराठी भाषी द्वारा
ऋषिकेश	Rishikesh	Rushikesh
ज्ञानप्रकाश	Gyan Prakash	Dnyan Prakash

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

(३) कुछ नाम विशेषतया सरनेमों (कुलनामों) में कुछ वैयक्तिक रुचिगत अंतर भी पाया जाता है। कुछ लोग अपने सरनेम को एक ढंग से लिखते हैं, कुछ लोग दूसरे प्रकार से, यथा—

सक्सेना	सक्सैना
महरोत्रा	मेहरोत्रा, आदि

ऐसे भी उदाहरण हैं कि पिता एक रूप लिखता है और पुत्र दूसरा। ये रूप परिवर्त तो हैं, पर जो एक लिखते हैं, वे दूसरा लिखा देखना अपने लिए नापसंद करते हैं।

उपर्युक्त सब को लिप्यंतरण की समस्या के अंतर नहीं रखा जा सकता। उदाहरणार्थ जब नाम का अनुवाद कर लिया जाए (जैसाकि चीनी में होता है), तो लिप्यंतरण का प्रश्न उठता ही नहीं। पर सूक्ष्म दृष्टि से विचार करने पर इनको भी एक अलग ढंग से हल की गई लिप्यंतरण की समस्या का समाधान माना जा सकता है।

१.६.२.२.३ :

इनके अतिरिक्त व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के लिप्यंतरण को तीन शीर्षकों के अंतर्गत रखकर अध्ययन किया जा सकता है :—

(१) जब दो भाषाओं की लिपि एक ही हो।

(२) जब दो भाषाओं की लिपियां भिन्न हों, किंतु उनका स्रोत एक ही हो।

(३) जब दो भाषाओं की लिपियां भिन्न हों।

१.६.२.२.३.१ जब दो भाषाओं की लिपि एक हो :

स्थूल दृष्टि से देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि यदि दो भाषाओं की लिपि समान है, तो लिप्यंतरण हो ही नहीं सकता और यदि उसको लिप्यंतरण की संज्ञा दे भी दी जाए, तो भी इसमें किसी समस्या के उठने का प्रश्न ही नहीं उठता। सूक्ष्म दृष्टि से विचार करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि दोनों लिपियों, चाहें उन्हें एक ही संज्ञा क्यों न दी जाए, में अंतर होता ही है। इसके कारणों की चर्चा हम १.२.२ में कर चुके हैं।

यदि दो भाषाओं की लिपि एक हो, फिर भी भिन्न कारणों से व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के लिप्यंतरण में अंतर हो सकता है :—

(१) एक ही नाम दो भाषाओं में भिन्न स्वनिमिक व्यवस्था के कारण भिन्न भिन्न उच्चरित होता है।

(२) एक ही स्वन या स्वनसमूह दोनों भाषाओं में भिन्न वर्ण या भिन्न वर्ण गुच्छे के द्वारा अभिव्यक्त होते हैं।

(३) लक्ष्य भाषा किसी नाम को स्रोत भाषा से सीधे न प्राप्त कर किसी अन्य भाषा के माध्यम से प्राप्त करे।

(४) किसी एक भाषा में कोई एक वर्ण न हो, तो उसके स्थान पर दूसरा वर्ण प्रयुक्त होता है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

(५) कुछ ऐतिहासिक कारणों से दोनों भाषाओं में कुछ नामों के भिन्न-भिन्न रूप रूढ़ हो जाते हैं।

इन सबकी उदाहरण सहित चर्चा २.२ में की जा रही है। कुछ विदेशी भाषाओं के मिले जुले उदाहरण देना यहां समीचीन होगा।

अंग्रेजी, पुर्तगाली, फ्रेंच, जर्मन तथा स्पेनिश भाषाएं रोमन लिपि में लिखी जाती हैं। इन सभी भाषाओं में प्रचलित महीनों के नामों की व्यतिरेकी स्थिति इस प्रकार है :—

अंग्रेजी	पुर्तगाली	फ्रेंच	जर्मन	स्पेनिश
January	janeiro	janvier	Januar	enero
February	fevereiro	février	Februar	ferbrero
March	março	mars	März	marzo
April	abril	avril	April	abril
May	maio	mai	Mai	mayo
June	junho	juin	Juni	junio
July	julho	juillet	Juli	julio
August	agosto	août	August	agosto
September	setembro	septembre	September	setiembre
October	outubro	octobre	Oktober	octubre
November	novembro	novembre	November	noviembre
December	dezembro	décembre	Dezember	diciembre

टिप्पणी :— महीनों के नामों के लेखन में अंग्रेजी में शब्द का प्रथम वर्ण 'कैपिटल' (Capital) लिखा जाता है, जबकि पुर्तगाली, फ्रेंच व स्पेनिश में ऐसा नहीं है। जर्मन में तो सभी संज्ञाओ का प्रथम वर्ण कैपिटल लिखा जाता है।

इन के अतिरिक्त कुछ अन्य नामों की अंग्रेजी, फ्रेंच तथा जर्मन भाषाओं में व्यतिरेकी स्थिति इस प्रकार है :—

हिंदी	अंग्रेजी	फ्रेंच	जर्मन	
भारत	India	L'inde	Indien	
भारतीय	Indian	L'indien	Inder	(पु.)
		L'indienne	Inderin	(स्त्री.)
इंग्लैंड	England	L'angleterre	England	
अंग्रेज	English	L'anglais	Engländer	(पु.)
		L'anglaise	Engländerin	(स्त्री.)
अंग्रेजी	English	L'anglais	Englisch	
फ्रांस	France	La France	Frankreich	

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

हिंदी	अंग्रेजी	फ्रेंच	जर्मन
फ्रांसीसी	French	Le français La française	Franzose (पु.) Französin (स्त्री.)
फ्रेंच	French	Le français	Franzóśisch
जर्मनी	Germany	L'allemagne	Deutschland
जर्मन	German	L'allemand L'allemande	ein Deutscher (पु.) eine Deutsche (स्त्री.)
जर्मन (भाषा)	German	L' allemand	Deutsch
प्रेमचंद	Prem Chand	Prème Chende	Premtschand
जवाहरलाल	Jawaharlal	Jàwahàrlal	Dschawaharlal

१.६.२.२.३.२ जब दोनों भाषाओं की लिपियां भिन्न हों, किंतु उन लिपियों का स्रोत एक हो :

इस प्रकार की स्थिति भारत में है। यहां की बहुत सी भाषाओं की लिपियां अलग-अलग हैं किंतु अधिकतर लिपियां ब्राह्मी प्रसूत हैं। अतः कुछ वर्णों (या वर्ण-समूह) के उच्चारण भिन्न होने पर भी सब लिपियों में कुछ अपवादों को छोड़ कर समान वर्ण हैं। ऐसी भाषाओं में लिप्यंतरण में १.६.२.२.३.१ के ही नियम लागू होते हैं, अर्थात वर्ण का ही प्रतिस्थापन होता है। यदि भेद होता भी है, तो उन के कारण भी वे हैं, जिन का वर्णन किया जा चुका है।

१.६.२.२.३.३ जब दोनों भाषाओं की लिपियाँ भिन्न हों :

ऐसी स्थिति में निम्न तथ्य अवलोकित किए गए :—

(अ) स्वन (या स्वनिम) लिप्यंतरण में आधार है, यथा—हिंदी सरनेम "सिंह" को अंग्रेजी में 'Singh' लिखा जाता है 'Sinha' नहीं। उर्दू में भी इसको "सिंघ्" (سنگھ) ही लिखा जाता है।

(आ) विदेशी नामों को लिखने के लिए कभी कभी लक्ष्य भाषा अपनी लिपि के विरल युक्त वर्ण या वर्णों को प्रयुक्त करती है। रूसी नाम 'Brezhnev', उर्दू में بریژنیف (अर्थात "ژ" वर्ण का प्रयोग) लिखा जाता है। उर्दू में "ژ" वर्ण का प्रयोग बहुत ही कम होता है। किंतु यहां यह वर्ण (जैसा फारसी में भी है, जिस की लिपि उर्दू ने अपनाई है) रूसी के घोष तालव्य संघर्षी स्वन के लिए प्रयुक्त हुआ है।

यहां एक विचित्र बात यह है कि उर्दू में अंग्रेजी के अघोष और घोष दंत्य संघर्षी स्वनों (जो अंग्रेजी में "th" वर्णों द्वारा लिखे जाते हैं) को वर्ण "ث" और "ذ" द्वारा नहीं लिखा जाता है। फारसी में ये वर्ण अघोष और घोष दंत्य संघर्षी स्वनों के लिए ही प्रयुक्त होते हैं। कई ऐतिहासिक और भाषिक कारणों से उर्दू में अंग्रेजी के इन स्वनों को "تھ" (थ्) और "د" (द्) वर्णों द्वारा लिखा जाता है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

(इ) कुछ भाषाओं में कुछ विशिष्ट स्वन या स्वनों को कुछ विशिष्ट वर्ण या वर्णों द्वारा व्यक्त किया जाता है। जैसे अंग्रेजी के घोष तालव्य संघर्षी स्वन के लिए "g" (जी) (यथा—rouge आदि) या 's' (एस) (यथा—pleasure आदि) वर्णों का प्रयोग होता है। किंतु विदेशी नामों के लिप्यंतरण में उसी स्वन के लिए किसी अन्य वर्ण या वर्ण-समूह का प्रयोग किया जाता है। जैसे रूसी नामों में आए इस स्वन के लिए अंग्रेजी में "zh" वर्णों का प्रयोग किया जाता है, यथा—"Brezhnev"। रूसी में इसके लिए एकही वर्ण है।

(ई) कुछ भाषाओं में एक वर्ण एक से अधिक स्वनों को अभिव्यक्त करता है। ऐसी दशा में कुछ भाषाएं लिप्यंतरण में वर्ण को आधार मानकर प्रत्येक स्थान पर अपनी भाषा में प्रयुक्त उसके संवादी वर्ण का प्रयोग करती हैं, चाहे शब्दों में उस वर्ण का स्वनात्मक मूल्य कुछ भी हो। उदाहरणार्थ रूसी में 'Brezhnev' आदि शब्दों में अंतिम "v" अघोष हो जाता है, अर्थात [फ़]। अंग्रेजी में इसे "v" वर्ण द्वारा लिखने की परंपरा है, न कि "f" द्वारा। हिंदी में भी इसके लिए "व" वर्ण प्रयुक्त होता है, 'फ़' नहीं।

इसके विपरीत, कुछ भाषाएं ऐसी स्थिति में उच्चारण को आधार मानकर शब्द विशेष में वर्ण के उच्चारण को अपनी भाषा में लिखती हैं। उदाहरणार्थ— रूसी नाम "Vira" में प्रयुक्त "v" के लिए उर्दू में "و" (वाओ) का प्रयोग होता है। 'Brezhnev' आदि शब्दों में प्रयुक्त 'v' वर्ण के लिए उर्दू 'ف' (फ़े) वर्ण का प्रयोग करती है, क्योंकि रूसी में पहले शब्द में इसका उच्चारण "و" से मिलता जुलता है, दूसरे में इसका उच्चारण "ف" ही है।

(उ) **परंपराएं व रूढ़ियां**—लिप्यंतरण में परंपरा का विशेष महत्व है जैसा कि निम्न तथ्यों से स्पष्ट है। ये ही परंपराएं बाद में रूढ़ियों का रूप धारण कर लेती हैं।

(१) जब अंग्रेज भारत में आए, तो उन्होंने भारतीय नामों को अपनी लिपि में एक विचित्र ढंग से लिखा। इसका कारण यह हो सकता है कि वे भारतीय नामों को, अपनी भाषा की स्वनिमिक व्यवस्था भिन्न होने के कारण, उच्चारण को ठीक प्रकार नहीं सुन सकते थे। अतः उन्होंने जैसा भी सुना, उसको अपनी लिपि में लिखने का प्रयत्न किया। दूसरी कठिनाई उन के साथ यह भी थी कि उनकी लिपि में भारतीय नाम ठीक से लिखे भी नहीं जा सकते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि अंग्रेजो ने उस समय स्थान विशेष में प्रचलित नामों के उच्चारण को ही अपने लिप्यंतरण का माध्यम बनाया। जो भी कारण रहा हो, किंतु बाद में जैसा कि इतिहास में अक्सर होता है, भारतीयों ने भी उन नामों के लेखन में अंग्रेजों द्वारा प्रयुक्त वर्तनी को आधार मानने में गौरव का अनुभव किया, क्यों कि भारतीय गुलाम थे ओर अंग्रेजों की नकल करने में अपने को गौरवान्वित समझते थे। बाद मे यही वर्तनी रूढ़ हो गई। स्वतंत्रता के बाद कई नामों की वर्तनी में परिवर्तन किया गया, उदाहरणार्थ :—

पुराना रूप	संप्रति प्रयुक्त रूप
Cawnpore	Kanpur
Muttra	Mathura
Baroda	Vadodara
Poona	Pune

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

फिर भी कुछ नामों में अभी पुरानी वर्तनी का प्रयोग हो रहा है, यथा—Delhi, Meerut, Bareilly, Bombay आदि। यहां इस बात का उल्लेख किया जा सकता है कि उत्तरप्रदेश के एक संभागीय मुख्यालय "बरेली" की वर्तनी 'Bareilly' है, पर इसी नाम के मध्यप्रदेश के रायसेन ज़िले की एक तहसील मुख्यालय की वर्तनी 'Bareli' है।

(२) भिन्न भाषा-भाषियों द्वारा एक ही नाम को एक ही लिपि में भिन्न-भिन्न लिखने की परंपरा है। उदाहरणार्थ :—

नाम	हिंदी–भाषी	दक्षिण भारतीय भाषा–भाषी
सीता	Sita	Sitha
श्रीनिवास	Shrinivas	Srinivas
शर्मा	Sharma	Sarma
शेष	Shesh	Sesh

इस का कारण यह है कि हिंदी व दक्षिण भारतीय भाषा-भाषी लिप्यंतरण में रोमन के कुछ वर्णों का प्रयोग अपनी भाषा के भिन्न वर्णों के लिए करते हैं, यथा—

हिंदी वर्ण	रोमन वर्ण / वर्ण-समूह	दक्षिण भारतीय भाषाओं के वर्ण
त्, ट्	t	ट्
थ्, ठ्	th	त्
स्	s	स, श
श्, ष्	sh	ष्

तत्सम नामों के बारे में दक्षिण भारत में सामान्य प्रवृत्ति यह है कि यदि कोई व्यक्ति संस्कृत की वर्तनी से परिचित है, तो वह उन नामों को रोमन लिपि में भी लिखते समय संस्कृत के वर्णों को आधार मान कर लिखेगा, अन्यथा वह उन शब्दों को अपने उच्चारण के अनुसार लिखेगा। इसी कारण कुछ दक्षिण भारतीय भी 'सीता' को 'Sita' लिखते हैं। तमिल भाषियों द्वारा तत्सम नामों को उच्चारणानुसार लिखने का एक उदाहरण इस प्रकार है :—

आरोग्यनाथन Arokyanathan

अधिकतर तमिल भाषी तत्सम नामों को रोमन लिपि में लिप्यंतरण करते समय संस्कृत वर्णानुसार ही लिखते हैं, यद्यपि उच्चारण उन का भिन्न रहता है। इस के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :—

		उच्चारण
राधाकृष्णन्	Radhakrishnan	रादाक्रिश्नन्
वेंकटरमण	Venkatraman	वेङ्गटरामण्
सुब्रह्मण्यम्	Subrahmanyam	सुप्रमण्यँ, आदि

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

इसी प्रकार अंग्रेजों ने अपनी भाषा में कुछ ग्रीक नामों को अपनी लिपि में ग्रीक वर्णानुसार लिखा, पर उच्चारण उनका भी मूल उच्चारण से भिन्न है, यथा—

	ग्रीक उच्चारण	अंग्रेजी उच्चारण
Socrates	सोक्रातेस	सॉक्रटीज़ (ह्रस्व ऑ)
Alexander	आलेक्सान्देर	ऐलिग्ज़ान्ड ~ डर

ग्रीक में प्रथम शव्द में "क" तथा तीसरे शव्द में "क्स" है, जव कि अंग्रेज़ी में इनका प्रतिस्थापन वर्ण "c" व "x" द्वारा हो गया है।

(३) कभी-कभी एक ही लिपि में कुछ नामों में एक से अधिक वर्तनी का प्रयोग होता है। इसका कारण यह भी है कि स्रोत भाषा में भी दो वर्तनियाँ प्रयोग में हों। उदाहरणार्थ हिंदी में "महरोत्रा" और "मेहरोत्रा" मुक्त परिवर्तन में हैं। इसीं कारण अंग्रेज़ी में भी 'Mahrotra' और 'Mehrotra' दोनों रूप प्रचलित हैं।

(४) भिन्न-भिन्न शव्दों में एक हीं स्वन के लिए भिन्न-भिन्न वर्ण या वर्णों का प्रयोग प्रचलित हो जाता है। ऐसी स्थिति में दो संभावनाएं हैं :—

(अ) दो वर्तनियां मुक्त परिवर्त हो सकती हैं, यथा—

(Shri ~ Sri; Mira ~ Meera) आदि। हिंदी का संवृत, अग्र, दीर्घ स्वर रोमन लिपि में "i" या "ee" द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है।

उर्दू में नाम के भाग "लाल" (यथा— रामलाल, लाल वहादुर) के लिए "لال" और "لعل" मुक्त परिवर्तन में हैं।

(आ) एक ही स्वन के लिए कुछ शव्दों में कुछ विशिष्ट वर्ण या वर्णों का प्रयोग होता है और दूसरे शव्दों में दूसरे वर्ण या वर्णों का। अर्थात वे ही वर्तनियां उनके लिए रूढ़ हो गई हैं। "एटा" (एक स्थान का नाम) के लिए "Etah" अर्थात "आ" स्वन के लिए "ah" और "सातारा" के लिए "Satara" अर्थात 'आ' के लिए केवल "a" वर्ण प्रयुक्त होता है। उर्दू में "आ" के लिए 'शर्मा' में "अलिफ़" वर्ण का प्रयोग होता है और 'नंदा' में 'हे' वर्ण का— شرما، نندہ.

(५) कभी-कभी ऐसा भी देखा जाता है कि कुछ स्वनों को किसी भाषा विशेष की लिपि में लिखा तो जा सकता है, फिर भी परिवर्तन पाए जाते हैं। उदाहरणार्थ उर्दू में "पुर" (پُر) लिखा तो जा सकता है, पर रूढ़ि "पोर" (پور) लिखने की है (रामपुर, नागपुर आदि शव्दों में)। इसी प्रकार "मिश्र" या 'मिश्रा' उर्दू में लिखा तो जा सकता है (مشر، مشرا), पर रूढ़ि 'मिस्‌रा' (مصرا) लिखने की है। (यहां यह कहना भी समीचीन होगा कि प्राय: संस्कृत प्रभूत नामों में उर्दू "स्वाद" (ص) वर्ण का प्रयोग नहीं करती, पर यहां "सीन" के स्थान पर 'स्वाद' का प्रयोग हुआ है)। इसी प्रकार घोप वर्त्स्य संघर्षी "स" उर्दू में लिखा जा सकता है, किंतु 'राजेन्द्रप्रसाद' में इसे तालव्य लिखने की परंपरा है, जैसे—राजेन्दर परशाद : راجیندر پرشاد.

(६) रोमन लिपि (अंग्रेजी) में लिप्यंतरण के उद्देश्य से भारतीयों ने वर्ण "ph" को 'फ' (द्वयोष्ठ्य स्पर्श) तथा वर्ण 'f' के लिए "फ़" (दंतोष्ठ्य संघर्षी) का

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

प्रतीक माना है, यदचपि अंग्रेज़ी में "ph" और "f" दोनों का उच्चारण [फ़] ही है। इस प्रकार हिंदी भाषी "फूलसिंह" को "Phool Singh" लिखते हैं। उनको बुरा लगेगा यदि कोई इस नाम को "Fool Singh" लिख दे, यदचपि अंग्रेजी भाषी दोनों का उच्चारण [फ़ूल] ही करेगा। कभी-कभी "फ़" और "फ" में भ्रांति हो जाती है। मराठी में दंतोष्ठ्य संघर्षी स्वन [फ़] नहीं है, फिर भी "फुले" को "Fuley" लिखने की परंपरा है।

कुछ हास्यास्पद स्थितियों का वर्णन समीचीन होगा। जव भारतीय कुछ नामों को रोमन लिपि में लिखते हैं और अंग्रेज़ी भाषी उनका उच्चारण कुछ अलग ढंग से करते हैं, जो कि स्रोत भाषा के उच्चारण से बहुत दूर होता है तव स्थिति बड़ी हास्यास्पद हो जाती है। ऐसे कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :—

मराठी सरनेम	इनका रोमन लिप्यंतरण	अंग्रेजी भाषियों द्वारा इनका उच्चारण
पागे	Page	पेइज्
वडगे	Badge	वैज्
मुळे	Mule	म्यूल्, आदि

१.६.२.३ लिप्यंतरण की सीमाएं और समाधान में विकल्प :

प्रत्येक भाषा की स्वनिमिक व्यवस्था भिन्न होती है। उस भाषा की लिपि में उन सव स्वनों को लिखने के लिए या तो अलग-अलग वर्ण होते हैं या परंपरा द्वारा कई स्वनों के लिए एक ही वर्ण द्वारा (या उसका उलटा भी) अभिव्यक्त करने की परंपरा वन जाती है। किंतु दूसरी भाषाओं के नाम लक्ष्य भाषा में लिखना तथा उच्चारण करना सदैव संभव नही होता है, क्योंकि वे सव वर्ण, जो दूसरी भाषा के सब स्वनों को प्रकट कर सके, लक्ष्य भाषा में उपलब्ध नहीं होते। ऐसी दशा में क्रमानुसार कई विकल्प संभव हैं, जो इस प्रकार हैं :—

(१) लगभग समान स्वन के प्रतीक वर्ण द्वारा प्रतिस्थापन, यथा फ्रेंच अलिजिह्वीय लुंठित [R] के लिए हिंदी व मराठी में "र" वर्ण का प्रयोग, जो इन भाषाओं में वर्त्स्य लुंठित का प्रतीक है।

(२) कुछ भिन्न स्वनों के प्रतीक वर्ण द्वारा प्रतिस्थापन, यथा—अरबी के "स्वाद" को हिंदी के "स" वर्ण द्वारा व्यक्त करना।

यहां यह ध्यातव्य है कि स्वनों में समानता कोई निरपेक्ष्य सत्य नहीं है। यह सापेक्ष्य है। यह संभव है कि एक भाषा के लोग स्रोत भाषा के एक विशिष्ट स्वन को अपने अमुक स्वन के समान मानते हों, जवकि दूसरी भाषा वाले स्रोत भाषा के उसी स्वन को किसी अन्य स्वन के समान मानते हों।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

इसके अतिरिक्त विकल्प में भी परंपरा का अधिक महत्त्व है और वही परंपरा वाद में रुढ़ि वन जाती है। एक उदाहरण से यह वात अधिक स्पष्ट हो जाएगी। हिंदी अपनी लिपि में फारसी के अघोष व घोप दंत्य संघर्षी स्वनों को क्रमशः "स" और "ज़" द्वारा व्यक्त करती है, जब कि अंग्रेज़ी के इन्हीं स्वनों को हिंदी क्रमशः "थ" व "द" वर्णों द्वारा व्यक्त करती है।

दूसरे, यदि कोई स्वन या स्वन-समूह किसी लक्ष्य भापा की लिपि में न लिखा जा सके, तो यह आवश्यक नहीं है कि लक्ष्य भाषा विभिन्न नामों में प्रयुक्त किसी एक स्वन को व्यक्त करने में एकरूपता वरते। उदाहरणार्थ—उर्दू में शव्दांत में "द" के वाद "अ" लिखना संभव नही है, तो इसके कई विकल्पों में से दो विकल्प इस प्रकार हैं— (१) शव्दांत "अ" को समाप्त कर दिया जाए, (२) "अ" के स्थान पर "आ" लिखा जाए। "चंद्र" लिखने में उर्दू प्रथम विकल्प को अपनाती है अर्थात 'چندر' और 'आंध्र' लिखने में दूसरे विकल्प को अपनाती है, अर्थात— آندھرا ।

टिप्पणी :

"चंद्र" का उच्चारण उर्दू में [चन्दर] है।

१.६.३ समीकृत लिप्यंतरण :

इसके अंतर्गत आगत व आगत-मिश्र शब्दों का लिप्यंतरण आता है। आधुनिक य़ुग में प्रत्येक भापा में आगत शब्दों की संख्या दिन-प्रति-दिन वढ़ती जा रही है। भारतीय भापाओं में आगत शब्दों की संख्या वृद्धि संस्कृति-शव्दों तथा पारिभापिक और तकनीकी शब्दों के कारण अधिक हुई है। सामान्यतः लक्ष्य भापा आगत शब्दों को अपनी स्वनिमिक व्यवस्था के अनुरूप वना कर स्वीकारती हैं। इस प्रक्रिया को 'अनुकूलन' कहते हैं। ऐसी स्थिति में लिप्यंतरण की कोई समस्या नहीं आती, यदचपि वहुत अधिक शब्दों के आगमन से लक्ष्य भापा की स्वनिमिक व्यवस्था में भी परिवर्तन हो जाता है। उदाहरणार्थ वंगला में (श) केवल एक ही ऊष्म स्वनिम है, किंतु अंग्रेज़ी व हिंदी के आगत शव्दों के कारण वंगला में [श] व [स] में व्यतिरेक उपस्थित हो गया है। इस प्रकार की स्थिति में तीन संभावनाएं हैं :—

(१) लक्ष्य भापा अपनी लिपि में कुछ नए वर्णों का समावेश कर लेती है।

(२) पुराने वर्णो में कुछ विशेपक चिह्न लगाकर काम चलाती है। संप्रति देवनागरी में "ऑ" आदि का प्रयोग इसका उदाहरण है।

(३) किसी नए स्वन को प्रकट करने के लिए दो वर्णों का प्रयोग भी देखा जा सकता है। उदाहरणार्थ— वंगला में अंग्रेजी के द्वयोष्ठ्य अर्ध स्वर को प्रकट करने के लिए "ओय्" का प्रयोग होता है।

भारत में अंग्रेजी को एक विशिष्ट व आदर का स्थान प्राप्त है। इस लिए दिन-प्रति-दिन के वार्तालाप में शिक्षित और अर्ध शिक्षित भारतीय अपनी भापाओं में उन वहुत से अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग धड़ल्ले से करते हैं, जिनके लिए उनकी भापा मे शब्द मौजूद हैं, यथा—हिंदी में 'बुख़ार/ज्वर' के लिए 'फीवर' का प्रयोग। नाटको आदि में

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

वास्तविक स्थिति को चित्रित करने के लिए ऐसे शब्दों को लिप्यंतरित करने की समस्या उपस्थित होती है। ऐसी स्थिति में पूर्व वर्णित तथ्यों में कुछ अधिक नई बातें नहीं जोड़ी जा सकतीं, फिर भी निम्नांकित का वर्णन समीचीन होगा :—

(१) लिप्यंतरण में बहुत से लोग नए वर्णों का प्रयोग तो करते हैं, किंतु उच्चारण स्रोत भाषा के अनुसार नहीं करते। "डॉक्टर" आदि शब्दों में बहुत से हिंदी भाषी 'ऑ' वर्ण का प्रयोग तो करते हैं, पर उन में से काफी लोग इस का उच्चारण [आ] ही करते हैं। कुछ हिंदी भाषियों की व्यक्ति-बोली में "आ" और "ऑ" मुक्त परिवर्तन हैं। इसी प्रकार कुछ हिंदी भाषी "ज़" वर्ण का प्रयोग तो करते हैं, किंतु उच्चारण [ज] ही करते हैं। इन स्वनों का उच्चारण सामाजिक प्रतिष्ठा का अधिक द्योतक है।

(२) इस के विपरीत यह भी संभव है कि स्रोत भाषा में प्रयुक्त नए स्वनों को प्रकट करने के लिए लक्ष्य भाषा में किसी नए वर्ण का प्रयोग न किया जाए, वरन पहले से विद्यमान वर्ण या वर्ण-समूह का प्रयोग किया जाए और उसका उच्चारण स्रोत भाषा से मेल खाए। उदाहरणार्थ— बंगला में अधिकतर लोग "ज़" वर्ण का प्रयोग नहीं करते, पर कुछ शिक्षित बंगाली इस का उच्चारण उर्दू व अंग्रेजी से आगत शब्दों में करते हैं। इसी प्रकार बंगला में शब्दारंभ में "व" नहीं है। आगत शब्दों में इसको "ओय़" द्वारा लिखा जाता है और इसका उच्चारण [व] जैसा ही होता है।

(३) यह भी संभव है कि यदि स्रोत भाषा व लक्ष्य भाषा की लिपि एक ही है, तो लक्ष्य भाषा आगत शब्द को स्रोत भाषा के समान ही लिखे और उसका उच्चारण या तो स्रोत भाषा के समान करे या उससे भिन्न। ऐसा भी संभव है कि एक ही समय में दोनों उच्चारण प्रचलन में हों, एक शिक्षितों में और दूसरा शेष लोगों में।

१.७ प्रस्तुत कार्य की आवश्यकता तथा उपयोगिता :

शोध दो प्रकार का होता है—(१) शोध के लिए, (२) किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए। प्रथम को 'सैद्धांतिक' तथा दूसरे को 'अनुप्रयुक्त' की संज्ञा दी जाती है। दोनों का अपना अलग महत्व है। बाह्य रूप से ये दोनों अलग प्रतीत होते हैं, किंतु उनकी सीमा-रेखा खींचना बड़ा मुश्किल है। हो सकता है कि आज कोई शोध कार्य शोध के लिये लगे, परंतु कुछ समय बाद वह ही किसी अनुप्रयुक्त शोध का आधार बन सकता है। इसी प्रकार अनुप्रयुक्त शोध करते समय कुछ नए सिद्धांतों का भी उद्घाटन हो सकता है, और पुराने सिद्धांत गलत सिद्ध हो सकते हैं।

किसी भी शब्द का लिप्यंतरण थोड़े समय बाद रूढ़ हो जाता है। उससे भिन्न लिखना गलत माना जाता है, चाहे भिन्न लिप्यंतरण लक्ष्य भाषा के मूल उच्चारण के कितने ही निकट क्यों न हो। नई लिपि को ग्रहण करते समय व अनुवाद करते समय व्यक्ति-वाचक संज्ञाओं व आगत आदि शब्दों के लिप्यंतरण में थोड़ी सावधानी बरती जाए, तो भावी पीढ़ियों को काफी लाभ हो सकता है।

साधारण लोगों के मन में यह धारणा बन जाती है कि भाषा में उच्चारण लेखन में "शुद्धता" कोई निरपेक्ष्य वस्तु है। परिणामस्वरूप जिन रूपों को वे अशुद्ध समझ बैठते हैं, उनसे भिन्न रूपों को वे अशुद्ध समझते हैं। भाषा में शुद्धता एक सापेक्ष्य वस्तु है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

एक समय या एक क्षेत्र में कोई रूप शुद्ध हो सकता है, पर दूसरे समय या दूसरे क्षेत्र में वही रूप अशुद्ध। इसी प्रकार एक भाषा का शुद्ध रूप दूसरी भाषा में अशुद्ध हो सकता है। उदाहरणार्थ हिंदी में "नागपुर" ठीक है, मराठी में "नागपूर"। कहने का तात्पर्य यह है कि छात्रों को चाहिए कि वे जिस भाषा को सीख रहे हैं, उसमें प्रचलित नियमों व रूढ़ियों का पालन करें। द्वितीय भाषा शिक्षण में शिक्षकों को चाहिए कि वे छात्रों को इस तथ्य से अवगत करा दें। हिंदी भाषी यदि मराठी में अपनी भाषा में प्रचलित वर्तनी के नियमों के प्रभाव से यदि "स्टोर," "फैन" शब्द लिखता है, तो वे अशुद्ध रूप ही माने जाएंगे। इसी प्रकार यदि मराठी भाषी हिंदी में इन शब्दों को अपनी भाषा में प्रचलित वर्तनी के प्रभाव से "स्टोअर", "फॅन" आदि लिखता है तो वे अशुद्ध हैं।

इन्हीं सब तथ्यों को प्रकाश में लाने के लिए इस पुस्तक को लिखा गया है।

१.८ प्रस्तुत पुस्तक में लिपियों का चयन :

जैसा कि प्राक्कथन में कहा गया है कि अमुक कार्य वृहत कार्य का एक अंग है। फिर भी इस बात का प्रयत्न किया गया है कि तीनों प्रकार की लिपियों-समान लिपि, भिन्न, किंतु समान स्रोत लिपि तथा भिन्न लिपि-का प्रतिनिधित्व हो सके। इसलिए प्रथम के लिए हिंदी व मराठी को लिया गया है। दूसरी के अंतर्गत हिंदी के साथ गुजराती व बंगला को लिया गया है। तीसरी के अंतर्गत उर्दू व अंग्रेजी को लिया गया है।

जब बात लिप्यंतरण की होती है तो लिपियों का जिक्र करना अधिक वैज्ञानिक जान पड़ता है, न कि भाषाका। पर जैसा कि पूर्व में बताया जा चुका है कि यदि दो भाषाएं एक ही लिपि का प्रयोग करती हैं, तो भी उनके स्वनात्मक मूल्य आदि में बड़ा अंतर रहता है। हिंदी व मराठी का उदाहरण दिया जा चुका है। रोमन लिपि में लिखी जाने वाली इंदोनेशीय भाषा का वर्णविन्यास डच भाषा की पद्धति के अनुसार है। इसमें oe = उ, ऊ; j = य्; tj = च्; dj = ज्; sj = श; nj = ञ्।[1] भारतीय यदि रोमन में लिप्यंतरण करेंगे, तो इन्ही स्वनों के लिए अन्य वर्णों का प्रयोग करेंगे। इस दृष्टि से रोमन के स्थान पर अंग्रेजी-रोमन लिपि कहना अधिक उचित होगा। अतः इस पुस्तक में लिप्यंतरण के संदर्भ में भी मराठी, गुजराती, बंगला, उर्दू, अंग्रेजी का प्रयोग किया गया है, देवनागरी, अरबी-फारसी, रोमन आदि का नहीं।

१.९ भिन्न लिपियों में लिप्यंतरण : चीनी, तिब्बती व जापानी के संदर्भ में :

किसी अन्य भाषा के शब्दों के चीनी में लिप्यंतरण के संदर्भ में कुछ कहे बिना मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि लिप्यंतरण की चर्चा अधूरी ही रह जाएगी। चूंकि मैं चीनी नहीं जानता, अतः इसके विषय में अधिक कहना मेरे लिए संभव नहीं है। फिर भी इसके संबंध में निम्न तथ्य विचारणीय हैं।

चीनी एक समृद्ध भाषा है। पर चीनी में दूसरी भाषाओं के शब्दों को लिखना बहुत ही कठिन है। इसके दो कारण हैं। प्रथम, लिप्यंतरण में या तो वर्ण को आधार

---

१. देखिए J. Gonda : "Sanskrit in Indonesia", नागपुर, १९५२। डॉ. चाटुर्ज्या की पुस्तक "भारतीय आर्य भाषा और हिंदी," से उद्धृत।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

माना जाता है या स्वन को। चीनी की लिपि भावव्यंजक चित्र लिपि है। अतः स्रोत भाषा की लिपि के प्रत्येक वर्ण का चीनी में संवादी वर्ण लिखना संभव नहीं है। दूसरे, चीनी के अधिकतर वर्ण किसी रूपिम द्योतक हैं नकि स्वन के। अतः स्रोत भाषा के प्रत्येक स्वन के लिए चीनी में वर्ण मिलना संभव नहीं है। इसलिए चीनी ने दूसरी भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करने के लिए अपनी मूल पद्धति का प्रयोग किया। चीनी, तिब्बती व जापानी ने संस्कृत के शब्दों को किस प्रकार ग्रहण किया, इस संबंधी में "भारतीय आर्य भाषा और हिंदी" से उदाहरण दिए जा रहे हैं।

ईसा सं. ६० के लगभग तत्कालीन चीन के सम्राट के बुलाने पर भारतीय भिक्षु काश्यप मातंग (Kia-yeh Motang) और फालान (Fa-lan) (? धर्मरत्न) चीन में बौद्ध धर्म का उपदेश देन के लिए गए। महायान शाखा के संस्कृत ग्रंथों का शीघ्र ही चीनी में अनुवाद होने लगा। इस विषय में चीन ने संस्कृत नामों व शब्दों को चीनी में अनूदित करने की अपनी मूल पद्धति का प्रयोग किया, अन्यथा चीनी लोगों के लिए अपनी भावव्यंजक चित्र-लिपि में सम्मिश्रित, दुरूह तथा उनके कानों को वर्बर सी प्रतीत होने वाली विदेशी ध्वनियां व्यक्त करना कठिन था। कुछ संस्कृत शब्द भी चीनी में उनके पंद्रह सौ वर्ष पहले प्रचलित उच्चारण के साथ अपना लिए गए, परंतु आधुनिक चीनी प्रादेशिक भाषाओं में यह प्राचीन चीनी उच्चारण इतना अधिक बदल गया है कि मूल शब्द का चालू ध्वनि रूप पहचाना ही नहीं जा सकता।

कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :—

संस्कृत शब्द	प्राचीन चीनी उच्चारण	आधुनिक चीनी बोलियों में उसके विभिन्न उच्चारण
बुद्ध	? भ्य्वद् या भ्य्वत्	फ्वात्, फ़्वात्, फ़ात्, फ़ो, फ़ू।
काश्यप	? का-ज्यप्	का-येप्, का-येह्, किआ-येह तथा चिआ-येह

अनुवाद :

तिब्बती की भांति (शायद तिब्बती में यह सूझ चीनी से ही आई) चीनी में संस्कृत व्यक्तिवाचक नामों के भी अनुवाद प्रचलित हैं, यथा—

तत्सम नाम	चीनी	अर्थ
तथागत	झू-लाइ	उस ओर गया
अश्वघोष	मा-हेंग्	घोड़े की हिनहिनाहट वाला
धर्म सिंह	फा-शिह	धर्म का सिंह
धृतराष्ट्र	दी-क्वो	राज पकड़ने वाला

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

आधुनिक युग में भी नामों का ऐसा अनुवाद होता है :—

तत्सम नाम	चीनी	अर्थ
रवीन्द्र	चँन्-तान्	वज्र अर्थात इंद्र ओर सर्योदय
सुनीति	शान्ताओ	
सुमन	शान्-य़ी, आदि	

तिव्वती चीनी की तरह, एक स्वतः पूर्ण भापा है। अतएव उसमें संस्कृत शब्दों के तिव्वती प्रतिशब्द अपने उपादानों से वना लेने की प्रवृत्ति रही है। व्यक्तिवाचक नामों का भी तिव्वती में अनुवाद कर लिया गया, यथा—

संस्कृत शब्द	तिव्वती में अनुवाद	आधुनिक उच्चारण
बुद्ध	सड्.स-र्ग्यस्	सेड्.-जे
अमिताभ	होद्-द्पाग-भेद्	यो-प्या-मे
तारा	स्ग्रोल्-म	डोल्-मा
अवलोकितेश्वर	स्प्यान्-रस्	चेन्-रे-सी
या लोकेश्वर	ग्ज़िग्स्	

चीनी की अपेक्षा जापानी में संस्कृत का प्रभाव उसके अपनाए हुए वौद्ध संस्कृत शब्दों के रूपों में विशेष दृष्टिगोचर होता है। साधरणतया जापानी लोग संस्कृत नामों, शब्दों तथा पदों के चीनी अनुवाद का जापानी उच्चारण व्यवहार में लाते हैं, यथा—

संस्कृत शब्द	आधुनिक चीनी	जापानी उच्चारण	जापानी लेखनानुसार
धर्म	ता-मो	दरुम	
वुद्ध	फ़ो-फ़त्	वुत्सु	वुतु
ब्रह्मा	फ़न्	बोन्	

परंतु इनके अतिरिक्त जापानी व चीनी दोनों लिपियों में लिखे हुए कुछ मूल संस्कृत शब्द भी जापानी में पाए जाते हैं, यथा—

विनायक	विनयक
वसिष्ठ	वशि
यम	एम/येम[1] आदि

१. १० देवनागरी लिपी, हिंदी वर्तनी तथा कुछ वर्णों के स्वनात्मक मूल्य :

१. १०. १ देवनागरी लिपि :

ब्राह्मी का वास्तविक राष्ट्रीय स्वरूप देवनागरी के रूप में अवतरित हुआ है, जो

१. "भारतीय आर्य भापा और हिंदी", पृ. ९३।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

इस समय हिमालय से लेकर महाराष्ट्र तक, विहार से लेकर राजस्थान में प्रचलित विभिन्न भारतीय भाषाओं-संस्कृत, हिंदी, मराठी, नेपाली-तथा बोलियों का मुख्य वाहक है। प्राचीन काल में ब्राह्मी इस देश की प्रमुख लिपि थी और आज यह प्रतिष्ठा देवनागरी को प्राप्त है। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार "सातवी शताव्दी" में नागरी का प्राचीनतम रूप स्पष्ट प्रकट हो गया था और आठवीं शताव्दी से आगे देवनागरी लिपि का पूर्ण विकास हो गया। आठवीं से दसवी शताव्दी तक नागरी अपनी परिपक्वावस्था में पहुंच गई थी और ग्याहरवीं शती के प्रारंभ में गुजरात, राजस्थान और दक्षिण भारत के उत्तरी भाग में अनेक शिलालेख और ताड़ पत्रोंपर लिखी पांडुलिपियां मिली हैं जो इसी में हैं। यह लिपि सर्व प्रथम आठवी शताव्दी में दक्षिण में ही विकसित हुई और तदंतर दसवीं शताव्दी में उत्तर में। चालुक्य यादव और विजयनगर के तीन राजकुलों ने भी अनेक शिलालेखों में इसी लिपि का विस्तार से प्रयोग किया है और दक्षिण में संस्कृत हस्तलिखित ग्रंथों के लिए अब भी इसका प्रयोग होता है। देवनागरी इस लिपि का उत्तर भारतीय रूप है। दक्षिण में इसे नंदिनागरी कहते हैं।

संप्रति देवनागरी में कुछ वर्णों के रूपों में भिन्नता पाई जाती है, यथा— अ–अ, ण–ण, झ–झ आदि। भारत सरकार के हिंदी निदेशालय के द्वारा दूसरे रूपों को ही मानक माना गया है।

१.१०.२ हिंदी वर्तनी :

हिंदी एक जीवित तथा विकासशील भाषा है। दूसरे, यह एक विशाल क्षेत्र में बोली व लिखी जाती है। अतः वर्तनी में अनेकरूपता होना कोई अस्वाभाविक बात नहीं है। फिर भी हम सब लोगों का यह प्रयत्न होना चाहिए कि वर्तनी में एकरूपता रहे। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकारने १९६१ में हिंदी वर्तनी की मानक पद्धत्ति निर्धारित करने के लिए एक विशेषज्ञ समिति नियुक्त की। उसकी अधिकतर सिफारिशें लेखक को मान्य हैं। यहां एक सिफारिश का उल्लेख किया जा रहा है। वर्गीय नासिक्य व्यंजन के लिए अनुस्वार का प्रयोग किया जाए, यथा—गंगा, चंचल, अंडा, दंत, संपादक आदि।

समिति की एक अन्य सिफारिश इस प्रकार है। संस्कृत मूलक तत्सम शव्दों की वर्तनी में सामान्यतः संस्कृत रूप ही रखा जाए। परंतु जिन शव्दों कें प्रयोग में हिंदी में हलंत चिह्न लुप्त हो चुका है, उन में उसको फिर से लगाने का प्रयत्न न किया जाए, जैसे 'महान, विद्वान' आदि में। मुझे यह सिफारिश बड़ी अस्पष्ट लगी। यह कैसे निश्चित किया जाए कि अमुक-अमुक शव्दों में हलंत चिह्न लुप्त हो चुका है। इसका आधार तो लिखने वाले के संस्कृत ज्ञान की मात्रा पर निर्भर है। कुछ लोगों के अनुसार तो "महान" में भी हलंत का प्रयोग अभी लुप्त नहीं हुआ है, क्योंकि वे स्वयं इस चिह्न को लगाते हैं। इस प्रकार यह नियम वस्तुनिष्ठ न हो कर व्यक्तिनिष्ठ है। मेरा मत है कि हिंदी को एक स्वतंत्र भाषा के रूप में ही विकसित होने दिया जाना चाहिए। हिंदी संस्कृत की पुत्री भले ही हो, किंतु उसे उसकी अनुचरी नहीं वनाना चाहिए। हिंदी में शव्दांत में कुछ अपवादों (यथा—संयुक्त व्यंजन) को छोड़ कर "अ" उच्चरित नहीं होता है, यद्यपि यह

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

लिखा जाता है, यथा—राम, टाल आदि। अतः तत्सम शब्दों में भी अंत में हलंत न लगाया जाए, तो एकरूपता व वस्तुनिष्ठता की दृष्टि से अधिक श्रेयस्कर है। दूसरे, जब कोई भाषा का प्रयोग करता है या सीखता है, तो वह इस बात का ध्यान नहीं रखता कि अमुक शब्द तत्सम है या तद्भव या विदेशी। अतः वर्तनी के मामले में तत्सम आदि का अंतर करना उचित नहीं है। अतः सरलता, एकरूपता तथा वस्तुनिष्ठता की दृष्टि से शब्दांत में हलंत का चक्कर यदि समाप्त कर दिया जाए तो अच्छा है। वैसे थोड़े दिनों बाद यह समाप्त तो होने ही वाला है, क्योंकि बहुसंख्यक हिंदी भाषी संस्कृत से अनिभिज्ञ ही हैं और वे अज्ञानतावश हलंत का प्रयोग वैसे ही नहीं करते। दूसरे, "हलंत" के विरुद्ध एक तर्क यह भी दिया जा सकता है कि हिंदी ने बहुत से विदेशी (मुख्यतः अंग्रेजी) शब्दों को अपना लिया है, यथा—ट्रेन, सेट, रोड, आदि। अब प्रश्न यह उठता है कि अंग्रेजी के इन शब्दों में हलंत क्यों न लगाया जाए। इसलिये मेरा विचार है कि हिंदी को हिंदी के ही समान विकसित होने दिया जाए। इसको तत्समीकरण या विदेशीकरण की प्रवृत्ति से बचाया जाए। यही हिंदी के अधिक हित में है।

१.१०.२ कुछ वर्णों के स्वनात्मक मूल्य :

हिंदी में कुछ वर्णों के स्वनात्मक मूल्य के विषय में काफी भ्रम है। यह भ्रम न केवल साधारण जन, वरन कुछ विद्वानों में भी व्याप्त है। अतः इस के विषय में कुछ शब्द कहना अनिवार्य प्रतीत होता है। ये वर्ण निम्नांकित हैं :—

ऐ :—यह वर्ण संस्कृत में संध्यक्षर रूप में प्रयुक्त होता है। हिंदी में अधिकांश शब्दों में इस का स्वनात्मक मूल्य "अर्ध विवृत अग्र स्वर" है, यथा—गैर, बैर, सैर, बैल, आदि। किंतु कुछ शब्दों में यह संध्यक्षर रूप में भी प्रयुक्त होता है, यथा-गैया, भैया आदि। किंतु इन रूपों के साथ इनके वैकल्पिक रूप भी मिलते हैं, यथा—गइया, भइया / भय्या। इनके अतिरिक्त हिंदी में प्रयुक्त कुछ तत्सम शब्दों में इसका उच्चारण "अऍ" भी सुनाई देता है, यथा—वैज्ञानिक में।

ए :—यह वर्ण हिंदी में अर्धसंवृत अग्र स्वर है। अंग्रेजी से आगत शब्दों में अर्ध संवृत तथा अर्ध विवृत दोनों स्वर हैं। अतः ऐसे शब्दों को लिखते समय वर्ण "ऐ" व "ए" का प्रयोग किया जाता है, यथा — बैग, सेट, आदि।

हिंदी की कुछ बोलियों में अर्ध-विवृत अग्र स्वर है भी नहीं। दूसरे, कुछ संस्कृत के विद्वान "ऐ" वर्ण को हिंदी में भी संध्यक्षर का प्रतीक समझते हैं। इस भ्रम के कारण ऐसे लोग "ए" और "ऐ" में ठीक से अंतर नहीं कर पाते। अतः एक के स्थान पर दूसरे को लिख देते हैं, यथा—

शुद्ध रूप (अंग्रेजी उच्चारण के निकट)	अशुद्ध, पर प्रचलन में
सेट, बेंच	सैट, बैंच आदि

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

'वैंच' रूप लेखक को १८ दिसंवर, १९७७ के धर्मयुग, पृष्ठ २७ में देखने को मिला। इसी पत्रिका के १८ दिसंबर, १९७७ के अंक में "बच्चन जी", पृ. १४ पर वेकुअमी (स्थिति) लिखते हैं और पृष्ठ ३१ पर श्री. के. पी. सक्सेना वैक्यूम (सुई) लिखते हैं। धर्मयुग के २६ जून, १९७७ के अंक में प्रकाशित, अन्नपूर्णा की कहानी "एक सन्नाटा भीतर भी" में "सैशन", "सैटिंग", "सवलैट" रूप देखने को मिले, जहां "ए" के स्थान पर अज्ञानतावश "ऐ" का प्रयोग किया गया है। इसके विपरीत 'ऐ' के स्थान पर 'ए' का प्रयोग भी देखा जा सकता है, यथा—"वैडमिंटन" के लिए "वेडमिंटन"। वैसे हिंदी के अपने शव्दो में भी "ए" और "ऐ" के मुक्त परिवर्तन के उदाहरण मिलते हैं, यथा—बेंत~बैंत।

मराठी में अर्ध विवृत अग्र स्वर के लिए 'अॅ' वर्ण वना लिया गया है। हिंदी में न तो इसकी आवश्यकता है और न ही इसका प्रचलन। किंतु महाराष्ट्र में प्रकाशित कुछ हिंदी पुस्तकों में अज्ञानता के कारण 'अॅ' वर्ण का प्रयोग देखा जा सकता है।

औ :—संस्कृत में "औ" संध्यक्षर है। हिंदी में यह अधिकतर शव्दों में मूलस्वर है, जो दीर्घ अर्ध विवृत्त, पश्च गोलित है। 'और, गौर, आदि शव्दों में इस स्वर का प्रयोग होता है। 'व' के पूर्व यह वर्ण संध्यक्षर [अइ] रूपमें उच्चारित होता है, यथा—कौवा, हौवा, आदि। इनके अतिरिक्त कुछ शव्दों में (यथा— भौतिक आदि में) इसका उच्चारण "अओ" हो जाता है।

"ऑ" तथा इसके प्रतिस्थापन :

अंग्रेजी के अर्ध विवृत पश्च स्वरों—ह्रस्व व दीर्घ ऑ [ɔ, ɔ :]— के लिए संप्रति हिंदी "ऑ" वर्ण का प्रयोग करती है। फिर भी इसका प्रचलन सीमित है। कुछ क्षेत्रों (विशेषत: उत्तर प्रदेश) में इसके स्थान पर "आ" वर्ण ही अधिक प्रचलित है, यथा— "कालेज", 'डाक्टर' आदि। कुछ लोग 'ऑ' के स्थान पर 'ओ' वर्ण का प्रयोग करते हैं। उदाहरणार्थ 'short (hand)' के लिए हिंदी भाषी प्राय: 'शार्ट' लिखते हैं। फिर भी इसके स्थान पर 'शॉर्ट' भी देखने को मिलता है (डॉ. चाटुर्ज्या की पुस्तक "भारतीय आर्य भाषा और हिंदी" में)। "ऑ" के स्थान पर "ओ" भी देखने को मिल जाता है, यथा—"स्टैन्डर्ड", "नैशनल", "ऑटोरिक्शा" के स्थान पर "स्टेन्डर्ड", "नेशनल" (देहली से प्रकाशित दैनिक "हिंदुस्तान"), ओटोरिक्शा (इंदोर से प्रकाशित दैनिक "नई दुनिया") आदि।

अंग्रेजी के घोष दंतोष्ठ्य संघर्षी स्वन (v) के लिए हिन्दी में "व" लिखा जाता है, और मराठी में "व्ह"। फिर भी कुछ हिंदी क्षेत्रों में इसका प्रतिस्थापन कुछ भिन्न है। मध्य प्रदेश में हिंदी में मराठी प्रभाव के कारण "व्ह" तथा पूर्वी बिहार में बंगला के प्रभाव के कारण "भ" देखने को मिल जाता है।

हिंदी के अपने शव्दों में "न्ट", "न्ड" तथा "न्श" व 'न्स' रूप देखने को नहीं मिलते। किंतु आगत शव्दों में ये देखने को मिलते है, यथा —'पेन्ट, स्टेन्ड, इन्श्योरेन्स व इन्सपेक्टर' आदि। कुछ लोग प्रथम दो को 'पेण्ट, स्टेण्ड' भी लिखते हैं। मेरे विचार से इन सभी स्थानों पर अनुस्वार लिखना अधिक श्रेयस्कर होगा, यथा—'पेंट, स्टैंड, इंश्योरेंस, इंस्पेक्टर' आदि।

प्रस्तुत पुस्तक में वर्तनी संवंधी उपर्युक्त वर्णित नियमों का पालन किया गया है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

द्वितीय अध्याय

हिंदी : मराठी

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

२. हिंदी तथा मराठी

मराठी महाराष्ट्र राज्य में बोली जाती है और यह इस राज्य की राजभाषा भी है। १९६१ की जनगणना के अनुसार ३,३२,८६,७७१ लोग मराठी बोलते हैं। महाराष्ट्र के अतिरिक्त अन्य राज्यों में भी मराठी भाषियों की संख्या काफी है। ये राज्य हैं :— मध्य प्रदेश (इंदौर, ग्वालियर आदि), गुजरात (वडोदरा आदि), तमिलनाडू (तंजावूर), कर्नाटक (बेलगांव, कारवार)। इन सब को मिला कर "बृहन्महाराष्ट्र" कहते हैं। इस शीर्षक के अंतर्गत विदेशों में रहने वाले मराठी भाषी भी आ जाते हैं।

मराठी महाराष्ट्रीय प्राकृत से अपभ्रंश के पर्व (stage) को पार करती हुई आधुनिक भाषा के रूप में विकसित हुई है। मराठी का सब से प्राचीन लेख १०१२ ई. का लिखा हुआ माना जाता है (शिलाहार केशवदेव प्रथम का अक्षी पाषाण लेख)। १२ वीं शताब्दी के अंत तक यह भाषा प्रौढ़ हो चुकी थी। मराठी का सब से प्राचीन दस्तावेज (document) मुकुंदराज का "विवेक सिंधु" है, जो ११८८ ई. का माना जाता है। इस के बाद "महानुभाव" लेखकों की रचनाएं प्राप्त होती हैं। १२९० ई. में संत ज्ञानेश्वर ने भगवद्गीता पर टीका लिखी, जो "ज्ञानेश्वरी" के नाम से प्रसिद्ध है।

मुसलिम काल में मराठी पर फारसी का बहुत प्रभाव पड़ा, विशेषतया मराठी शब्दावली पर। मराठी राज्य के संस्थापक शिवाजी महाराज ने मराठी को राजभाषा बनाया और इस के शुद्धिकरण की ओर काफी प्रयत्न किया। अंग्रेजी काल में मराठी को अंग्रेजी भाषा व साहित्य ने प्रभावित किया।

आधुनिक मराठी के दो रूप हैं—(१) साहित्यिक मानक मराठी, (२) बोलचाल की मानक मराठी। प्रथम का प्रयोग साहित्य लेखन तथा कार्यालयीन कामकाज में होता है। द्वितीय का प्रयोग दिन-प्रति-दिन के वार्तालाप तथा भाषणों में किया जाता है।

मानक मराठी के अतिरिक्त मराठी के कुछ अन्य बोली-रूप भी हैं। जलगांव और धुले (=धुळे) जिलों में "अहिराणी", विदर्भ में "वऱ्हाडी" तथा "नागपुरी", और रत्नागिरि में "चित्पावनी" तथा "कुडाली" बोलियां बोली जाती हैं। कोंकण, देश और मराठवाडा में मराठी का मानक (मौखिक) रूप ही थोड़े-बहुत अंतर के साथ प्रयुक्त होता है। जन-जातियों द्वारा बोली जाने वाली कुछ बोलियां, जैसे "काथोडी," "वारली" या "गोवारी" मराठी से इतनी अधिक प्रभावित हैं कि इन को मराठी की ही बोलियां माना जा सकता है।

हिंदी तथा मराठी दोनों ही समृद्ध आर्य भाषाएं हैं और दोनोंही देवनागरी में लिखी जाती हैं। चूंकि दोनों की लिपि एक है, अतः संपूर्ण लिप्यंतरण में कोई समस्या नहीं है। इस लिए इस अध्याय में केवल व्यक्तिवाचक संज्ञाओं व आगत शब्दों के लिप्यंतरण पर व्यतिरेकी दृष्टि से विचार किया जाएगा।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

२.१ हिंदी व मराठी दोनों की लिपि देवनागरी है, फिर भी निम्न अंतर द्रष्टव्य हैं :—

१. हिंदी के वर्ण "ड़" और "ढ़" मराठी में नहीं हैं। हिंदी में ये स्वतंत्र स्वनिम भी हैं। ये उत्क्षिप्त स्वन हैं। मराठी में ये क्रमशः /ड/व/ढ/ के उपस्वन के रूप में उच्चारित होते हैं, पर लेखन में ये "ड" व "ढ" ही लिखे जाते हैं।

२. हिंदी में 'क़, ख़, ग़, ज़, फ़' वर्णों का भी प्रयोग होता है। यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि इनका प्रयोग वैकल्पिक है। कुछ लोग और पत्रिकाएं इनका प्रयोग करती हैं और कुछ नहीं। किंतु मराठी में इनका प्रयोग बिल्कुल नहीं होता। हिंदी में भी इन वर्णों का प्रयोग केवल अरबी-फारसी से आगत शब्दों के लिए होता हैं। अंतिम दो का प्रयोग अंग्रेजी से आगत शब्दों के लिए होता है।

३. हिंदी तथा मराठी दोनों में अंग्रेजी से आगत शब्दों में 'ऑ' वर्ण का प्रयोग चल पड़ा है। फिर भी हिंदी की अपेक्षा मराठी में इसका प्रयोग अधिक होता है। बहुत से हिंदी भाषी व पत्रिकाएं भी इस वर्ण का प्रयोग नहीं करती हैं।

४. मराठी में अंग्रेजी से आगत शब्दों में "अॅ" वर्ण का प्रयोग होता है। यह अर्ध-विवृत अग्र स्वर है। हिंदी में इसी स्वन के लिए "ऍ" वर्ण का प्रयोग होता है। महाराष्ट्र में प्रकाशित कुछ हिंदी पुस्तकों में इस वर्ण का प्रयोग देखा जा सकता है।

५. मराठी में "र" वर्ण का एक उपवर्ण " ‿ ", जो "य" और "ह" के पूर्व आता है, हिंदी में प्रयुक्त नहीं होता।

६. मराठी का "ळ" वर्ण, जो मूर्धन्य पार्शिक स्वन के लिए प्रयुक्त होता है, हिंदी में नहीं होता।

इनके अतिरिक्त कुछ वर्णों के स्वनात्मक मूल्य दोनों भाषाओं में भिन्न हैं, यथा :—

स्वनात्मक मूल्य

वर्ण	हिंदी	मराठी
ऋ	रि	रु
	र+संवृत मध्य स्वर भी[1]	र+संवृत मध्य स्वर भी[1]
ऐ	१. अर्धविवृत अग्र स्वर	१. संध्यक्षर [अइ]
	२. "य" के पूर्व [अइ]	
	३. कुछ शब्दों में [अऍ] भी	
औ	१. अर्ध विवृत पश्च स्वर	१. संध्यक्षर [अउ]
	२. "व" के पूर्व [अउ]	
	३. कुछ शब्दों में [अऑ] भी	
अॅ	अ+अनुनासिकता	अर्ध विवृत अग्रस्वर+अनुनासिक्य व्यंजन यथा—बॅंक=[बैङक्]

१. डॉ. अशोक रामचंद्र केळकर के अनुसार मानक हिंदी व मानक मराठी में यह स्वर संवृत मध्य है। हिंदी के लिए डॉ. रमेश चंद्र महरोत्रा का भी यही मत है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

वर्ण	हिंदी	मराठी
आँ	आ+अनुनासिकता	ऑ+अनुनासिक्य व्यंजन यथा—वाँड=[वॉण्ड]
अनुस्वार	१. वर्गीय नासिक्य व्यंजन के लिए, यथा— पंखा=[पङ्खा] चंचल=[चञ्चल] दंड=[दण्ड] सुंदर=[सुन्दर] संभाषण=[सम्भाषण]	१. हिंदी के समान
	२. "य" से पूर्व ['अइँ'] के लिए, यथा—संयम=(सइँयम)	२. हिंदी के समान
	३. "व" के पूर्व दंतोष्ठीय अनुनासिक्य, यथा—संवाद=[सम्वाद]	३. "र, ल, व, श, ह," के पूर्व अं=[अइँ] तथा इं=[इउँ] यथा— सिंह= [सिउँव्ह]
	४. "र, ल, स," के पूर्व 'न', यथा— संरक्षण=[सन्रक्शण] संलाप=[सन्लाप] संसद=[सन्सद], आदि	४. शब्दांत में इस का उच्चारण दीर्घ अकारांत ('आ' नहीं) होता है। मराठी में ऐसे शब्दों को एकारांत भी लिखा जाता है, यथा—केळं ~ केळे, आदि
	५. "श" के पूर्व यह तालव्य अनुनासिक्य व्यंजन की भांति उच्चरित होता है। फिर भी सूक्ष्म दृष्टि से यह "ञ" से भिन्न है।	
	६. "ह" के पूर्व [ङ] के लिए, यथा—संहार=[सङ्हार] / [सङ्घार]	
	७. शिरोरेखा के ऊपर मात्रा लगने वाले स्वरों के बाद अनुनासिकता के लिए, यथा—नहीं=[नहीँ], आदि	

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

वर्ण	हिंदी	मराठी
च, ज, झ	तालव्य स्पर्श-संघर्षी	१. तालव्य स्पर्श-संघर्षी २. दंत्य स्पर्श-संघर्षी
क्ष	क्श कुछ हिंदी भाषी इस का उच्चारण शब्दारंभ में "छ" व अन्यत्र "क्छ" करते हैं।	क्श
ज्ञ	१. [ग्य] शब्दारंभ में २. [ग्ग्य] अन्यत्र	द्न्य

समान वर्णों के भिन्न उच्चारण होने के कारण कुछ नाम दोनों भाषाओं में समान रूपी होते हुए भी भिन्न उच्चरित होते हैं, यथा--- कृष्ण, ऋषिकेश, शैलेष, ओरंगाबाद, हंसापुरी, हरिवंश, सिंह, चोरपुरा, झुंझनू, ज्ञानेश्वर, यज्ञदत्त आदि। ऐसे शब्दों में लिप्यंतरण की समस्या नहीं है। अतः इनका वर्णन यहां नहीं किया जा रहा है।

२.२ व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का लिप्यंतरण :

दोनों भाषाओं में व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के लिप्यंतरण में अंतर को निम्न बिंदुओं के अंतर्गत रख कर देखा जा सकता है :---

१. कुछ अपवादो को छोड़कर मराठी शब्दों में अंतिम अक्षर का स्वर सदैव दीर्घ रहता है। हिंदी में यह स्वर दीर्घ भी हो सकता है और ऱ्हस्व भी। इस कारण बहुत से नाम दोनों भाषाओं में भिन्न लिखे जाते हैं, यथा---

हिंदी	मराठी
रवि, शांति, नागपुर, माथुर	रवी, शांती, नागपूर, माथूर, आदि

२. कुछ शब्दों को छोड़कर मराठी में उपांत्य अक्षर का स्वर ऱ्हस्व रहता है। हिंदी में यह दीर्घ भी हो सकता है। इस कारण कुछ नाम दोनों भाषाओं में भिन्न लिखे जाते हैं, यथा---

हीरा, मीरा, कस्तूरी, सूरज	हिरा, मिरा, कस्तुरी, सुरज, आदि

३. मराठी में अग्र स्वर के पूर्व का ऊष्म स्वन तालव्य हो जाता है, यथा---

इटारसी, झाँसी, नासिक	इटारशी, झांशी, नाशिक
घासीराम, तुलसी, सिकंदर	घाशीराम, तुळशी, शिकंदर
पारसी, सिख (धर्म)	पारशी, शीख (धर्म), आदि

४. हिंदी के "अऊ" वर्णों वाले कुछ नाम मराठी में "औ" द्वारा लिखे जाते हैं, यथा---

लखनऊ, सऊदी अरब	लखनौ, सौदी अरेबिया, आदि

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

५. हिंदी वर्तनी में दो महाप्राण स्पर्शों का संयोग नहीं होता, जबकि मराठी में संभव हैं। इस कारण निम्नांकित अंतर देखने को मिलते हैं, यथा—

मक्खनलाल, विट्ठलभाई	मख्खन लाल, विठ्ठल भाई, आदि

६. मराठी के कुछ एकारांत "सरनेम" या "पदवी नाम" हिंदी में अकारांत हो जाते हैं, यथा—

पेशवा, सिंधिया	पेशवे, शिंदे, आदि

७. जिन नामों में हिंदी में "ड़" और "ढ़" वर्ण हैं, वहां मराठी में "ड" व "ढ" वर्ण लिखे जाते हैं, यथा—

पचमढ़ी, वड़ागांव, रणछोड़	पंचमढी, वडागाव, रणछोड, आदि

हिंदी के "गढ" में अंत होने वाले स्थान-नाम मराठी में 'गड' में अंत होते हैं, यथा—

प्रतापगढ़, राजगढ़	प्रतापगड, राजगड, आदि

८. 'गाँव' में अंत होने वाले नाम मराठी में "गाव" द्वारा लिखे जाते हैं, यथा—

चालीसगाँव, नौगाँव	चाळीसगाव, नौंगाव, आदि

९. मराठी के जिन नामों में "ळ" का प्रयोग होता है, हिंदी में उसके स्थान पर "ल" लिखा जाता है। हिंदी व अन्य भाषाओं के कुछ नामों में जहां "ल" है, मराठी "ळ" वर्ण का प्रयोग करती है। उदाहरणार्थ—

जलगांव, भुसावल, भोपाल	जळगाव, भुसावळ, भोपाळ
रावलपिंडी, मालवा, पटियाला	रावळपिंडी, माळवा, पतियाळा
काले, दयाल, कमला	काळे (एक मराठी सरनेम), दयाळ, कमळा, आदि

१०. कुछ नामों के लेखन में हिंदी वर्ण "र" का प्रयोग करती है, जब कि मराठी "र" के किसी अन्य उपवर्ण का, यथा—

आगरा, छतरपुर, सीकरी	आग्रा, छत्रपुर, सिक्री
धींगरा, बिरला	धिंग्रा, बिर्ला, आदि

११. कुछ नामों में जहाँ हिंदी में "न", "ट", "ड" तथा "औ" प्रयुक्त होते हैं, वहां मराठी में क्रमशः "ण", "त", "द", "ओ" प्रयुक्त होते है, यथा—

अफ़ग़ानिस्तान, ईरान, चंडीगढ़	अफगाणिस्तान, इराण, चंदीगड
जौनपुर, धौलपुर, पटना	जोनपूर, धोलपूर, पाटणा
भूटान, सूडान	भूतान, सुदान
दीवान, राठौर (दोनों हिंदी सरनेम)	दिवाण, राठोड, आदि

१२. कुछ नाम मराठी में अंग्रेजी रूपों के उच्चारण के अधिक निकट है; जबकि हिंदी में इनके लिए अन्य रूप प्रचलित हैं, यथा—

मिश्र, प्रशांत महासागर, लंदन	इजिप्त, पॅसिफिक महासागर, लंडन, आदि

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

१३. हिंदी में जिन नामों में "सिंह" रहता है, मराठी में इनके स्थान पर "सिंग" लिखा जाता है, यथा—

भगतसिंह, स्वर्णसिंह भगतसिंग, स्वर्णसिंग, आदि

टिप्पणी :— पंजाबी में "सिंग" ही लिखा जाता है।

१४. कुछ तत्सम नामों में किसी एक भाषा में भिन्न रूप का विकास हो गया है, यथा—

संस्कृत	हिंदी	मराठी
कैलास, वसंत, वसिष्ठ	कैलाश, वसंत, वशिष्ठ	कैलास, वसंत, वसिष्ठ
इंद्राणी, ऊर्मिला, उर्वशी	इंद्राणी, उर्मिला, उर्वशी	इंद्रायणी, ऊर्मिला, ऊर्वशी
श्यामला, श्याम, आदि	श्यामला, श्याम, आदि	शामला, शाम, आदि

१५. हिंदी में "वंसीलाल" लिखा जाता है, जवकि मराठी में "वन्सीलाल"। इसका कारण यह है कि मराठी में यदि "स" के पूर्व अनुस्वार लिखा जाए, तो उच्चारण भिन्न होगा। इसी प्रकार मराठी क्षेत्र में प्रचलित सरनेम "रानडे" व "कानडे" में "न" "अ" के साथ उच्चरित होता है। हिंदी में "रानाडे" व "कानाडे" लिखा जाता है।

१६. स्वतंत्रता से पूर्व शिक्षित वर्ग में अंग्रेजी सभी प्रांतों में संपर्क भाषा थी। अतः दूसरे प्रांतो में प्रचलित नाम अंग्रेजी (रोमन लिपि में लिखित) के माध्यम से प्राप्त होते थे। इस कारण दूसरे प्रांतों के नाम गलत ढंग से लिखे जाने लगे। वाद में येही नाम रूढ़ हो गए। स्वतंत्रता के वाद कुछ रूपों में अंतर हुआ है। ऐसे नामों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :—

हिंदी	मराठी
अजंता, इलाहावाद, एलोरा, काठमांडू	अजिंठा, अलाहाबाद, वेरूळ, खाटमांडू~काटमांडू
ढाका, थाना, देहरादून, धूलिया	डाक्का, ठाणे, डेहराडून, धुळे
पंजिम, पूना, वंवई	पणजी, पुणे, मुंवई
वरार, मुग़लसराय, मेरठ	वऱ्हाड, मोगलसराई, मीरत
लद्दाख, शिमला, सतारा	लडाख, सिमला, सातारा
चटर्जी, टैगोर, बनर्जी	चॅटर्जी, टागोर, बॅनर्जी ~ वानर्जी
वाल गंगाधर तिलक, मुहम्मद, आदि	बाळ गंगाधर टिळक, महंमद, आदि

टिप्पणी :

वंगला में शुद्धरूप "चट्टोपाध्याय", "ठाकुर" तथा "वंधोपाध्याय" हैं। हिंदी में संप्रति "चाटुर्ज्या" रूप भी प्रचलित है। रेखांकित नाम मराठी प्रदेश के हैं।

१७. कुछ अन्य नाम मराठी क्षेत्र में भिन्न वर्तनी में रूढ़ हो गए हैं, यथा—

हिंदी	मराठी
इंदौर, ग्वालियर	इंदूर, ग्वाल्हेर, आदि

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

१८. हिंदी प्रदेश में कुछ नाम अरबी-फारसी के हैं। मुस्लिम शासन होने के कारण बहुत से ग्रामों व नगरों के नाम इन्हीं भाषाओं के हैं। उर्दू में तथा मानक हिंदी में भी जहां "ज़" है, मराठी में उनको "झ" वर्ण द्वारा लिखा है, यथा—

आज़मगढ़, आज़ादनगर	आझमगड, आझादनगर
फ़ैज़ाबाद, मिर्ज़ापुर	फैझाबाद, मिर्झापूर, आदि

टिप्पणी :

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि कुछ हिंदी भाषी "ज़" के स्थान पर "ज" का प्रयोग करते हैं व वैसा ही उच्चारण (तालव्य स्पर्श-संघर्षी) भी करते हैं।

१९. कुछ नाम विदेशी हैं। वे हमको अंग्रेजी के माध्यम से प्राप्त हुए हैं। अंग्रेजी के कुछ स्वन दोनों भाषाओं में भिन्न वर्णों द्वारा अभिव्यक्त किए जाते हैं। इस कारण एक ही नाम हिंदी व मराठी में भिन्न लिखा जाता हैं :—

अंग्रेजी स्वन	हिंदी वर्ण	मराठी वर्ण
अर्धविवृत, अग्र स्वर	ऐ	अॅ
घोष, दंतोष्ठ्य संघर्षी	व	व्ह
घोष, वर्त्स्य संघर्षी	ज़ ~ ज	झ

इनके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :—

हिंदी	मराठी
पैरिस (पेरिस), हैरिस, नागालैंड	पॅरिस, हॅरिस, नागालॅंड
वियतनाम, वियना, ब्राज़ील	व्हिएटनाम, व्हिएन्ना, ब्राझील, आदि

२०. "land" में समाप्त होने वाले देश-नाम हिंदी में "लैंड" द्वारा व मराठी म "लँड" द्वारा अभिव्यक्त होते हैं, यथा—

इंग्लैंड, आइसलैंड	इंग्लंड, आइसलंड
पोलैंड, फिनलैंड	पोलंड, फिनलंड, आदि

टिप्पणी :

मराठी रूप मूल अंग्रेजी उच्चारण के अधिक निकट है। क्योंकि अंग्रेजी में बलहीन अक्षरों में [ऐ] स्वर का उच्चारण [अ] हो जाता है।

२१. इनके अतिरिक्त भी बहुत से नाम दोनों भाषाओं में भिन्न लिखे जाते हैं, जिसके कई कारण है तथा एक ही नाम के लिप्यंतरण में अंतर के एक से अधिक कारणों का समावेश

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

है। नमूने के तौर पर कुछ विशेष शीर्षों के अंतर्गत दोनों भाषाओं के कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के व्यतिरेकी उदाहरण प्रस्तुत हैं––

हिंदी	मराठी
(अ) भाषाओं के नाम :	
अंग्रेज़ी, असमिया, ओड़िया	इंग्रजी, आसामी, उडिया
तमिल, रूसी	तामीळ,∾तामिळी, रशियन, आदि
(आ) त्योहारों के नाम :	
दशहरा, दीवाली ∾ दीपावली	दसरा, दिवाळी
होली, क्रिस्‌मस डे (वड़ादिन)	होळी, ख्रिसमस डे (नाताळ)
मुहर्रम	मोहरम, आदि
(इ) महीनों के नाम :	
क––भारतीय :	
चेत∾चैत्र, बैसाख∾वैशाख	चैत्र, वैशाख
जेठ∾ज्येष्ठ, असाढ़∾आषाढ़	ज्येष्ठ, आषाढ
सावन∾श्रावण, भादों∾भाद्र, भाद्रपद	श्रावण, भाद्रपद
क्वाँर∾अश्विन, कातिक∾कार्तिक	आश्विन, कार्तिक
अगहन, पूस∾पौष	मार्गशीर्ष, पौष
माघ, फागुन∾फाल्गुन	माघ, फाल्गुन

हिंदी में दूसरा रूप तत्सम है तथा साहित्य में इसका प्रयोग वैकल्पिक है।

ख––विदेशी महीनों के नाम :	
जनवरी, फरवरी, अप्रैल, मई	जानेवारी, फेब्रुवारी, एप्रिल, मे
जुलाई, अगस्त, सितंबर	जुलै, ऑगस्ट, सप्टेंबर
अक्तूबर, नवंबर, दिसंबर	ऑक्टोबर, नोव्हेंबर, डिसेंबर

टिप्पणी :

(१) "मार्च तथा जून" दोनों भाषाओं में समान लिखे जाते हैं।
(२) इन नामों का प्रचलन भारतीय महीनों के नामों की अपेक्षा अधिक है।

(ई) तिथियों व दिनों के नाम :	
पूर्णिमा∾पूर्णिमासी, पड़वा	पौर्णिमा, पाडवा
मंगलवार	मंगळवार
(उ) भौगोलिक नाम :	
क––महाद्वीप :	
अफ्रीका, अमरीका∾अमेरिका	आफ्रिका, अमेरिका
आस्ट्रेलिया, एशिया	ऑस्ट्रेलिया, आशिया

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

हिंदी	मराठी
ख---देशों के नाम :	
कनाडा, ग्रेट ब्रिटेन	कॅनडा, ग्रेट ब्रिटन
चेकोस्लोवेकिया, तिब्बत, न्यूज़ीलैंड	झेकोस्लोव्हाकिया, तिबेट, न्यूझीलंड
पुर्तगाल, स्विटज़रलैंड, हंगरी	पोर्तुगाल, स्वित्झर्लंड, हंगेरी, आदि
ग---राज्यों के नाम :	
उड़ीसा, तमिलनाडु	ओरिसा, तामिळनाडू, आदि
घ---नदियों के नाम :	
ताप्ती, ब्रह्मपुत्र, सरयू, सोन	तापी, ब्रह्मपुत्रा, शरयु, शोण, आदि

२.३ आगत शब्दों का लिप्यंतरण :

हिंदी तथा मराठी दोनों भाषाओं में शब्दावली चार प्रकार की हैं :—(१) तत्सम, (२) तद्भव, (३) देशज, तथा (४) विदेशी। प्रथम तीन में तो लिप्यंतरण का कोई प्रश्न ही नहीं है। आगत शब्दों में लिप्यंतरण का प्रश्न उठता है। दोनों भाषाओं में सबसे अधिक विदेशी शब्द अरबी-फारसी तथा अंग्रेजी के हैं। इनमें बहुत से शब्द भाषा के अंग बन गए हैं। हिंदी में अरबी–फारसी से आगत शब्दों की संख्या इतनी है कि मानक हिंदी में कुछ नए वर्णों की आवश्यकता महसूस हुई, यथा—क़, ख़, ग़, ज़, फ़। संप्रति छपाई के कारण कुछ पत्र-पत्रिकाएँ इन वर्णों का प्रयोग नहीं करती। किंतु आकाशवाणी के अधिकतर हिंदी अनाउंसर इन व्यंजनों का उच्चारण करते हैं। केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा हिंदी के जो रिकार्ड बने हैं, उनमें भी इनका समावेश किया गया है। फिर भी बहुत से हिंदी भाषी न तो इन व्यंजनों का उच्चारण करते हैं और न ही लेखन में इनका प्रयोग करते हैं। मराठी में निश्चित रूप से ये स्वनिम नहीं हैं। इनके स्थान पर "क, ख, ग, ज तथा फ" का ही प्रयोग होता है। अरबी-फारसी से आगत शब्द मराठी की अपेक्षा हिंदी में मूल उच्चारण के अधिक निकट हैं। अरबी-फारसी से आगत ऐसे शब्द, जिनमें हिंदी व उर्दू में "ज़" उच्चारण होता है, यदि मराठी में एकीकृत हो गए हैं, तब तो इसके लिए "ज" वर्ण का प्रयोग होता है। कुछ शब्दों में इस "ज" का उच्चारण दंत्य स्पर्श-संघर्षी है, यथा-जरा, जोर, आदि, जो हिंदी भाषियों को "ज़" (वर्त्स्य संघर्षी) के समान सुनाई देता है। इनके अतिरिक्त अरबी-फारसी के बहुत से शब्दों में, जिन में हिंदी "ज़" वर्ण का प्रयोग करती है, मराठी में 'झ' वर्ण का प्रयोग होता है, यथा—गझल, आझाद, आदि।

संप्रति सभी भारतीय भाषाओं में अंग्रेजी के काफी शब्द प्रयुक्त होते हैं। इनकी संख्या लिखित की अपेक्षा बोलचाल में अधिक है। शिक्षित समाज में उन शब्दों के लिए भी अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया जाता है जिनके लिए उनकी भाषाओं में शब्द मौजूद हैं।

अंग्रेजी से आगत शब्द हिंदी व मराठी में किस प्रकार लिप्यंतरित होते हैं, उनकी व्यतिरेकी रूपरेखा यहां प्रस्तुत है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

१. जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि मराठी में शब्द के अंतिम अक्षर का स्वर दीर्घ होता है और उपांत्य का ह्रस्व। इस कारण हिंदी व मराठी के कुछ रूपों में अंतर है, यथा——

हिंदी	मराठी
क्लर्क, टाइमकीपर	क्लार्क, टाईमकिपर ~ कीपर
प्रिंसिपल, मिनिट, सूटकेस, सेंसर	प्रिन्सिपाल, मिनीट, सुटकेस, सेन्सॉर

२. हिंदी व मराठी के अपने शब्दों में मूर्धन्य स्पर्शों के पूर्व "न्" और "स्" प्रयुक्त नहीं होते। किंतु संप्रति अंग्रेजी के बहुत से आगत शब्दों में इनका प्रयोग होने लगा है, यथा—— पोस्ट, स्टैन्ड (स्टैंड भी)। मराठी में कहीं-कहीं "पोष्ट" भी देखने को मिल जाता है। फिर भी आजकल 'पोस्ट' अधिक पसंद किया जाता है। कुछ अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं—— सेंट ~ सेन्ट (सेण्ट नहीं), बैंड ~ बैन्ड (मराठी : बँड ~ बॅण्ड), एजेंट ~ एजेन्ट (मराठी : एजंट ~ एजण्ट) आदि।

३. अंग्रेजी से आगत शब्द, जिन में 'न्स' तथा 'न्श' स्वन होते हैं, हिंदी में तो अनुस्वार द्वारा लिखे जा सकते हैं, जबकि मराठी में अनिवार्यत: इनको 'न्स' व 'न्श' ही लिखा जाता है, यथा——

इंस्पेक्टर, एजेंसी, इंश्योरेंस — इन्स्पेक्टर, एजन्सी, इन्शुरन्स, आदि

४. जिन शब्दों में अंग्रेजी के घोष वर्त्स्य संघर्षी व घोष दंतोष्ठ्य संघर्षी स्वन आते हैं, उनको हिंदी में क्रमश: "ज़" व "व" वर्ण द्वारा लिखा जाता है। किंतु इन को मराठी में क्रमश: "झ" व "व्ह" वर्णों द्वारा प्रकट किया जाता है, यथा——

गज़ट, ट्रांज़िस्टर, ट्रेज़री — गॅझेट, ट्रांझिस्टर, ट्रेझरी
वाउचर, टेलीविज़न — व्हाऊचर, टेलिव्हिजन, आदि

५. 'Table, label' आदि शब्दों में अंग्रेजी में "ब्" और "ल्" के बीच में कोई स्वर उच्चरित नहीं होता, क्योंकि अंग्रेजी में इन शब्दों में "ल्" आक्षरिक है। हिंदी व मराठी भाषी "ब्" और "ल्" के बीच में क्रमश: "उ" व "अ" लगा देते हैं, यथा——

टेबुल, लेबुल — टेबल, लेबल

हिंदी में "उ" के स्थान पर "अ" या "इ" स्वर भी मिलते हैं। "धर्मयुग" आदि पत्रिकाओं में "अ" स्वर (यथा-टेबल) का प्रचलन है। 'Bible' शब्द के लिए हिंदी में "इ" अर्थात—— 'बाइबिल' तथा मराठी में "अ" अर्थात 'बायबल' प्रयुक्त होते हैं।

टिप्पणी :

अंग्रेजी में 'table' आदि शब्दों में प्रथम स्वर [एँइ] है [ए] नहीं।

६. अंग्रेजी से आगत शब्दों के हिंदी व मराठी शब्दों के लिप्यंतरण में स्वरों में बहुत भिन्नता मिलती है। इसका मुख्य कारण यही है कि दोनों क्षेत्रों में उन शब्दों का भिन्न उच्चारण प्रचलित है। इनमें कुछ शब्द हिंदी में मूल उच्चारण के अधिक निकट हैं और कुछ शब्द मराठी में मूल उच्चारण के अधिक निकट हैं। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं:——

(अ) अंग्रेजी में वर्तनी व उच्चारण में बड़ा अंतर है। यदि मूल उच्चारण का पता न हो, तो वर्ण के बहुप्रचलित उच्चारण को ही लक्ष्य भाषा-भाषी आदर्श मान लेते हैं, यथा——

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

अंग्रेजी शब्द	मूल उच्चारण	हिंदी	मराठी
agency	ऍंइजन्सि	एजेंसी	एजन्सी
assistant	असिस्टन्ट	असिस्टेंट	असिस्टंट
lieutenant	लेफ्‌टेनन्ट	लेफ्टिनेंट	लेफ्टनंट
ordnance	ऑडनन्स	आर्डनेंस	ऑर्डनन्स
provident	प्रॉविडन्ट	प्रावीडेंट	प्रॉव्हिडंट

टिप्पणी :

अंग्रेजी के शब्दों के मूल उच्चारण के विषय में निम्नांकित बातें द्रष्टव्य हैं :—

(१) प्रथम शब्द में "ज" और "न" के बीच, दूसरे शब्द में "ट्" और "न्" के बीच, और चौथे शब्द में "ड्" और "न्" के बीच "अ" वैकल्पिक है।

(२) अंग्रेजी के "ट", "ड" वर्त्स्य हैं, हिंदी व मराठी की भांति मूर्धन्य नहीं।

(३) अंग्रेजी के प्रथम शब्द में "ए" और चौथे शब्द में "आॅ" ह्रस्व हैं।

(आ) अंग्रेजी में "u" वर्ण से कुछ शब्दों में "ऊ", कुछ में "यु" तथा कुछ में "यू" ध्वनियां निकलती हैं, हिंदी व मराठी में एक के स्थान पर दूसरे रूप का प्रतिस्थापन देखा जा सकता है। यथा—

	अंग्रेजी उच्चारण	हिंदी उच्चारण	मराठी उच्चारण
deputy	डेप्युटि	डिप्टी	डेप्युटी
education	एड्यकेड्इशन् ~ जू	एजूकेशन	एज्युकेशन
formula	फॉम्युल (ल का 'अ' उच्चरित)	फार्मूला	फॉर्म्युला
junior	जून्यर्	जूनियर	ज्यूनियर

(इ) अंग्रेजी का अर्धविवृत अग्रस्वर [æ] हिंदी में 'ऐ' वर्ण द्वारा और मराठी में "अॅ" वर्ण द्वारा लिखा जाता है। (पर उच्चारण हिंदी व मराठी दोनों में समान है। फिर भी अंग्रेजी का यह स्वर हिंदी व मराठी में उच्चरित स्वर से अधिक विवृत है)। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :—

हिंदी—ऐ	मराठी—अॅ
बैट, कैप, हैट	बॅट, कॅप, हॅट, आदि
हिंदी—ऐं	मराठी—अॅं
कैंप, बैंक	कॅंप, बॅंक, आदि

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

इनके अतिरिक्त भी वर्तनी–उच्चारण के कारण किसी एक भाषा में या दोनों भाषाओं में एक के स्थान पर दूसरा स्वर लिखा जाता है। कुछ व्यतिरेकी उदाहरण इस प्रकार हैं :—

हिंदी	मराठी
ऐ	या
गैलन, गैलरी	ग्यालरी, ग्यालन, आदि
आ	या
गारंटी	ग्यारंटी

टिप्पणी :

संप्रति मराठी में 'गॅलरी, गॅलन, गॅरंटी' रूप अधिक प्रचलित हो रहे हैं।

आ	अॅ
ग्रांट	ग्रॅंट
आ	ए
राशन	रेशन
ए	अॅ
एल्युमिनम	अॅल्युमिनियम

(ई) अंग्रेजी के [ɔ] व [ɔ:] दोनों स्वनों के लिए हिंदी तथा मराठी दोनों में "ऑ" वर्ण का प्रयोग होता है। किंतु हिंदी में इन स्वनों के लिए "औ" तथा "आ" का भी प्रयोग मिलता है, यथा—'सौरी, कालेज', आदि। मराठी में अनिवार्यतः "ऑ" का ही प्रयोग मिलता है।

'Store, flour' आदि शब्दों में अंग्रेजी में [ɔ:] स्वर है। किंतु इसका वैकल्पिक उच्चारण [ɔə] भी है। हिंदी में इसके स्थान पर "ओ" वर्ण का और मराठी में "ओअ" का प्रयोग होता है, यथा —

स्टोर, फ्लोर — स्टोअर, फ्लोअर, आदि

(उ) अंग्रेजी के [आइ] संध्यक्षर के हिंदी व मराठी में लिप्यंतरण की व्यतिरेकी स्थिति इस प्रकार है :—

अंग्रेजी संध्यक्षर	हिंदी	मराठी
आइ [ai]	आइ	आय
	ट्राइल	ट्रायल, आदि

(ए) हिंदी तथा मराठी में अंग्रेज़ी से आगत शब्दों के लिप्यंतरण के कुछ अन्य व्यतिरेकी उदाहरण इस प्रकार हैं :—

अंग्रेजी शब्द	अंग्रेजी में उच्चारण	हिंदी	मराठी
Colony	कॉलनि	कॉलोनी	कॉलनी
diesel	डीज़ल्	डीज़ल	डिझेल
plaster	प्लास्टर/टुअ	प्लास्टर	प्लॅस्टर
budget	बुअजिट	बजट	बजेट, आदि

———

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

तृतीय अध्याय

हिंदी : गुजराती

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

३. हिंदी तथा गुजराती

गुजराती गुजरात राज्य की राज-भाषा तथा मातृ-भाषा है। गुजरात राज्य में गुजराती बोलने वालों की संख्या १९६१ की जनगणना के अनुसार २,०१,०५,८४६ है। इन के अतिरिक्त यह भाषा गुजरातियों द्वारा आपसी व्यवहार में गुजरात–इतर राज्यों में भी बोली जाती है। विदेशों में गुजराती बोलने वालों की संख्या इस प्रकार है—केनिया—६९,०००, तंजान्यिका— ६१,०००, उगांडा—४४,०००, मॉरिशस—२१,०००, जंजीबार—१५,०००, फिजी—८,०००, न्यासालैंड—६,०००, दक्षिण रोडेशिया—४,५००, उत्तर रोडेशिया—३,५००, रुआंडा उरंडी—२,०००, मलाया—१,३००, कांगो—१,२००।

आधुनिक गुजराती साहित्य पदच तथा गदच दोनों में काफी समृद्ध है। इस भाषा में साहित्यिक परंपरा का विकास १,००० वर्षों पुराना माना जा सकता है।

३.१ गुजराती भाषा गुजराती लिपि में लिखी जाती है। यह देवनागरी से काफी साम्य रखती है। स्वरों की मात्राएं दोनों भाषाओं में समान रूप से लगती हैं। इस कारण एक लिपि को जानने वाला दूसरी लिपि को कुछ ही घंटों के अभ्यास से सीख सकता है। इन लिपियों में सब से बड़ा अंतर यह है कि गुजराती में शिरोरेखा का प्रयोग नहीं होता। गुजराती की वर्णमाला इस प्रकार है :—

स्वर :

અ	આ	ઇ	ઈ	ઉ	ઊ	ઋ	એ	ઐ
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ
ઓ	ઔ	અં	અઃ					
ओ	औ	अं	अः					

व्यंजन :

ક	ખ	ગ	ઘ	ઙ
क	ख	ग	घ	ङ
ચ	છ	જ	ઝ	ઞ
च	छ	ज	झ	ञ
ટ	ઠ	ડ	ઢ	ણ
ट	ठ	ड	ढ	ण
ત	થ	દ	ધ	ન
त	थ	द	ध	न
પ	ફ	બ	ભ	મ
प	फ	ब	भ	म

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

ય	ર	લ	વ
य	र	ल	व
શ	ષ	સ	હ
श	ष	स	ह
ળ	ક્ષ	જ્ઞ	
ळ	क्ष	ज्ञ	

३.२ गुजराती व हिंदी की वर्णमालाएं समान ह, फिर भी निम्न अंतर द्रष्टव्य हैं :—

१. "ए" और "ऐ" वर्ण गुजराती में "अ" वर्ण के ऊपर मात्रा लगा कर बनते हैं।

२. गुजराती में मूर्धन्य पार्श्विक स्वनिम भी है और इस को लिखने के लिए अलग वर्ण "ळ" भी। हिंदी में न तो यह स्वनिम ही है और न ही वर्ण।

३. हिंदी में मूर्धन्य उत्क्षिप्त स्वनों के लिए "ड़, ढ़" वर्णों का प्रयोग होता है। गुजराती में ये वर्ण नहीं हैं, यद्यपि ये स्वन हैं। इन स्वनों के लिए गुजराती में "ड, ढ" वर्णों का प्रयोग किया जाता है।

४. हिंदी वर्णमाला के अंतर्गत तीन संयुक्त वर्णों को लिखने की परंपरा है—क्ष, त्र, ज्ञ। गुजराती में वर्णमाला के अंतर्गत दो संयुक्त वर्णों को लिखने की परंपरा है—"क्ष, ज्ञ," यदचपि "त्र" संयुक्त वर्ण हिंदी की ही भांति लिखा जाता है।

५. चंद्रबिंदु का प्रयोग गुजराती में नहीं होता। उच्चारण में गुजराती में अनुनासिकता है, यथा—आंख = [आँख], हाडकुं = [हाड़कुँ] (= हड्डी)। लेखन में अनुनासिकता को अनुस्वार द्वारा ही प्रकट किया जाता है।

६. गुजराती लेखन में मराठी की भांति दो महाप्राण स्पर्शों का गुच्छ लिखा जाता है, यथा—'खख्खर' (एक सरनेम), शुध्ध, आदि। संप्रति हिंदी में ऐसा लिखने की परंपरा नहीं है। जैसा कि मराठी के संदर्भ में कहा जा चुका है कि उच्चारण इनका भी हिंदी की भांति —अल्पप्राण + महाप्राण—होता है, यथा— [खक्खर, शुद्ध]।

७. हिंदी में "क़, ख़, ग़, ज़, फ़" वर्णों को वैकल्पिक रूप में लिखने की परंपरा है। गुजराती में ये वर्ण नहीं हैं।

८. संप्रति अंग्रेजी के स्वन [ऑ] के लिए गुजराती में एक अन्य वर्ण द्वारा लिखने की परंपरा आरंभ हो गई है। यह वर्ण 'ओ' वर्ण के ऊपर 'विशेषक चिह्न' लगाकर बनाया गया है। फिर भी प्रत्येक स्थान पर इस परंपरा का पालन नहीं होता। प्रायः इस के स्थान पर "ओ" वर्ण लिखा जाता है। गुजराती के संदर्भ में देवनागरी में इस नए वर्ण के लिए "ऑ" वर्ण का प्रयोग किया गया है।

९. अंग्रेज़ी से आगत शब्दों के लेखन में गुजराती में मूर्धन्य स्पर्शों के पूर्व "न्" (अर्थात—"न्ट", "न्ड") लिखने की परंपरा है। हिंदी में ऐसे रूप मानक नहीं माने जाते, यद्यपि इस प्रकार के रूप (टेन्ट, स्टैन्ड, आदि) हिंदी भाषियों के व्यक्तिगत पत्रों में तथा बोर्डों (जिन को अधिकतर कम शिक्षित पेंटर लिखते हैं) पर देखे जा सकते हैं।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

३.३ गुजराती के स्वनिम इस प्रकार हैं :—

ई,	ए,	ऐ,	अ,	आ,	ऊ,	ओ,	औ,
क्,	ख्,	ग्,	घ्,	च्,	छ्,	ज्,	झ्,
ट्,	ठ्,	ड्,	ढ्,	त्,	थ्,	द्,	ध्,
प्,	फ्,	ब्,	भ्,	ण्,	न्,	म्,	अनुस्वार
र्,	ल्,	ळ्,	स्,	ज़्	श्,	स्	ह्
य्,	व्						

३.४ गुजराती के कुछ वर्णों के स्वनात्मक मूल्य तथा उच्चारण संबंधी कुछ विशिष्टताएं इस प्रकार हैं :—

१. गुजराती में "इ—ई" तथा "उ—ऊ" पूरक वितरण में हैं। किंतु लेखन में संस्कृत परंपरा का ही पालन किया जाता है। इसलिए गुजराती के कुछ शब्दों के उच्चारण तथा लेखन में अंतर हो जाता है। उच्चारण में विवृत-पूर्व स्वर सापेक्ष्यतः दीर्घ होता है।

२. गुजराती में "ऐ" और "औ" का उच्चारण हिंदी की भांति मूल स्वर के रूप में नहीं होता। डॉ. पी. वी. पंडित ने इन का स्वनिक लिप्यंकन इस प्रकार किया है— [अय्], [अव्]।

३. वहु-अक्षरीय शब्दों के अंत में "ए—ऐ" और "ओ—औ" का व्यतिरेक उपलब्ध नहीं होता। उच्चारण में "ए" और "ओं" के साथ अनुनासिकता नहीं आती। इसीलिए यदि लेखन में "एं" या "ओं" हों, तो भी उच्चारण [ऐं] व [औं] हो जाता हैं, यथा— फेंक = [फैंक], पोंचो [पौंचो] (= वांह)। [ऐ] व [ऑ] मूल स्वर वाले अंग्रेज़ी से आगत शब्दों को गुजराती में "ए" व "ओ" वर्णों द्वारा लिखा जाता है। संप्रति [ऑ] के लिए एक अलग वर्ण ही लिखा जाने लगा है।

५. गुजराती की अन्यतम विशेषता, जो अन्य भारतीय भाषाओं में नहीं पाई जाती, यह है कि इस में 'मरमर' स्वर पाए जाते हैं। उदाहरणार्थ "म्हों" (= मुंह) शब्द में [औं] मर्मर स्वर है। डॉ. पंडित ने मर्मर को /ह/ का उपस्वन माना है। महाप्राण व्यंजनों के पूर्व 'मर्मर' स्वर नहीं आता।

६. [ज़] का उच्चारण केवल कुछ शिक्षित गुजराती ही करते हैं। यह स्वन अंग्रेज़ी और उर्दू से आगत शब्दों में पाया जाता है। लेखन में यह "झ" वर्ण द्वारा लिखा जाता है और अधिकतर गुजराती इस का उच्चारण भी [झ] ही करते हैं।

७. अनुस्वार के चार उपस्वन हैं :—

(१) [ङ] :—यह वर्गीय व्यंजनों के पूर्व आता है।

(२) [ञ्] :—यह वर्गीय व्यंजनों के पूर्व आता है।

(३) "य, र, ल, व, श, स," के पूर्व आने वाला [अनुनासिक व्यंजन]।

(४) अनुनासिकता :— जो स्वरों के बाद आता है।

लेखन में इन सब को अनुस्वार द्वारा ही लिखा जाता है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

८. /ड/ के उपस्वन के रूप में [ड़] भी उच्चरित होता है। इस का वितरण वही है जिस का ज़िक्र मराठी के संदर्भ में किया जा चुका है।

९. गुजराती में "ज्ञ" का उच्चारण [ग्न्य] होता है तथा 'ऋ' का उच्चारण [रु]।

३.४ व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का लिप्यंतरण :

तत्सम नाम दोनों भाषाओं में समान लिखे जाते हैं चाहे उन का उच्चारण दोनों में कुछ भिन्न ही क्यों न हो। इन के अतिरिक्त कुछ तत्सम-इतर तथा विदेशी नाम भी दोनों भाषाओं में समान लिखे जाते हैं। यहां केवल उन्हीं नामों का वर्णन किया जा रहा है, जो दोनों भाषाओं में भिन्न लिखे जाते हैं।

१. कुछ नाम जातिवाचक संज्ञाओं या विशेषणों से बने होते हैं, इन का अनुवाद हो जाता है। अतः ऐसे नाम दो भाषाओं में भिन्न हो जाते हैं, यथा—

हिंदी	गुजराती
नई दिल्ली, नया गांव	नवी दिल्ली, नवा गाम
संयुक्त राष्ट्र संघ	संयुक्त राष्ट्र संस्था, आदि

२. हिंदी में "ल" तथा गुजराती में "ळ" के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :—

कमला	कमळा
नेपाल	नेपाळ
भोपाल	भोपाळ
मंगल	मंगळ

२. हिंदी के "अऊ" वर्णों वाले नाम गुजराती में "औ" वर्ण द्वारा लिखे जाते है, यथा—

लखनऊ	लखनौ

३. हिंदी में "ड़", "ढ़" तथा गुजराती में "ड", "ढ" के उदाहरण इस प्रकार हैं :—

भीलवाड़ा	भीलवाडा
राजगढ़	राजगढ, आदि

४. कुछ नाम गुजराती में अंग्रेज़ी रूपों के अधिक निकट हैं, जबकि हिंदी में उन के लिए अन्य रूप प्रचलित हैं, यथा—

अरब सागर	अरेबिक सागर
प्रशांत महासागर	पेसिफिक महासागर
लंदन	लंडन
मिश्र	इजीप्त
श्रीलंका	सिलोन (श्रीलंका भी)
रूस	रशिया

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

५. स्वतंत्रता के पूर्व शिक्षित वर्ग में केवल अंग्रेज़ी ही सभी प्रांतों में संपर्क भाषा थी। अतः दूसरे प्रांतों में प्रचलित नाम अंग्रेज़ी (रोमन लिपि में लिखित) के माध्यम से प्राप्त होते थे। चूंकि अंग्रेज़ी तथा भारतीय भाषाओं की स्वन-प्रक्रियाएं भिन्न हैं, अतः सब भारतीय नाम अंग्रेज़ी में ठीक से नहीं लिखे जा सकते। दूसरे, अंग्रेज भारतीय नामों के उच्चारण से ठीक से परिचित न होने के कारण भी उन को ठीक से नहीं लिख पाते थे। बाद में अंग्रेज़ों द्वारा लिखित रूप ही रूढ़ हो गए। तीसरे, अंग्रेज़ी वर्तनी व उच्चारण में काफी अंतर है तथा एक वर्ण या वर्ण-समूह के एक से अधिक उच्चारण संभव हैं। अतः भिन्न क्षेत्रों में एक ही नाम के भिन्न उच्चारण होने लगे ओर उन्हीं क्षेत्रीय उच्चारणों को मानक मानकर क्षेत्रीय भाषाओं में लिखा जाने लगा। ऐसे नामों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :—

(क)

अंग्रेज़ी	हिंदी	गुजराती
Africa	अफ्रीका	आफ्रिका
Allahabad	इलाहाबाद	अलाहाबाद
Assam	असम	आसाम
Bombay	बंबई	मुंबई (मूल मराठी नाम की भांति)
Gauhati	गोहाटी	गोहत्ती
Kashmir	कश्मीर	काश्मीर
Kathmandu	काठमांडू	खटमंडु
Kerala	केरल	केराला
Madurai	मदुरई	मदुरा
Orissa	उड़ीसा	ओरिस्सा
Simla	शिमला	सिमला

(ख) गुजराती के कुछ नाम, जो हिंदी भाषियों को अंग्रेज़ी के माध्यम से प्राप्त हुए, हिंदी मे भिन्न प्रकार से लिखे जाते हैं, यथा—

गुजराती	हिंदी
आणंद (एक स्थान का स्नाम)	आनंद
वडोदरा	बड़ोदा
महेता (एक सरनेम, जैसे अशोक महेता)	मेहता
परीख (एक सरनेम)	पारेख

टिप्पणी :

वैसे गुजराती में "मेहता" और "पारेख" सरनेम भी हैं, किंतु हिंदीभाषी "महेता" और "परीख" को भी "मेहता" और "पारेख" लिखते हैं।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

(ग) अंग्रेज़ी का " t " वर्ण लिप्यंतरण में "त" व "ट" दोनों का प्रतीक होता है। अतः कभी-कभी इस वर्ण के लिए एक भाषा "त" वर्ण का प्रयोग करती है तो दूसरी भाषा "ट" का। इस के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :—

अंग्रेज़ी	हिंदी	गुजराती
Stalin	स्टालिन	स्तालिन
Tolstoy	तोल्स्तोय	टोल्सटॉय
Patiala	पटियाला	पतियाला

टिप्पणी :

प्रथम दो नाम रूसी के हैं ओर रूसी में [त] ही हैं।

(घ) एक अन्य उदाहरण इस प्रकार है :—

Bose	बोस	बोझ

यह वंगला कुलनाम है। मूल वंगला में यह "वसु" लिखा जाता है और इस का उच्चारण [वोशु] के समान है। गुजराती ने यह नाम अंग्रेज़ी के माध्यम से प्राप्त किया। अंग्रेज़ी में " s " का उच्चारण [ज़] भी होता है जिसको गुजराती में "झ" वर्ण द्वारा लिखा जाता है। इसीलिए इस शव्द में गुजराती में "झ" रूढ़ हो गया। इस प्रकार का उदाहरण वंगला में भी मिलता है। वंगला में "मद्रास" को "माद्राज" लिखा जाता है।

टिप्पणी :

आजकल हिंदी में "वसु" भी लिखा जाने लगा है।

(च) अंग्रेज़ी के माध्यम से प्राप्त करने के कारण इन दोनों भाषाओं में कुछ अन्य नामों के भिन्न लिखे जाने के उदाहरण इस प्रकार हैं :—

अंग्रेज़ी	हिंदी	गुजराती
Bangalore	वंगलोर	बेंगलोर
Banerjee	वनर्जी	वेनर्जी
Chatterjee	चटर्जी	चेटर्जी
Tagore	टैगोर	टागोर (मराठी की भांति)
Majumdar	मजूमदार	मजमुदार

टिप्पणी :

प्रथम नाम कन्नड़ भाषा का है। कन्नड़ में शुद्ध रुप है "वेंगुळूरु"। शेष नाम वंगला के हैं। वंगला में शुद्ध रूप इस प्रकार हैं "वन्द्योपाध्याय, चट्टोपाध्याय, ठाकुर, मजुमदार"। आजकल हिंदी में "चटर्जी" को "चाटुर्ज्या" भी लिखते हैं।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

६. अंग्रेज़ी के अर्धविवृत मूल स्वर [ऐ] के लिए गुजराती में "ए" वर्ण का प्रयोग होता है। इस कारण इस स्वर वाले नाम दोनों भाषाओं में भिन्न लिखे जाते हैं, यथा—

हिंदी	गुजराती
मैक्समूलर	मेक्समूलर
हैरिस	हेरिस
पैरिस	पेरिस
इंग्लैंड	इंग्लेंड

टिप्पणी :

कुछ लोग हिंदी में भी "पेरिस" लिखते हैं। वैसे यह फ्रेंच स्थान-नाम है और फ्रेंच में इस का उच्चारण [पारी] के समान है।

७. अंग्रेज़ी के अर्धविवृत गोलित मूल स्वर के लिए हिंदी में "ऑ" या "आ" का प्रयोग होता है और गुजराती में इसके लिए "ऑ" या "ओ" का प्रयोग होता है, यथा—

स्काटलैंड/स्कॉटलैंड	स्कोटलेंड/स्कॉटलेंड
जान/जॉन	जोन/जॉन, आदि

८. अंग्रेज़ी तथा उर्दू के वर्त्स्य घोष संघर्षी स्वन के लिए हिंदी में "ज़" या "ज" वर्ण का प्रयोग होता है, जबकि गुजराती में इस के लिए मराठी की भांति "झ" वर्ण का प्रयोग होता है, यथा—

एलीज़ाबेथ	एलिझाबेथ
ज़ाकिर हुसेन	झाकिर हुसेन, आदि

९. मूल अरबी या फारसी से प्राप्त उर्दू के कुछ नाम हिंदी में उर्दू उच्चारण के अधिक निकट हैं। गुजराती में ऐसे कुछ नामों को भिन्न प्रकार से लिखा जाता है, यथा—

अहमदाबाद	अमदावाद

१०. कुछ अन्य नामों के भिन्न लिखे जाने के उदाहरण इस प्रकार हैं :—

इंदौर	इंदोर
पूना	पुना

टिप्पणी :

आजकल "पुणे" लिखने की परंपरा दोनों भाषाओं में शुरू हो गई है।

११. भारतीय महीनों के नामों की तुलनात्मक स्थिति इस प्रकार है :—

हिंदी	गुजराती
चैत/चैत्र	चैत्र
वैशाख	वैशाख
जेठ/ज्येष्ठ	जेठ

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

हिंदी	गुजराती
असाढ़/आषाढ़	अषाढ/आषाढ
सावन/श्रावण	श्रावण
भादों/भाद्रपद	भादरवो
क्वाँर/आश्विन	आसो
कातिक/कार्तिक	कारतक
अघहन/मार्गशीर्ष	मागसर
पूस/पोष	पोष
माघ	महा
फागुन/फाल्गुन	फागण

टिप्पणी :

१. हिंदी में दूसरे नाम संस्कृत के हैं तथा इनका प्रयोग हिंदी में वैकल्पिक रूप से होता है।

२. हिंदी प्रदेश में वर्ष का आरंभ चैत्र महीने के कृष्ण पक्ष के प्रथम दिवस से होता है अर्थात होली के दूसरे दिन से। गुजरात में वर्ष का आरंभ कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम दिवस से होता है अर्थात दीपावली के दूसरे दिन से। वैसे हिंदी प्रदेशों में भी व्यापारी लोग अपने अकाउंट आदि के लिए नया वर्ष दीवाली के दूसरे दिन से ही मानते हैं।

१२. कुछ प्रमुख त्योहारों को लिखने की स्थिति दोनों भाषाओं में इस प्रकार है :—

दशहरा	दशेरा
दीवाली/दीपावली	दीवाळी
होली	होळी
मुहर्रम	मोहरम
बड़ा दिन	नाताल (क्रिसमस के लिए)

१३. "अमावस" या "अमावस्या" को गुजराती में "अमास" कहते हैं "और पूर्णिमासी" को "पूनम" कहते हैं।

१४. विदेशी महीनों के नाम दोनों भाषाओं में इस प्रकार लिखे जाते हैं :—

हिंदी	गुजराती
जनवरी	जान्युआरी
फरवरी	फेब्रुआरी
अप्रैल	एप्रिल
मई	मे
अगस्त	ऑगस्ट
सितंबर	सप्टेम्बर
अक्तूबर	ओक्टोबर
नवंबर	नवेम्बर
दिसंबर	डीसेम्बर

टिप्पणी :

"मार्च, जून" तथा "जुलाई" दोनों भाषाओं में समान लिखे जाते हैं।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

३.५ आगत शब्दों का लिप्यंतरण :

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि सभी भारतीय भाषाओं में अंग्रेज़ी (तथा अन्य विदेशी भाषाओं के, जिन को भी इस देश की भाषाओं ने अंग्रेज़ी के माध्यम से प्राप्त किया है) के काफी शब्द प्रयुक्त होते हैं। हिंदी तथा गुजराती में इन शब्दों का किस प्रकार लिप्यंतरण होता है, उस की व्यतिरेकी रूपरेखा यहां प्रस्तुत है।

१. अंग्रेज़ी के अर्ध-विवृत स्वरों— [ऐ] और [ऑ] —के लिए हिंदी में "ऐ" व "ऑ" या "आ" तथा गुजराती में "ए" व "ओ" या "ऑ" वर्णों का प्रयोग किया जाता है, यथा—

हिंदी	गुजराती
कैसेट (टेपरिकार्डर)	केसेट
कैप्टन	केप्टन
कैरम	केरम
गैरेज	गेरेज
गैलरी	गैलेरी
ट्रैक्टर	टेक्टर
पैंट/पतलून	पेन्ट/पाटलून
पैसेंजर	पेसेंजर/पिसेन्जर
फैंसी (ड्रेस)	फेंसी/फेन्सी
फैशन	फेशन
फैक्ट्री	फेक्टरी
बैंक	बेंक
बैग	बेग
बैटरी	बेटरी
बैडमिंटन	बेडमिंटन
रैंक	रेंक
स्नैक	स्नेक
हैंगर	हेंगर
हैंडलूम	हेंडलूम
आफिस/ऑफिस	ऑफिस/ओफिस
कान्सटेबुल	कोन्सटेबल
कालेज/कॉलेज	कॉलेज/कोलेज
चाकलेट	चोकलेट
टाकीज़	टॉकीझ/टोकीझ
डाक्टर/डॉक्टर	डॉक्टर/डोक्टर/दाक्तर
डालर	डोलर
पिंगपांग	पिंगपोंग
पालिश	पॉलीश

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

हिंदी	गुजराती
फ्राक	फ्रोक
राकेट	रोकेट
वर्कशाप	वर्कशॉप
वारंट	वोरंट
वालीबॉल	वोलीबोल
शार्ट हैंड	शोर्ट हेन्ड
हाकी	हॉकी
हेलीकाप्टर	हेलीकोप्टर
हॉस्पीटल/अस्पताल	हॉस्पिटल/इस्पिताल

२. कुछ ऐसे उदाहरण भी उपलब्ध हैं, जहां हिंदी में "अ" तथा गुजराती में "ए" का प्रयोग होता है, यथा—

हिंदी	गुजराती
अटैची	एटेची
कलैंडर	केलेंडर/केलेन्डर
गजेटेड	गेजेटेड
वराइटी	वेराइटी

३. "Table, Cable" आदि शब्दों में अंग्रेज़ी में "ब्" और "ल्" के बीच कोई स्वर उच्चरित नहीं होता, क्योंकि अंग्रेज़ी में इन शब्दों में "ल्" आक्षरिक है। हिंदी में "ब्" और "ल" के बीच "उ" या "इ" या "अ" मिलते हैं, जबकि गुजराती में केवल "अ" का प्रयोग होता है, यथा—

हिंदी	गुजराती
टेबुल/टेबिल/टेबल	टेबल
केबल/केबिल/केबुल	केबल

टिप्पणी :

गुजराती में यह स्थिति मराठी की भांति है।

४. स्वर-भिन्नता के अन्य मिले-जुले उदाहरण इस प्रकार हैं :—

हिंदी	गुजराती
आइस क्रीम	आईस क्रीम
इंजीनियर	एन्जिनियर
एटलस	एटलास
एम्ब्युलेंस	एमब्युलन्स
टाइप	टाईप
टिंचर	टींचर

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

हिंदी	गुजराती
पेंटर	पेन्टर/पेईन्टर
पुलिस	पोलीस
प्रिंटिंग	प्रिन्टींग
फार्मेसी	फार्मसी
विस्कुट	विस्किट
विल	वील
विल्डिंग	विल्डींग
मिलिटरी	मीलीटरी
मील	माईल
वरंडा/वरामदा	वरंडो
सैलून	सलुन

५. अंग्रेजी के [आइ] संध्यक्षर के हिंदी तथा गुजराती में लिप्यंतरण की व्यतिरेकी स्थिति इस प्रकार है :—

अंग्रेज़ी संध्यक्षर	हिंदी	गुजराती
आइ	आइ	आय
	साइकिल	सायकल
	साइरन/सायरन	सायरन
	लाइंस क्लब	लायन्स क्लब

६. अंग्रेज़ी व उर्दू के घोष वर्त्स्य संघर्षी "ज़" के लिए हिंदी में "ज़" या "ज" तथा गुजराती में मराठी की भांति "झ" वर्ण का प्रयोग होता है, यथा—

हिंदी	गुजराती
ज़ेब्रा	झेब्रा
टेलीविज़न	टेलिविझन
ब्लाउज़	ब्लाऊझ
ग़ज़ल	गझल

७. कुछ अन्य शब्दों को हिंदी तथा गुजराती में इस प्रकार लिखा जाता है :—

हिंदी	गुजराती
टॉवल	टुवाल
सर्विसेज	सर्विसीझ
सूट	शूट, आदि

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

चतुर्थ अध्याय

हिंदी : बंगला

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

४. हिंदी तथा बंगला

बंगला पश्चिम बंगाल तथा बंगला देश में बोली जाती है। यह यहां की राजभाषा भी है। इस के अतिरिक्ति जहां-जहां बंगाली हैं वहां-वहां वे आपसी व्यवहार में इस भाषा का प्रयोग करते हैं। बंगालियों की संख्या आसाम, बिहार तथा उत्तर प्रदेश में काफी है।

बंगला अपने समूह की अन्य भाषाओं से १००० ई. के लगभग अलग हुई। अगले हजार वर्षों के इतिहास को तीन पर्वों (Stages) में बांटा जा सकता है :—(१) आदि पर्व (१०००—१३०० ई.), (२) द्वितीय पर्व (१३००–१७५० ई.), (३) तृतीय पर्व (१७५०—अब तक)। आदि पर्व की भाषा में कुछ रहस्यात्मक गीत (चर्या पद) लिखे गए, जो नेपाल से प्राप्त १५ वीं शताब्दी की पांडुलिपि में सुरक्षित हैं। द्वितीय पर्व की भाषा में काफी साहित्य उपलब्ध है। इस समय की बंगला पर फारसी तथा अरबी का प्रभाव अत्याधिक है। इसी समय तुर्की और पुर्तगाली के काफी शब्द बंगला में प्रवेश कर गए। तृतीय पर्व की भाषा, जिसे आधुनिक बंगला की संज्ञा से अभिहित किया जाता है, पर अंग्रेज़ी भाषा तथा साहित्य का प्रभाव है। इस में गदय और पदय दोनों में उच्च कोटि का पर्याप्त साहित्य उपलब्ध है।

आधुनिक बंगला में कम से कम ५ बोली-समूह हैं। इन में तीन बोली-समूह-उत्तरी बंगला, उत्तर-पूर्वी बंगला तथा पूर्वी बंगला—बंगला देश में बोले जाते हैं और दो बोली समूह—पश्चिमी बंगला तथा दक्षिण-पश्चिमी बंगला—पश्चिम बंगाल में बोले जाते हैं।

आधुनिक बंगला में बोलने का रूप लिखित साहित्यिक रूप से काफी भिन्न है। साहित्यिक भाषा को "साधु भाषा" कहा जाता है। मानक बंगला का बोली-रूप १९ वीं शताब्दी के मध्य से विकसित होने लगा था। यह कलकत्ता के आस-पास बोली जाने वाली पश्चिम-मध्य उपबोली पर आधारित है। साहित्य में इस बोलचाल की भाषा का प्रयोग इस शताब्दी के दूसरे दशक से आरंभ हुआ। इस को "चलित भाषा" कहा जाता है। आजकल साहित्य में भी "चलित भाषा" की लोकप्रियता ने "साधु" भाषा को पीछे खदेड़ दिया है।

हिंदी तथा बंगला दोनों ही आर्य भाषाएं हैं। प्रथम देवनागरी तथा द्वितीय बंगला लिपि में लिखी जाती हैं। दोनों भाषाओं का स्रोत संस्कृत व लिपियों का स्रोत ब्राह्मी लिपि है।

४.१ बंगला लिपि की वर्णमाला ईश्वरचंद्र विद्यासागर प्रणीत "वर्ण परिचय" प्रथम भाग के अनुसार इस प्रकार है :—

स्वर वर्ण :

অ	আ	ই	ঈ	উ	ঊ
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
ঋ	৯	এ	ঐ	ও	ঔ
ऋ	ऌ	ए	ऐ	ओ	औ

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

व्यंजन वर्ण :

ক	খ	গ	ঘ	ঙ
क	ख	ग	घ	ङ
চ	ছ	জ	ঝ	ঞ
च	छ	ज	झ	ञ
ট	ঠ	ড	ঢ	ণ
ट	ठ	ड	ढ	ण
ত	থ	দ	ধ	ন
त	थ	द	ध	न
প	ফ	ব	ভ	ম
प	फ	ब	भ	म
য	র	ল	ব	শ
य	र	ल	व	श
ষ	স	হ	ড়	ঢ়
ष	स	ह	ड़	ढ़
য়	ৎ	ং	ঃ	ঁ
य़	त्	ं	:	ँ

४.२ हिंदी व बंगला की वर्णमालाएं लगभग समान हैं। फिर भी निम्न अंतर द्रष्टव्य हैं :—

१. बंगला में दो अन्य वर्ण हैं—"য়" तथा "ৎ" जिनका प्रतिरूप हिंदी में नहीं है। प्रथम का उच्चारण [य़] है और द्वितीय का उच्चारण [त्] है।

२. संयुक्त वर्ण में जब "य" द्वितीय वर्ण होता है, तो हिंदी में "य" पूरा लिखा जाता है और पूर्व का वर्ण हलंत। किंतु बंगला में पूर्व का वर्ण पूरा लिखा जाता है और उसके बाद "य" वर्ण का एक उपवर्ण प्रयुक्त होता है, यथा—

सत्य	সত্য
सभ्य	সভ্য

३. हिंदी में "ए" तथा "ऐ" की मात्राएं वर्ण के ऊपर लगती है। बंगला में दोनों मात्राएं वर्ण के पूर्व लगती हैं, यथा—

के	কে
कै	কৈ

४. हिंदी में "ओ" और "औ" की मात्राएं वर्ण के ऊपर लगती है। बंगला में ये मात्राएं वर्ण के दोनों ओर लगती हैं, यथा—

को	কো
कौ	কৌ

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

५. चंद्र विंदु दोनों लिपियों में है। किंतु हिंदी में इसे वर्णमाला में स्थान नहीं मिला है। बंगला वर्णमाला में इसे अंत में लिखने की परंपरा है। दूसरे, 'आ' की मात्रा के साथ 'चंद्रविंदु' लिखने का तरीका दोनों लिपियों में थोड़ा भिन्न है, यथा— चाँद : চাঁদ । अर्थात हिंदी में चंद्रविंदु 'आ' की मात्रा के ऊपर लगता है, जब की बंगला मे यह 'आ' की मांत्रा के पूर्व आने वाले 'व्यंजन-वर्ण' के ऊपर।

६. हिंदी में अनुस्वार शिरोरेखा के ऊपर लगता है, जबकि बंगला में यह वर्ण के वाद लिखा जाता है, यथा-- वंश, सिंह : বংশ, সিংহ

७. संप्रति हिंदी में "ॡ" को प्रथक वर्ण के रूप में वर्णमाला में स्थान प्राप्त नहीं है। बंगला में इसके लिए एक वर्ण ही अलग है और वर्णमाला में यह 'ऋ' के वाद रखा जाता है।

८. हिंदी में "अं", "अः" स्वर के अंतर्गत 'औ' के वाद रखे जाते हैं। बंगला में उन्हें व्यंजन वर्णों के बाद रखा जाता है।

९. "ब" और "व" के लिए बंगला में एक ही वर्ण है, यद्यपि वर्णमाला के अंतर्गत यह संस्कृत वर्णमाला के अनुसार दोनों स्थानों पर लिखा जाता है, अर्थात प्रथम "फ" के बाद और द्वितीय "ल" के वाद।

१०. संयुक्त वर्ण "क्ष", "त्र", "ज्ञ", हिंदी में "ह" वर्ण के वाद वर्णमाला के अंतर्गत रखे जाते हैं, बँगला में नहीं। बंगला में "ह" के वाद "ड़", "ढ़" वर्ण आते हैं। हिंदी में ये वर्ण प्रयुक्त तो होते हैं, पर वर्णमाला में उन्हें स्थान नहीं मिला है।

११. हिंदी में वैकल्पिक वर्ण 'क़, ख़, ग़, ज़, फ़' हैं, जिनका बंगला में सर्वथा अभाव है। संप्रति बंगला में "ज़" का प्रयोग होने लगा है, पर यह सीमित है।

४.३ बंगला के स्वनिम :

स्वर :

ई, ए, ऐ, आ, ऑ, ओ, ऊ

व्यंजन :

	क्	ख्	ग्	घ्	ङ	
	च्	छ्	ज्	झ्		
	ट्	ठ्	ड्	ढ्		
	त्	थ्	द्	ध्	न्	
	प्	फ्	ब्	भ्	म्	
य्	र	ल्	व्	श्	ह्	ड़्

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

अनुनासिकता : ँ_

४.४ बंगला के कुछ वर्णों व वर्ण-समूह के स्वनात्मक मुल्य :

१. वर्णमाला में संध्यक्षर के लिए दो ही वर्ण हैं—"ऐ" तथा "औ"। डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या के अनुसार वोलचाल की बंगला में २५ स्वर संयोग व संध्यक्षर हैं, जो विभिन्न स्वर-वर्ण तथा "य़" की सहायता से लिखे जाते हैं।

२. शब्दांत "अ", यदि वह "ओ" का दयोतक न हो तो, या व्यंजन संयोग इसके पूर्व न हो, उच्चरित नहीं होता। व्यंजन संयोग के वाद इसका उच्चारण होता है, यथा—गोविंद = [गोविन्दॉ]

स्वर-संगति के कारण "अ" का उच्चारण प्रभावित हो जाता है। यदि इसके वाद "इ", "उ", "य", "क्ष" आता है तव इसका उच्चारण [ओ] हो जाता है, यथा–घड़ि = [घोड़ि] (=घड़ी), मधु = [मोधू], हत्या = [होत्ता] (=हत्या), रक्षा = [रोक्खा] (=रक्षा) आदि।

अर्धविवृत पश्च स्वर के रूप में "अ" वर्ण के दो उच्चारण हैं, एक ह्रस्व और दूसरा दीर्घ। प्रथम "जला" (=दलदल) आदि शव्दों में देखा जा सकता है और दूसरा "जल" आदि शव्दों में।

३. "इ, ई, यि, यी" वर्ण ह्रस्व या दीर्घ संवृत अग्र स्वर के दयोतक हैं।

४. "उ, ऊ, यु, यू" वर्ण ह्रस्व या दीर्घ संवृत पश्च स्वर के दयोतक हैं।

५. शव्द के प्रथम अक्षर में "ए" का उच्चारण प्राय: [ऐ] ही होता है, यथा—"वेला" = [वैला] (=दिन का समय), "मेला" = [मैला] (=मेला) आदि। किंतु यदि दूसरे अक्षर में "इ' आता है तो इसका उच्चारण [ए] होता है, यथा— [एक्टी] आदि। इस नियम के कुछ अपवाद भी हैं, यथा — "देना" =[दिना] (=उधार), "देवता" =[दिबता], आदि।

६. बंगला में स्वरों की मात्रा स्वनिमिक नहीं है। अत: वर्तनी व उच्चारण में वड़ा अंतर हैं।

७. वंगला में "ण" स्वनिम नहीं है। "ण" वर्ण को बंगाली "मूर्धन्य न" कहते हैं। यह/न/कि उपस्वन के रूप में मूर्धन्य व्यंजनों के पूर्व उच्चरित होता है।

८. "य" वर्ण [ज] उच्चरित होता है।

९. "य़" वर्ण [य] उच्चरित होता है।

१०. जैसा पूर्व में कहा जा चुका है कि "ब" और "व" के लिए वंगला में एक ही वर्ण है। इसका उच्चारण [व] होता है। किंतु संयुक्त व्यंजन में जब "व" दूसरा स्वन हो, तो इसके पूर्व व्यंजन का द्वित्व हो जाता है, यथा —ह्रस्व = [ह्रॉश्शॉ], सत्य = (शॉत्तॉ) आदि।

११. बंगला में / श / स्वनिम है, जिसके तीन उपस्वन हैं— [श, स, ष]। द्वितीय का उच्चारण दंत्य स्वनों तथा "र" के पूर्व होता है, तृतीय का मूर्धन्य व्यंजनों के पूर्व होता है तथा प्रथम का अन्यत्र।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

१२. "य", "म", "व" जिस व्यंजन के साथ रहते हैं, उच्चारण में उसी व्यंजन का द्वित्व हो जाता है। "य, म, व" का उच्चारण बिल्कुल नहीं होता, यथा—विद्या = [विद्दा], पद्म=[पॉद्दॉ], महात्मा=[मॉहत्ता], लक्ष्मण=[लॉक्खॉन], आत्मतत्व=[आत्ततत्तॉ], ईश्वरत्व=[इश्शॉररॉत्तॉ], आदि।

यदि "य" के पूर्व महाप्राण स्वन हो, तो उच्चारण में अल्पप्राण+महाप्राण हो जाता है, यथा—सभ्य=[सॉब्भॉ], धनाढ्य=[धॉनाड्ढॉ], आदि।

अपवादस्वरूप "जन्म, उन्माद" आदि शब्दों में "म" का उच्चारण होता है।

१३. "ह्य" का उच्चारण [ज्झ] होता है, यथा—वाह्य=[वाज्झॉ]।

१४. "क्ष" का उच्चारण शब्दारंभ में [ख] और अन्यत्र [क्ख] होता है, यथा—क्षुदा=[खुदा], शिक्षक=[शिक्खॉक], आदि।

१५. यदि व्यंजन के पूर्व "र", "ल" हो, तो उच्चारण में व्यंजन का द्वित्व हो जाता है, यथा—चक्र=[चॉक्क्रॉ], शुक्ल=[शुक्कलॉ], आदि।

१६. कुछ शब्दों में 'अनुस्वार' का उच्चारण [ङ] होता है, यथा—वा ं ला=[वाङला]। कुछ समय पूर्व तक के बंगला लेखन में 'अनुस्वार' के स्थान पर 'ङ' या 'ङग' (बंगला में संयुक्त वर्ण) का प्रयोग देखा जा सकता है।

४.५ व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का लिप्यंतरण :

तत्सम शब्द लगभग दोनों भाषाओं में समान लिखे जाते हैं, चाहे उनका उच्चारण दोनों में कितना ही भिन्न क्यों न हो। यहां उन्हीं शब्दों के लिप्यंतरण को लिया गया है, जो हिंदी से भिन्न हैं।

१. जिन नामों में हिंदी "ंग" या "ंग्" का प्रयोग करती है, वहां बंगला में "ं" (ं) का प्रयोग देखा जाता है, यथा—

हिंदी	बंगला
बांगला देश, पीकिंग,	वा ं ला देश, पिकि ं
दार्जिलिंग, इंग्लैंड	दार्जिलि ं, इ ं ल्याण्ड, आदि

२. हिंदी में 'ओ', 'ऑ', 'आ' और बंगला में इनके स्थान पर 'अ' के उदाहरण इस प्रकार हैं :—

हिंदी	बंगला
कोलंबू, टॉल्सटॉय, ~टाल्स्टाय ~तोल्सतोय	कलम्बो, टलस्टय
नारवे, निकोबार	नरओये, निकोबर
बोलिविया, मास्को, सायगोन ~सायगॉन	बलिभिया, मस्को, सायगान, आदि

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

टिप्पणी :

डॉ. चाटुर्ज्या के अनुसार १९ वीं शती तक जो अंग्रेजी नाम बंगला में आए, उनमें 'ऑ' आदि के लिए 'आ' वर्ण मिलता है, यथा—जार्ज्ज, जान, आदि ।

३. हिंदी में वर्ण "अ" और बंगला में वर्ण "आ" के उदाहरण इस प्रकार हैं—

हिंदी	बंगला
अफ़गानिस्तान, अरब	आफगानिस्तान, आरब
अलजीरिया, असम	आलजिरिया़, आसाम
अहमदनगर, आसनसोल	आहमदनगर, आसनसोल
इटली, कंबोडिया~-द-	इटाली, काम्बोदिया़
कटनी, कनाडा	काटनी, कानाडा
तमिलनाडु, पटना	तामिलनाडु, पाटना
बघेलखंड, बर्लिन	बाघेलखण्ड, बार्लिन
बलिया, बस्तर	बालिया, बास्तार
सहारा मरुस्थल	साहारा मरुभूमि, आदि

४. हिंदी में "ई" व "ऊ" तथा बंगला में क्रमश: "इ" व "उ" के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :—

हिंदी	बंगला
कोचीन, नैनीताल	कोचिन, नैनिताल
बीकानेर, बीजापुर,	बिकानेर, बिजापुर
हुगली, पुना	हुगलि, पुना, आदि

५. हिंदी में "औ" व "अऊ" तथा बंगला में क्रमश: "ओ" व "औ" के उदाहरण इस प्रकार हैं—

हिंदी	बंगला
बंगलौर : सऊदी अरब	बाङगलोर, सौदि आरब, आदि

६. हिंदी में "ऐ" के स्थान पर बंगला में "या़" या "आय़" के उदाहरण इस प्रकार हैं, यथा—

हिंदी	बंगला
जैकसन, मैक्समूलर	ज्याकसन, म्याक्समूलर
पैरिस, हैदराबाद	प्यारिस, हाय़द्राबाद, आदि

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

"land" में अंत होने वाले नाम हिंदी में "लैंड" द्वारा व वंगला में "ल्याण्ड" द्वारा लिखे जाते हैं, यथा—

हिंदी	वंगला
ग्रीनलैंड, थाईलैंड, पोलैंड	ग्रीनल्याण्ड, थाइल्याण्ड, पोल्याण्ड, आदि

७. हिंदी में "गढ़" में अंत होने वाले स्थान-नाम वंगला में "गड़" द्वारा लिखे जाते हैं, यथा—

हिंदी	वंगला
अलीगढ़, चित्तौरगढ़	आलिगड़, चितोरगड़, आदि

८. बिहार व वंगाल में प्रचलित एक "सरनेम" हिंदी में "सिंहा" लिखा जाता है तथा बंगला में "सि⌣हा" तथा "सिन्हा" दो प्रकार से लिखा जाता है। पंजावी नामों में प्रयुक्त "सिंग" हिंदी में "सिंह" लिखा जाता है किंतु वंगला में "सि⌣"। उदाहरणार्थ— "(सरदार इन्दर) सिंग" (पंजावी) को हिंदी में "सिंह" तथा वंगला में 'सि⌣' लिखा जाता है।

९. यदि तत्सम शव्दों का आद्य वर्ण "य" हो, तो दोनों भाषाओं में वर्ण तो यही रहता है, किंतु वंगला में इसका उच्चारण [ज] हो जाता है। यदि [य] स्वन वाले नाम विदेशी हैं, तो हिंदी में यह "य" वर्ण द्वारा लिखा जाता है और वंगला में इसका प्रतिस्थापन अधिकतर इस बात पर निर्भर करता है कि "य" के वाद कौनसा स्वन है। कुछ व्यतिरेकी उदाहरण इस प्रकार हैं :—

हिंदी	वंगला
यूरोप, न्यूयार्क	इउरोप, निउइयर्क
यूसुफ, यहूदी	इओसुफ, इहुदी
याक़ूब, याज़ीद	इया़कूब, एजिद
सैयद, विलायत	सेयद्, बिलात∼विलेत, आदि

१०. कुछ स्थान-नामों में जहाँ हिंदी में 'ज' वर्ण है, वहाँ वंगला में 'य', यद्यपि उच्चारण दोनों में समान है, यथा—

हिंदी	वंगला
जैसलमेर, जोधपुर	यशलमीर, योधपुर, आदि

११. कुछ स्थानों में हिंदी में "व" वर्ण आता है, वंगला में इसका प्रतिस्थापित वर्ण क्या होगा, यह निम्न वातों पर निर्भर है :—

(अ) तत्सम नामों में दोनों भाषाओं में "व" ही रहता है, यद्यपि बंगला में "व" और "व" के लिए एक ही वर्ण है और उसका उच्चारण [व] है, यथा— रवींद्रनाथ : रवीन्द्रनाथ।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

(आ) जो नाम हिंदी व वंगला ने अंग्रेजी के माध्यम से प्राप्त किए हैं (चाहे ये नाम भारतीय हों या विदेशी) और जिनमें "w" है, उनको हिंदी में "व" द्वारा तथा वंगला में "ओय़्" द्वारा लिखा जाता है, यथा––

(क) विदेशी नाम

अंग्रेजी	हिंदी	वंगला
Washington	वाशिंगटन	ओय़ाशि–ं टन
Wordsworth	वर्ड्सवर्थ	ओय़ार्ड्सओय़ार्थ
Sweden	स्वेडन	सुइडेन (अपवाद)

(ख) भारतीय नाम

हिंदी	वंगला
ग्वालियर, वरंगल	गोय़ालिय़र, ओय़ाराङ्गल
वरोरा, रीवा	ओय़रोरा, रेओय़ा, आदि

(इ) जो नाम हिंदी व वंगला ने अंग्रेजी के माध्यम से प्राप्त किए हैं (चाहे वे भारतीय हों, या विदेशी) और जिनमें "v" है, उनको हिंदी में "व" वर्ण द्वारा तथा वंगला में "भ" वर्ण द्वारा लिखा जाता है, यथा––

हिंदी	वंगला
वियना	भियेना
सोवियत संघ	सोभियट् साधारण तन्त्र, आदि

टिप्पणी :

१९ वीं शताब्दी के अंत तक वंगला उपन्यासों में "v" के लिए "व" वर्ण भी मिलता है, यथा— विक्टोरिय़ा, वर्ज्जिल, वल्टेयार, क्ल्विन (Clive), आदि।

(ई) जिन मुस्लिम नामों के आदय में "व" है, उनको वंगला में "अ" वर्ण द्वारा लिखा जाता है, यथा––

हिंदी	वंगला
वली, वाजिद	अली, अजेद, आदि

डॉ. चाटुर्ज्या के अनुसार वंगला में प्रथम शब्द के लिए "ओली" व "ओय़ालि" रूप भी मिलते हैं।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

टिप्पणी :

(१) वंगला "हाओड़ा" के "ओ" के लिए हिंदी में वर्ण "व" का प्रयोग होता है, यथा—हावड़ा।

(२) वंगला में कुछ नामों के दो-दो रूप भी चलते हैं, यथा—मौलभी~मौलवी, गजनभी~गजनवी, आदि।

१२. अंग्रेजी के माध्यम से प्राप्त होने वाले कुछ नाम हिंदी में "स्ट" द्वारा तथा वंगला में 'ष्ट" द्वारा लिखे जाते हैं, यथा—

हिंदी	वंगला
आस्ट्रेलिया, ऑस्टरिया	आष्ट्रेलिया, आष्ट्रिया, आदि

संप्रति बंगला में भी "स्ट" लिखने की प्रवृति वढ़ रही है।

१३. "र" के पूर्व व्यंजन के द्वित्व होने की प्रवृत्ति बंगला में पाई जाती है। इस कारण कुछ नामों के लेखन में दोनों भाषाओं में अंतर है, यथा—

अ—भारतीय

हिंदी	बंगला
धर्मताला, पार्वतीपुर, सूर्यप्रकाश	धर्म्मतला, पार्व्वतीपुर, सूर्य्य प्रकाश, आदि

आ—विदेशी

हिंदी	बंगला
अर्जेंटीना, जर्मनी, जार्ज	आर्ज्जेन्टिना, जार्म्मनी, जार्ज्ज, आदि

संप्रति इन नामों में एक ही व्यंजन लिखने की प्रवृति वढ़ रही है।

१४. हिंदी में कुछ नामों में वर्ण "र" आता है, वंगला में उसके स्थान पर "र" का एक उपवर्ण आता है, यथा—

हिंदी	बंगला
आगरा, हैदराबाद	आग्रा, हायद्राबाद

१५. कुछ समय पूर्व तक भारतीय भाषाओं ने दूसरी भाषाओं (देशी व विदेशी दोनों) के नाम अंग्रेजी के माध्यम से प्राप्त किए। यह स्थिति कुछ सीमा तक अभी भी चालू है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

उन नामों के शुद्ध उच्चारण न जानने के कारण अंग्रेजी से लिप्यंतरण करते समय विभिन्न भारतीय भाषाओं ने उन्हें विभिन्न ढंग से लिखा। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :—

(अ) अंग्रेजी के "t" व "d" वर्ण हिंदी व बंगला के क्रमशः "त" और "ट" व "द" और "ड" दो-दो स्वनों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसीलिए "t" व "d" के लिप्यंतरण में किसी एक ही भारतीय भाषा ने कुछ शब्दों में "त" व "द" का प्रयोग किया और कुछ शब्दों में "ट" व "ड" का। इस कारण हिंदी व बंगला में कुछ शब्दों के लिप्यंतरण में अंतर मिलता है, यथा—

हिंदी	बंगला
रतलाम, सूरत	राटलाम, सुराट
विशाखपटनम	विशाखापत्तनम्
मंडला, सूडान	मान्दला, सुदान, आदि

(आ) अंग्रेजी के माध्यम से प्राप्त होने के कारण "शिमला" को बंगला में "सिमला" लिखा जाता है, यदयपि हिंदी व बंगला में इस नाम का उच्चारण समान है। इसी प्रकार कुछ बंगला नाम अंग्रेजी के माध्यम से प्राप्त होने के कारण हिंदी में काफी भिन्न लिखे जाते हैं, यथा—

मूल बंगला रूप	अंग्रेजी में प्रचलित रूप	हिंदी में प्रचलित रूप
चट्टोपाध्याय	Chatterji	चटर्जी
ठाकुर	Tagore	टैगोर
दे	De	डे
बन्धोपाध्याय	Banerji	बनर्जी
बसु	Bose	वोस
मुखोपाध्याय	Mukerji	मुकर्जी, आदि

टिप्पणी :

(१) बंगला में ये सब "सरनेम" हैं।

(२) संप्रति कुछ बंगाली भी अपनी भाषा में 'वोस' आदि रूपों का प्रयोग करते हैं।

(३) संप्रति बोलचाल की बंगला में 'चट्टोपाध्याय', 'बन्धोपाध्याय', 'मुखोपाध्याय' आदि रूपों का प्रयोग नहीं होता। उच्चारण में इन का स्थान [चाटुज्जे], [बाड़ुज्जे], [मुखज्जे] आदि रूपों ने ले लिया है।

(४) संप्रति हिंदी में "चाटुर्ज्या", "ठाकुर", "वसु" रूप अधिक प्रचलित होने लगे हैं।

इनके अतिरिक्त भी बहुत से 'नाम' दोनों भाषाओं में भिन्न लिखे जाते हैं, जिसके कई कारण हैं तथा एक ही नाम के लिप्यंतरण में भिन्नता के एक से अधिक कारणों का

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

समावेश है। नमूने के तौर पर कुछ विशेष शीर्षों के अंतर्गत दोनों भाषाओं के कुछ व्यक्ति-वाचक संज्ञाओं के व्यतिरेकी उदाहरण प्रस्तुत हैं :—

(अ) व्यक्तियों के नाम

हिंदी	बंगला
अफ़लातून～प्लैटो	प्लातो～प्लेटो
ईसा, ईसाई	ख्रीष्ट, ख्रीष्टान
जवाहरलाल नेहरू, आशा पारेख	जहरलाल नेहरू, आशा पारिख
थामस～टामस, मौलाना अब्बुल कलाम आज़ाद	तामस～टामस, मओलाना～मोलाना आबुल कालाम आजाद
रानाडे	राणाडे, आदि

(आ) मुस्लिम त्योहार

मुहर्रम	महरम

(इ) भौगोलिक नाम

(क) महाद्वीप

अफ़्रीका, अमरीका～अमेरिका, एशिया	आफ्रिका, आमेरिका, आशिया～एशिया, आदि

(ख) सागर

हिंदी	बंगला
अटलांटिक महासागर	आटलान्टिक महासागर
हिंद महासागर	भारत महासागर
बंगाल की खाड़ी	वङ्गोप सागर
काला सागर～कृष्ण सागर	कारा सागर～कृष्ण सागर, आदि।

(ग) देश

हिंदी	बंगला
आयरलैंड, ईथ्योपिया	आया़रल्याण्ड, ईथिओपिया़
ईरान, यूगोस्लाविया	इराण, युगोश्लोभिया़
वेनेज्वेला, केन्या	भिनिजुये़ला, केनिया
पुर्तगाल, मिश्र～मिस्र	पुर्त्तगाल, मिशर
स्कैंडीनेविया, संयुक्तराज्य	स्क्याण्डिनेभिया़, युक्त राज्य, आदि

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

(घ) राज्य

हिंदी	वंगला
अंडमान (केंद्र शासित)	आन्दामान
आंध्रप्रदेश, उड़ीसा	अंध्रप्रदेश, ओड़िष्या~उड़िष्या
गुजरात, सिक्किम	गुजराट~त, सिकिम

(च) नगर

हिंदी	वंगला
अजमेर, इलाहावाद	आजमीर, एलाहावाद
कलकत्ता, काहिरा	कलिकाता, कायरो
जिनेवा, त्रिवेंद्रम	जेनेभा, त्रिवान्द्रम
नई दिल्ली, वंवई	नया दिल्लि~दिल्ली, वोम्बाई
वरेली, वुलंदशहर	वेरिली, वुलन्दसर~शहर
भुवनेश्वर, भोपाल	भूवनेश्वर, भूपाल
मद्रास, मुरादावाद, मैड्रिड	माद्राज, मोरादावाद, मादरिद
मैसूर, रंगून	महीशूर, रेङ्गून
लखनऊ, सिकंदरावाद	लक्ष्नौ~लखनउ, सेकेन्द्रावाद, आदि

टिप्पणी :

(१) कुछ समय पूर्व हिंदी में भी "भूपाल" लिखा जाता था।

(२) संप्रति हिंदी में "तिरुवनंतपुरम्" रूप भी लिखा जाता है। यह शब्द मलयालम में इसी प्रकार लिखा जाता है।

(ई) महीनों के नाम

(क) भारतीय

वंगला में तत्सम नामों का ही प्रचलन है। हिंदी के तद्भव नामों का जिक्र २.२२१. (इ-क) में किया जा चुका है। महीनों के नाम वंगला में "वैशाख" से आरंभ होते हैं और हिंदी में 'चैत' से। दूसरे, हिंदी के "कातिक" व "अगहन" के लिए वंगला में "कार्त्तिक" व "अग्रहायन" रूपों का प्रचलन है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

(ख) विदेशी

हिंदी	बंगला
जनवरी, फरवरी	जानुयारी, फेब्रुयारी
अप्रैल, मई	एप्रिल, मे
जून, जुलाई	जुन, जुलाइ
अगस्त, सितंबर	आगष्ट, सेप्टेम्बर
अक्तूबर, नवंबर	अक्टोबर, नभेम्बर
दिसंबर	डिसेम्बर

"मार्च" दोनों भाषाओं में समान लिखा जाता है।

४.६ हिंदी व बंगला में आगत शब्दों का लिप्यंतरण :

जैसा पूर्व में कहा जा चुका है कि भारतीय भाषाओं में आगत शब्दों में अरबी-फारसी तथा अंग्रेजी शब्दों की संख्या सबसे अधिक है। अरबी-फारसी के अधिकतर शब्द भारतीय भाषाओं में घुलमिल गए हैं और उनका विदेशीपन केवल भाषाविशेषज्ञ ही जान सकते हैं। नव आगत शब्द भारतीय भाषाओं में या तो अंग्रेज़ी के हैं या यदि अंग्रेज़ी-इतर भाषाओं के भी हैं, तो भी वे हमें (कुछ अपवादों को छोड़ कर) अंग्रेजी के ही माध्यम से प्राप्त हुए हैं। यहां हम अंग्रेज़ी से आगत-शब्दों की प्रवृत्ति पर व्यतिरेकी दृष्टि से विचार करेंगे। सबसे अधिक भेद स्वरों के लिप्यंतरण में दिखाई देता है। अंग्रेज़ी में वर्तनी और उच्चारण में बहुत बड़ी खाई है। यदि मूल उच्चारण का पता न हो, तो वर्ण के प्रचलित उच्चारण को ही दूसरी भाषा के लोग ग्रहण करते हैं। यह ग्रहण दोनों भाषाओं में भिन्न हो सकता है। यह भी हो सकता है कि कुछ शब्दों का उच्चारण किसी एक भाषा में मूल भाषा के निकट हो और कुछ अन्य शब्दों का उच्चारण किसी दूसरी भाषा में मूल भाषा के उच्चारण के निकट हो। कुछ शब्द दोनों भाषाओं में समान लिखे जाते हैं, क्योंकि कुछ अंग्रेज़ी स्वनों का लिप्यंतरण हिंदी व बंगला में समान वर्णों द्वारा किया जाता है। अंग्रेजी संध्यक्षर "एँइ, ओउँ, आइ, आउ, ऑअ" (अंग्रेजी में इसका वैकल्पिक उच्चारण "दीर्घ ऑ" भी है) हिंदी व बंगला में क्रमश: "ए, ओ, आइ, आउ (औ), ओ" वर्णों द्वारा लिखे जाते हैं, यथा—फेल, मेल, ट्रेन, जेल, रोड, बोट, टाइम, टाइप, फाइन, हाउस, टाउन, काउन्सिल, फाउल, आउट, स्टोर (बंगला में 'ष्टोर' भी) आदि। १९ वी शताब्दी में बंगला में [*au*] के लिए "औ" वर्ण का भी प्रयोग होता था, यथा—'हौस, टौनहाल' आदि। किंतु संप्रति 'हाउस, टाउन' ही प्रचलित हैं। हिंदी में कुछ लोग 'कौंसिल' आदि रूप लिखते हैं।

अब हिंदी व बंगला में अंग्रेज़ी से आगत शब्दों के लिप्यंतरण की व्यतिरेकी स्थिति पर विचार किया जा रहा है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

१. अंग्रेज़ी स्वन ह्रस्व व दीर्घ "ऑ" [ɔ, ɔ:] दोनों के लिए हिंदी में "ऑ" वर्ण का और वंगला में "अ" वर्ण का प्रयोग होता है। हिंदी में इसके लिए "आ" वर्ण का भी प्रयोग होता है। उदाहरणार्थ :—

हिंदी	वंगला
कॉलेज, लॉ, ऑफ	कलेज, ल, अफ
ऑमलेट, ऑटो	अमलेट~मामलेट, अटो, आदि

टिप्पणी :

(१) अंग्रेजी में "of" के उच्चारण [अव्, व्, फ़्] हैं।

(२) १९ वीं शताब्दी के अंत तक अंग्रेजी के इस स्वन के लिए बंगला में "आ" वर्ण का प्रयोग होता था। इसीलिए अंग्रेज़ी से आगत उन शब्दों में जो वंगला ने उस समय ग्रहण किए, "आ" वर्ण पाया जाता है, यथा—

हिंदी	वंगला
ऑफिस, कॉपी, कार्क	आपिस~आफिस, कापि, काक
कार्निस, डॉक्टर, पॉलिश	कार्निश, डाकतार, पालिश
बॉक्स, लाट~लार्ड, हॉल	बाक्स, लाट, हाल, आदि

२. अंग्रेजी के ह्रस्व व दीर्घ 'अ' [ə, ə:] स्वनों के लिए हिंदी में "अ" वर्ण का और वंगला में 'आ' वर्ण का प्रयोग होता है, यथा—

हिंदी	वंगला
वर्थ, रिवॉल्वर	बार्थ, रिभलवार
शर्ट, सर्ज, लेटर	शार्ट, सार्ज्ज, लेटार, आदि

३. अंग्रेजी का अगोलित पश्च अर्ध विवृत स्वर [अ̱] हिंदी में 'अ' वर्ण द्वारा और वंगला में "आ" वर्ण द्वारा लिखा जाता है, यथा—

हिंदी	वंगला
बस, बल्ब	बास, बाल्ब, आदि

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

४. अंग्रेजी का अग्र अर्धविवृत स्वर [æ] हिंदी में 'ऐ' तथा वंगला में 'य़ा' द्वारा लिखा जाता है, यथा—

हिंदी	वंगला
कैरम, फैशन, बैंक	क्य़ारम, फ्य़ाशन, व्य़ाङ्क
स्नैक्स, हैंगर, हैंडलूम	स्नय़ाक्स, ह्य़ाङ्गर, ह्य़ाण्डलुम, आदि

५. अंग्रेजी के संध्यक्षर [ऐँअ] ([ɛə]) के लिए हिंदी में "एय" तथा वंगला में "एय़ा" लिखा जाता है, यथा—

हिंदी	वंगला
चेयर, शेयर	चेय़ार, शेय़ार, आदि

कुछ समय पूर्व वंगला में 'च्य़ार, श्य़ार' रूप भी मिलते थे।

६. अंग्रेजी से आगत कुछ शब्दों में स्वरभक्ति के उदाहरण मिलते हैं। इस संबंध में हिंदी में दो प्रवृत्तियां हैं। प्रथम स्वरभक्ति वर्तनी में नहीं दर्शाई जाती वरन् उच्चारण में है। द्वितीय, स्वरभक्ति न वर्तनी में है और न उच्चारण में। वंगला में स्वरभक्ति के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं, यथा—

हिंदी	वंगला
	स्वरभक्ति आदि में :
स्कूल, स्टेशन	इस्कुल, इष्टिशन~इष्टेशान
स्टैंप, स्प्रिंग	इष्ट्य़ाम्प, इस्पिरिङ्~इस्प्रिङ्, आदि

संप्रति बंगला में "स्कुल, स्टैम्प, स्टेशन, स्प्रिङ्" रूप अधिक प्रचलित हो रहे हैं।

	स्वरभक्ति शब्दांत में :
बेंच, लिस्ट	बेञ्चि, लिष्टि, आदि

संप्रति बंगला में "बेन्च, लिस्ट" रूप अधिक प्रचलित हो रहे हैं।

	स्वर भक्ति मध्य में :
इंस्पेक्टर, टेलीग्राफ़, ट्रेन	इनेस्पेक्टार, टेलिगेराफ, टेरेन
प्लेग, ब्रश, स्लेट	पेलेग, बुरुष~बुरुश, सिलेट~सेलेट, आदि

संप्रति बंगला में "इन्सपेक्टार, टेलिग्राफ, ट्रेन, प्लेग, ब्रश, स्लेट" रूप अधिक प्रचलित हो रहे हैं। कुछ समय पूर्व हिंदी में भी "बुरुश" रूप चलता था।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

७. अंग्रेज़ी के वर्त्स्य स्पर्श [t, d] हिंदी व बंगला दोनों में क्रमशः "ट" व "ड" वर्णों द्वारा लिखे जाते हैं, फिर भी कुछ शब्दों में इसके स्थान पर "त, द" रूप भी मिलते हैं, यथा—

हिंदी	बंगला
ट्रेज़री, डॉक्टर	तेरेजुरी, डाक्तार
हास्पिटल, अस्पताल	हाँसपाताल, आदि

आजकल बंगला में "ट्रेजारी" रूप भी प्रचलित हो रहा है।

८. बंगला में कुछ शब्दों में "ड" के पूर्व "र" लुप्त हो गया है, जबकि हिंदी में यह लिखा जाता है। मानक अंग्रेज़ी उच्चारण में तो व्यंजन के पूर्व "र" वैसे ही अनुच्चरित रहता है। उदाहरणार्थः—

हिंदी	बंगला
बोर्ड, लार्ड	बोड, लाट, आदि

संप्रति बंगला में "बोर्ड" भी लिखा जाता है। दूसरे, हिंदी में भी "लाट" रूप मिलता है, यथा—"वह बड़ा लाट साहब है"।

९. "st" के लिए हिंदी में "स्ट" और बंगला में "ष्ट" मिलता है, यथा— स्टोर : ष्टोर। संप्रति बंगला में भी "स्ट" लिखने की प्रवृति बढ़ रही है।

१०. अंग्रेज़ी के वर्त्स्य तथा तालव्य संघर्षी स्वनों के लिए हिंदी में "ज़" या "ज" वर्णों का प्रयोग तथा बंगला में "ज" वर्ण का प्रयोग किया जाता है, यथा—

हिंदी	बंगला
ज़ेब्रा, ज़ुलू (दक्षिण अफ्रीका की एक जाति)	जेब्रा, जुलु
मेज़र ग्लास	मेजार ग्लास, आदि

११. अंग्रेजी के अघोष दंतोष्ठ्य संघर्षी स्वन [फ़] के लिए हिंदी में "फ़" या "फ" का तथा बंगला में साधारणतया "फ" वर्ण का प्रयोग किया जाता है। बंगला में "फ" का उच्चारण कुछ शब्दों में दंतोष्ठ्य संघर्षी हो जाता है। स्वर-मध्य तथा अंतिम स्थिति में यह "प" भी हो जाता है और तदनुसार लिखा भी जाता है, यथा—

हिंदी	बंगला
ऑफ़िस, हॉफ़	आपिस, हाप, आदि

संप्रति बंगला में इन स्थानों पर "फ" भी लिखा जाने लगा है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

१२. अंग्रेजी के [ङ] स्वन में अंत होने वाले, जो वर्तनी में "ng" द्वारा लिखे जाते हैं, शब्दों को हिंदी में "अनुस्वार + ग" द्वारा तथा वंगला में केवल अनुस्वार द्वारा लिखा जाता है, यथा—

हिंदी	वंगला
विल्डिग	विल्डिं, आदि

१३. अंग्रेज़ी के घोष दंत्योष्ठ्य संघर्षी स्वन [v] को हिंदी में "व" वर्ण तथा वंगला में "भ" वर्ण द्वारा लिखा जाता है, यथा—

हिंदी	वंगला
वोल्ट, वॉलीवॉल, स्टोव	भोल्ट, भलिवल, स्टोभ, आदि

१९ वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में अंग्रेज़ी के इस स्वन को वंगला में "व" वर्ण द्वारा ही लिखा जाता था, यथा—वार्निश, गवरनर~गवर्नर आदि।

१४. अंग्रेज़ी के घोष द्वयोष्ठ्य अर्धस्वर [w] के लिए हिंदी में "व" वर्ण का प्रयोग होता हैं। वंगला में इस स्वन का प्रतिस्थापन किस वर्ण द्वारा होगा, यह इस वात पर निर्भर करता है कि इसके वाद कौन सा स्वर आता है। यदि "w" के वाद पश्च स्वर हो, तो यह लुप्त हो जाता है, यथा—

हिंदी	वंगला
वूल, वुड पेंसिल	उल, उड~उट, पेन्सिल, आदि

यदि "w" के वाद [इ] स्वर हो तो वंगला में यह "उ" द्वारा लिखा जाता है, यथा—

विल	उइल, आदि

अन्यत्र यह "ओय़" द्वारा लिखा जाता है, यथा—

वर्कशॉप, वैगन, रेलवे	ओयर्कशप, ओयागन, रेलओये, आदि

१५. इनके अतिरिक्त वहुत से अंग्रेज़ी से आगत शब्द हिंदी व वंगला में भिन्न लिखे जाते हैं, जिसके कई कारण हैं तथा एक ही शब्द के लिप्यंतरण में अंतर के एक से अधिक कारणों का समावेश है। इन में कुछ शब्द ऐसे भी हैं, जो भाषा में पूर्णतः समीकृत हो गए हैं और कुछ अंशतः। इन सब के मिले-जुले उदाहरण हिंदी वर्णानुसार यहां प्रस्तुत हैं :—

हिंदी	वंगला
अर्दली, इंश्योरेंस, एटलस, एजंसी	आर्द्‌दली, इन्सियोरेन्स, एयाटलास~एटालास, एजेन्सि~सी
कंपनी, कलेक्टर, काउन्सेल (counsel)	कोम्पानि, कालेक्टार, कौंसुली

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

हिंदी	वंगला
केबिल, गवर्नर जनरल, चॉकलेट	केवल, गबर्नर जन्दराल, चकोलेट~चकलेट
चिमनी, टाकीज़, टॉवर	चिमनि, टकिज, टोओयार~टाओयार
टिकट, टेबुल~टेबिल~टेबल	टिकिट, टेबिल,
टेलीफोन~-लि-, टेलीविज़न~-लि-, डॉक्टर~डाक्टर	टेलिफोन~टेलिफों, टेलिभिशन, डाक्टार (डॉक्ट्रेट डिग्री वालों के लिए प्रयुक्त) ~डक्टर
डिप्टी, डिवीज़न, डिलक्स~डीलक्स	डेपुटी, डिभीशन, डिलुक्स
दर्जन, नैशनल, पेंट	डजन, न्याशनाल, पेइण्ट
पुलिस, पैसेंजर, प्रायवेट~प्राइवेट	पोलिस~पुलिस, प्यासेञ्जार, प्राइभेट
फासीवाद, बॉडी, मलेरिया	फ्यासिवाद, बाडि~वडि, मेलेरिया
मास्टर, रबर~रबड़	माष्टार~मास्टार, रबार
राइफल, रिक्शा~रिक्षा	राइफेल, रिक्सा~शा
लाइसंस, लालटेन, लेफ्टीनेन्ट	लाइसेन्स, लण्ठन, लेफ्टेनाण्ट~नेन्ट
वैराइटी, शमीज़, साइरन	भ्याराइटि, शोमिज, साइरेन
सीट, सुपरिंटेंडेंट, सूट	सिट, सुपरिण्टेण्डेण्ट, स्यु्ट
स्कूटर, स्टेशनरी, स्वीट	स्कुटार, स्टेशनारि, सुइट
हाईकोर्ट, हाइफ़न	हाइकोट~कोर्ट, हाइफेन
होमियोपैथी, होटल	होमियोपाथी, होटेल, आदि

टिप्पणी :

अंग्रेज़ी की पुस्तकों के शीर्षकों आदि में "the" और "and" के लिप्यंतरण की व्यतिरेकी स्थिति इस प्रकार है :—

हिंदी	वंगला
द~दि~दी, एंड	द्य, अयान्ड~एन्ड

आजकल सभी भारतीय भाषाओं में अधिकतर शिक्षित लोगों द्वारा अंग्रेजी शब्दों को उन के मूल उच्चारण के अनुसार (जहाँ तक संभव होता है) लिखने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इसीलिए आधुनिक साहित्य में कुछ आगत शब्द एक से अधिक वर्तनियों में लिखे मिलते हैं।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

पंचम अध्याय

हिंदी : उर्दू

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

५. हिंदी तथा उर्दू

५.१ उर्दू भाषा :

तुर्की भाषा में उर्दू का अर्थ "बाज़ार" है। आरंभ में उर्दू बाज़ारू भाषा ही थी। बाद में उर्दू शाही दरबार से गौरव प्राप्त कर उच्च कोटि की साहित्य रचना का माध्यम बनी। हिंदी तथा उर्दू दोनों भाषाओं का आधार खड़ी बोली है। अत: उद्‌गम की दृष्टि से दोनों सगी बहनें हैं। "विकसित होने पर इन दोनों में जो अंतर हुआ उसे रूपक में यों कह सकते हैं कि एक तो हिंदुआनी बनी रही और दूसरी ने मुसलमान धर्म ग्रहण कर लिया।" "ऐतिहासिक दृष्टि से साहित्यिक खड़ी बोली हिंदी की अपेक्षा खड़ी बोली उर्दू का व्यवहार पहले होने लगा था"[१] उर्दू का साहित्य में प्रयोग दक्षिण के सूफी संतों व लेखकों और मुसलमान दरबारों से आरंभ हुआ।

व्याकरणिक दृष्टि से हिंदी तथा उर्दू में बहुत अंतर नहीं है। किंतु साहित्यिक वातावरण, शब्द समूह तथा लिपि में आकाश-पाताल का अंतर है। इसका मुख्य कारण यह है कि हिंदी की प्रेरणा का स्रोत मुख्यतया संस्कृत व भारतीय संस्कृति है। "उर्दू भारत के वातावरण में उत्पन्न होने और बढ़ने पर भी ईरान और अरब की सभ्यता और साहित्य से जीवन-श्वास ग्रहण करती है।"[२]

उर्दू का जोश, नज़ाक़त और बांकापन प्रसिद्ध है। "मीर" और "ग़ालिब" की दार्शनिक ग़ज़लें और नज़्में, "दाग़" और "इन्शा" के शेरों का चुलबुलापन, "जोश मलीहाबादी" की इंक़िलाबी ग़ज़लें, "कृष्णचंद्र" के व्यंग्य भारतीय साहित्य का गौरव हैं। "इक़बाल" का "सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा" स्वतंत्रता से पूर्व देश-भक्तों का प्रेरणा-स्रोत रहा है। आर्य समाज का काफ़ी साहित्य उर्दू में है। पाकिस्तान बनने पर डी. ए. वी. कालेज (दयानंद एंग्लोवैदिक कालेज) लाहौर के जलाए जाने के कारण यह साहित्य काफ़ी नष्ट हो गया। पाकिस्तान बनने से तथा कुछ मुस्लिम नेताओं की ग़लत नीतियों के कारण भारत में स्वतंत्रता के बाद उर्दू को काफ़ी हानि हुई। स्वतंत्रता से पूर्व निज़ाम हैदराबाद में एम. बी. बी. एस. और इंजीनियरिंग की परीक्षा का माध्यम भी उर्दू था।

स्वतंत्रता के एकदम बाद भारत में उर्दू का प्रचलन कम हो गया। अब धीरे धीरे इसका प्रचलन बढ़ रहा है। सिनेमा के कारण भी उर्दू को काफ़ी लाभ हुआ है। किंतु आजकल उर्दू साहित्य को देवनागरी लिपि में पढ़ने वालों की संख्या बढ़ रही है। कुछ विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी व उर्दू दोनों को साथ-साथ पढ़ाया जाता है।

हिंदी उर्दू में इतना साम्य है कि कुछ लोग इन्हें एक ही भाषा की दो शैलियां मानते हैं। दोनों के बहुत से शब्द समान हैं। बोलचाल में दोनों भाषाएं अधिक निकट हैं। लेखन में हिंदी का झुकाव संस्कृत की ओर तथा उर्दू का अरबी-फ़ारसी की ओर हो जाता है। विषय के चयन के कारण इसका विपरीत भी हो सकता है जब राष्ट्रपति "फ़खरुद्दीन

१. 'हिंदी भाषा का इतिहास', पृ. ६१।
२, वही, पृ. ६०।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

अली अहमद" की मृत्यु हुई, तो आकाशवाणी के हिंदी बुलेटीन ने भी उनके संदर्भ में 'इंतक़ाल हो गया' का प्रयोग किया, न कि 'स्वर्गवास हो गया' का। इसके विपरीत उर्दू के महाकवि "इक़बाल" ने कुछ पदचों में बहुत से ऐसे तत्सम या तद्भव शब्दों का प्रयोग किया है, जिनके लिए साधारणतया उर्दू में अरबी–फ़ारसी से गृहीत शब्द ही प्रयुक्त होते हैं।

५.२ उर्दू लिपि :

उर्दू भारतीय आर्य भाषा होते हुए भी एक विदेशी लिपि में लिखी जाती है। इस लिपि को अरबी-फ़ारसी कहते हैं। वास्तव में अरबी लिपि में २८ वर्ण हैं, जो ३२ व्यंजन, ९ मूल स्वर व ४ संयुक्त स्वरों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सातवीं ईसवी में जब अरबों ने ईरान को पराजित कर ईरानी धर्म व सभ्यता के स्थान पर इस्लाम धर्म व अरबी सभ्यता को स्थानापन्न किया तो बड़ी संख्या में अरबी शब्द-समूह लेने के साथ-साथ फ़ारसी भाषा अरबी लिपि में लिखी जाने लगी। फ़ारसी के लिए व्यवहृत होने पर अरबी वर्णों के उच्चारण तथा संख्या दोनों में अंतर करना पड़ा। अरबी वर्णों की संख्या फ़ारसी में ३२ कर दी गई, क्योंकि फ़ारसी में चार नए स्वन थे, जो अरबी में मौजूद नहीं थे।

१२०० ई. के पश्चात जब मुसलमान विजेताओं के साथ–साथ अरबी और फ़ारसी भाषा तथा अरबी-फ़ारसी लिपि का प्रचार भारत में हुआ, तब भारतीय भाषाओं के शब्दों को लिखने के लिए अरबी-फ़ारसी लिपि में कुछ परिवर्तन करने पड़े। मूर्धन्य स्वनों के लिए तीन नए वर्ण बढ़ाए गए (टे, डाल और अड़े)। इस प्रकार मूल अरबी लिपि के आधार पर निर्मित वर्तमान उर्दू लिपि में वर्णों की संख्या ३५ है।

५.३ उर्दू के वर्ण तथा उनका स्वनात्मक मूल्य :

वर्ण	वर्ण का नाम (उर्दू उच्चारण में)	स्वनात्मक मूल्य (उर्दू में)
ا	अलिफ़	अ
ب	बे	ब्
پ	पे	प्
ت	ते	त्
ٹ	टे	ट्
ث	से	स्
ج	जीम्	ज्
چ	चे	च्
ح	हे	ह्
خ	ख़े	ख़्
د	दाल्	द्
ڈ	डाल्	ड्

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

वर्ण	वर्ण का नाम (उर्दू उच्चारण में)	स्वनात्मक मूल्य (उर्दू में)
ذ	ज़ाल्	ज़्
ر	रे	र्
ڑ	अड़े	ड़्
ز	ज़े	ज़्
ژ	तीन नुक़्ते वाली 'ज़े' [1]	ज़्/झ़्
س	सीन्	स्
ش	शीन्	श्
ص	स्वाद्	स्
ض	ज़्वाद्	ज़
ط	तोय्	त्
ظ	ज़ोय्	ज़्
ع	ऐन्	अ/आ
غ	ग़ैन्	ग़्
ف	फ़े	फ़्
ق	क़ाफ्	क़्
ک	काफ़्	क्
گ	गाफ़्	ग्
ل	लाम्	ल्
م	मीम्	म्
ن	नून्	(१) न्, यथा— ناک =नाक (२) ङ, यथा— پنکھ =पङ्ख (३) ञ्, यथा— گنجا =गञ्जा (४) ण्, यथा— ٹھنڈا =ठण्डा (५) म्, यथा— گنبد =गुम्बद (६) ँ, यथा— چاند =चाँद
و	वाओ	(१) व्, यथा— وہ =वह (२) उ, यथा— خود =ख़ुद
ہ	हे	ह्
ھ	दो चश्मी हे	ह्
ی	छोटी ये	(१) य, यथा— یار =यार (२) ई, यथा— گیت =गीत
ے	बड़ी ये	य्

१. कुछ क्षेत्रों में इस वर्ण को 'झ़े' भी कहते हैं और कुछ क्षेत्रों में 'ये' भी।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

उपर्युक्त वर्णों के अतिरिक्त उर्दू में प्रयुक्त कुछ अन्य विशेपक-चिह्न इस प्रकार हैं :—

(१) ज़ेर :—इसको 'कस्र' भी कहते हैं। यह वर्ण के नीचे प्रयुक्त होता है, यथा— "اِ" =[इ]।

(२) ज़बर :—इसको "फ़ता" भी कहते हैं। यह वर्ण के ऊपर लगाया जाता है, यथा— "اَ" =[अ]।

(३) पेश :—यह भी वर्ण के ऊपर लगाया जाता है, यथा— "اُ" =[उ]।

(४) तन्वीन :—इसका चिह्न है "اً"। इसका उच्चारण [न्] होता है, यथा— فوراً =फ़ौरन।

(५) जज़्म: :—इस का चिह्न है "ْ"। यह वर्ण के ऊपर लगाया जाता है। यह हलंत का द्योतक है, यथा— جزْم = जज़्म। इसका प्रयोग शब्दांत में नहीं होता।

(६) तश्दीद :— इसका चिह्न है "ّ"। यह जिस वर्ण के ऊपर लगता है, उच्चारण में उसका द्वित्व हो जाता है, यथा— کتّا =कुत्ता। इसका प्रयोग भावार्थक संज्ञा के 'ना' के लिए नहीं होता, यथा—جاننا = जानना।

(७) हम्ज़ा अलिफ़ या हम्ज़ा :— इसका चिह्न है "ء"। इसके उच्चारण के विषय में स्थान–स्थान पर वर्णन किया जाएगा, क्योंकि यह कई स्वनों का प्रतिनिधित्व करता है।

(८) वस्ल :— इसका चिह्न है "ﺻ"। उर्दू में इसका प्रयोग अरबी आर्टिकल "ال" के "ا" के ऊपर होता है, यथा— بالکل = बिल्कुल। जिस वर्ण के ऊपर यह लगता है, उसका उच्चारण नहीं किया जाता।

(९) मद्द :—यह उर्दू के प्रथम वर्ण "अलिफ़" के ऊपर प्रयुक्त होता है और [आ] का द्योतक होता है, यथा— آدمی = आदमी।

(१०) अलिफ़–इ–मक़्सूरा :— इसका चिह्न है "ی"। यह उच्चारण में [आ] का द्योतक है, यथा— دعوی =दावा।

(११) नून ग़ुन्ना :— उर्दू वर्ण 'नून' में जब नुक़्ता नहीं लगाया जाता, तो वह "नून ग़ुन्ना" कहलाता है। यह अनुनासिकता का द्योतक है, यथा—وہاں = वहाँ। शब्द के मध्य में यह दूसरे प्रकार से लिखा जाता है, यथा —چاँند = चाँद।

५.४ उर्दू वर्ण संबंधी कुछ अन्य विशेषताएं :

१. उर्दू वर्णमाला में सब स्वरों को व्यक्त करने के लिए वर्ण नहीं हैं। अतः स्वरों को व्यक्त करने के लिए एक जटिल प्रक्रिया का सहारा लेना पड़ता है। यहां इस प्रक्रिया को सरलीकृत ढंग से प्रस्तुत किया जा रहा है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

यदि स्वर आरंभ में आए, तो सब स्वरों के लिए अन्य चिह्न के साथ "अलिफ़" का प्रयोग अवश्य होता है, अन्यथा केवल चिह्न से ही स्वर प्रकट किया जा सकता है, यथा—

स्वर	चिह्न का नाम	चिह्न: शब्दारंभ	चिह्न: अन्यत्र	उदाहरण	हिंदी लिप्यंतरण
अ	ज़बर	آ	َ	بَس، آنار	अनार, वस
	(शब्दांत में "हे" द्वारा भी)		ـہ	کھنّہ	खन्ना
आ	मद्द	آ	ا	کام، آم	आम, काम
इ	ज़ेर	اِ	ِ	شِکار، اِملی	इमली, शिकार
	इये		ی	وِدیشا	विदिशा
ई	ज़ेर+इये	ای	ی	میت، اینٹ	ईंट, मीत
	हम्ज़ा+इये		ئی	بھائی، گئی	गई, भाई
उ	पेश	اُ	ُ	پُل، اُلّو	उल्लू, पुल
	वाओ	—	و	خود، خوش	खुश, खुद
ऊ	उलटा पेश[1] + वाओ	اُو	ُو	آہُوجہ، اُون	ऊन, आहूजा
ए	इये	ای	ی	ریت، ایک	एक, रेत
	हम्ज़ा+इये	—	ئے	ہوئے، گئے	गए, हुए
	ज़ेर		ِ	مالکِ مکان	मालिके-मकान,
				سنگِ دل	संगे-दिल

टिप्पणी :

"ज़ेर" का प्रयोग [ए] स्वन के लिए केवल षष्ठी-तत्पुरुष समास में होता है।

ऐ	ज़बर+इये	آی	َی	غَیر، آیسا	ऐसा, ग़ैर
ओ	वाओ	او	و	موٹا، اوس	ओस, मोटा
	हम्ज़ा+वाओ	—	ؤ	کھاؤ، جاؤ	जाओ, खाओ

टिप्पणी :

عہدہ (ओहदा) आदि शब्दों में बिना "वाओ" के [ओ] का उच्चारण होता है।

औ	ज़बर+वाओ	آو	َو	مَوت، آور	और, मौत

नित्य-प्रति के लेखन में "ज़बर, ज़ेर" और "पेश" का प्रयोग नहीं किया जाता। इस प्रकार तीन ह्रस्व स्वरों का भेद लेखन में नहीं दिखाया जाता। अतः उर्दू-इतर भाषियों को उर्दू पढ़ना बहुत कठिन लगता है।

१. कुछ क्षेत्रों मे इस के लिए भी 'पेश' का ही प्रयोग किया जाता है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

२. अरबी-फ़ारसी लिपि में तीन चिह्न बढ़ा लेने के बाद भी उर्दू लिपि अपने समस्त स्वनों को लिखने में असमर्थ रही। अतः संयुक्त चिह्नों का प्रयोग अनिवार्य हो गया। उर्दू के महाप्राण स्वन अल्पप्राण स्वनों के द्योतक वर्णों में "दो चश्मी हे" लगाकर प्रकट किए जाते हैं, यथा—

ख= کھ, घ= گھ, छ= چھ, झ= جھ

ठ= ٹھ, ढ= ڈھ, थ= تھ, ध= دھ

फ= پھ, भ= بھ।

इसके बाद भी उर्दू में [ङ], [ञ], [ण] स्वनों को प्रकट करने की क्षमता नहीं है।

३. कुछ वर्णों या चिह्नों का प्रयोग केवल अरबी-फ़ारसी से आगत शब्दों के लिए किया जाता है, यदयपि इनका मूल उच्चारण उर्दू भाषी नहीं करते। परिणामस्वरूप कुछ वर्ण समान रूप से उच्चरित होते हैं, यथा—

वर्ण का उर्दू नाम	वर्ण	उर्दू भाषी द्वारा उच्चारण	अरबी या फ़ारसी में उनका उच्चारण
से	ث	स्	अघोष दंत्य संघर्षी (अरबी)
सीन	س	स्	अघोष वर्त्स्य संघर्षी
स्वाद	ص	स्	अघोष मृदु तालव्य रंजित, वर्त्स्य संघर्षी (अ.)
ज़ाल	ذ	ज़्	घोष दंत्य संघर्षी (अ.)
ज़े	ز	ज़्	घोष वर्त्स्य संघर्षी (अ.)
तीन नुक़्तों की 'ज़े'	ژ	ज़्	घोष तालव्य संघर्षी (फ़ारसी)
ज़्वाद	ض	ज़्	घोष मृदु तालव्य रंजित वर्त्स्य संघर्षी (अ.)
ज़ोय	ظ	ज़	घोष मृदु तालव्य रंजित दंत्य संघर्षी (अ.)
हे	ح	ह्	अघोष ग्रसन्य संघर्षी (अ.)
हे	ہ	ह्	श्वासद्वारीय संघर्षी (अ.)
दो चश्मी हे	ھ	ह्	
ते	ت	त्	अघोष दंत्य स्पर्श
तोय	ط	त्	अघोष मृदु तालव्य रंजित दंत्य स्पर्श (अ.)
ऐन	ع	अ/अनुच्चरित	घोष ग्रसन्य संघर्षी (अ.)

इनके अतिरिक्त "तन्वीन" का उच्चारण "नून" के समान होता है और "अलिफ़-ए-मक़्सूरा" का उच्चारण "अलिफ़" के समान होता है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

४. उर्दू लिपि में कई-कई वर्ण एक साथ मिलाकर लिखे जाते हैं। शब्दों में वर्णों को मिलाना कुछ स्थानों पर अनिवार्य है और कुछ स्थानों पर वैकल्पिक, जैसे "अभिमन्यु" को آبھی منیو भी लिखा जा सकता है और آبھیمنیو भी। इसके अतिरिक्त निम्नांकित वर्णों के वाद अन्य वर्ण मिलाकर नहीं लिखा जा सकता, यथा—अलिफ़, दाल, डाल, ज़ाल, रे, अड़े, ज़े, तीन नुक़्तों की 'ज़े', वाओ, नून ग़ुन्ना (ا, د, ڈ, ذ, ر, ڑ, ز, ژ, و, ں)।

५.५ हिंदी वर्ण तथा उर्दू में उनके संवादी वर्ण :

स्वर-वर्णों का वर्णन ४.४.१ में किया गया है। यहां "ऋ" तथा अन्य व्यंजन-वर्णों का ज़िक्र किया जा रहा है :—

हिंदी	उर्दू	उदाहरण
ऋ	رِ	ऋषि – رِشی
ँ	ن	साँस – سانس ~ سآنس
	शब्दांत में ں द्वारा	माँ – ماں
क्	ک	काला – کالا
ख्	کھ	खाल – کھال
ग्	گ	गाल – گال
घ्	گھ	घर – گھر
ङ	ن	पङ्ख – پنکھ
च्	چ	चोर – چور
छ्	چھ	छतरी – چھتری
ज्	ج	जूता – جوتا
झ्	جھ	झाड़ू – جھاڑو
ञ्	ن	पञ्कज – پنکج
ट्	ٹ	टूटना – ٹوٹنا
ठ्	ٹھ	ठोकर – ٹھوکر
ड्	ڈ	डर – ڈر
ढ्	ڈھ	ढोलक – ڈھولک
ण्	ن	पण्डा – پنڈا
त्	ت	ताली – تالی
थ्	تھ	थाली – تھالی
द्	د	दाल – دال

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

हिंदी	उर्दू	उदाहरण
ध्	دھ	धान – دھان
न्	ن	नमक – نمک
प्	پ	पानी – پانی
फ्	پھ	फन – پھن
ब्	ب	बेर – بیر
भ्	بھ	भेड़ – بھیڑ
म्	ن या م	माँ – ماں , अम्बार – انبار
य्	ئے ، ئ ، ی	यार – یار , कोयला – کوئلہ
		मेयर – میئر , गाय – گائے , चाय – چائے
र्	ر	राम – رام
ल्	ل	लोटा – لوٹا
व्	ؤ ، و	वहाँ – وہاں , गाँव – گاؤں
श्	ش	शेर – شیر
ष्	ش	शेषनाग – شیش ناگ
स्	س	सरोता – سروتا
ह्	ﮨ ~ ہ	हिरण – حرن ~ ہرن
क्ष्	کچھ ، چھ	क्षेत्रपाल – چھیترپال , कुरुक्षेत्र – کرکچھیتر
ज्ञ्	گیہ	ज्ञान – گیان
ड़्	ڑ	लड़ाई – لڑائی
ढ़्	ڑھ	पढ़ाई – پڑھائی

५.६ व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का लिप्यंतरण :

१. अरवी-फ़ारसी के या इनके माध्यम से प्राप्त नाम उर्दू में वैसे ही लिखे जाते हैं, जैसे अरवी-फ़ारसी में, यद्यपि उनका उच्चारण कितना ही भिन्न क्यों न हो। ये नाम हिंदी में उर्दू या हिंदी में प्रचलित उच्चारणानुसार लिखे जाते हैं, यथा—

انصاری – अन्सारी
حسین – हुसेन
عزیز – अज़ीज़
ذاکر – ज़ाकिर
زورا – ज़ूरा ~ ज़ूरा (एक पर्वत का नाम)
ضیاءالحق – जियाउलहक़, आदि।

جاں نثار – जां निसार
سلطانہ – सुल्ताना
اظہار – इज़हार
زندہ رزم – ज़िंदा-रज़म (सोहराब का चाचा)

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

२. इसके विपरीत संस्कृत के तत्सम नाम हिंदी में वैसे ही लिखे जाते हैं जैसे संस्कृत में, चाहे इनका उच्चारण संस्कृत से भिन्न क्यों न हो। उर्दू में ऐसे नाम उर्दू में प्रचलित उच्चारणानुसार लिखे जाते हैं। ऐसे रूप तत्सम की अपेक्षा तद्भव रूपों से अधिक समानता रखते हैं, यथा—

हिंदी	उर्दू	उर्दू में उच्चारण
ऋषिकेश	رشی کیش	रिशीकेश्
कृष्ण	کرشن یا کسن	किसन्, किर्शन्
चंद्र	چندر یا چند	चंद, चंदर्
यमुना	جمونا	जमुना
लक्ष्मण	لچھمن	लछ्मन्
गोविंद	گوبند	गोविंद
शरण	سرن	सरन्
कर्ण सिंह	کرن سنگھ	करर् सिंग~सिंध
क्षेत्रपाल	چھیترپال	छेत्तर्पाल्
ज्ञान प्रकाश	گیان پرکاش	ग्यान् पर्काश्

टिप्पणी :

(१) जो लोग अपने नामों को तद्भव रूपों में उच्चरित करते हैं, वे हिंदी में भी "किसन, चंद, जमुना, गोविंद, सरन, करन" आदि लिखते हैं।

(२) संस्कृत तथा हिंदी में "ऋ, ष, क्ष, ज्ञ" वर्णों के उच्चारण भिन्न-भिन्न हैं।

(३) भारतीय मूल के नामों में प्रायः उन वर्णों का प्रयोग नहीं होता, जिन का केवल अरबी-फ़ारसी के तत्सम शब्दों के लिए होता है। फिर भी अपवादस्वरूप कुछ उदाहरण मिल जाते हैं।

(अ) "अलिफ़" के स्थान पर "ऐन" या "हे" का प्रयोग कुछ नामों के लेखन में अनिवार्य रूप से तथा कुछ नामों के लेखन में वैकल्पिक रूप से मिलता है, उदाहरणार्थ—

राजा – راجا ~ راجہ   जवाहरलाल – جواہرلال ~ جواہرلعل

मेहता – مہتہ   खन्ना – کھنّہ

नंदा – نندہ   भट्टाचार्य – بھٹّاچاریہ, आदि

(आ) "सीन" या "शीन" के स्थान पर "स्वाद" का प्रयोग भी देखा जा सकता है, यथा—

मिश्र~मिश्रा – مصرا – [=मिस्रा]

संप्रति مشر रूप भी मिलता है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

४. कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञाओं में जातिवाचक संज्ञाओं का कुछ भाग रहता है, वहां भी दोनों भाषाओं के रूपों में अंतर पाया जाता है, यथा—

संयुक्त राज्य अमेरिका ممالکِ متحدہ امریکہ [=मुमालिक् मुत्तह्दा अम्रीका]

लालसागर بحرِ احمر [= वह्रे अह्मर्]

वंगाल की खाड़ी خلیجِ بنگال [= खलीजे वंगाल्]

५. उर्दू में "इ" तथा "उ" लिखे तो जा सकते हैं, किंतु कुछ नामों में इनके स्थान पर "ए" तथा "ओ" मिलता है, यदचपि इनका उच्चारण [इ] तथा [उ] ही होता है, यथा—

विदिशा – ویدیشا नागपुर – ناگ پور

रघुनाथ – رگھوناتھ सुभाषचंद्र – سوبھاش چندر

इसी प्रकार "अमृता" के लिए "अमरीता" लिखा जाता है— امریتا ।

इसके विपरीत कुछ नामों में "ए" के स्थान पर "इ" मिलता है, यथा—

महेंद्र, जोगेंद्र = مہندر , جوگندر , आदि

६. शब्दांत में उर्दू के वर्ण "दाल्, डाल्, ज़ाल्, रे, अड़े, ज़े", तीन नुक़्तों वाली "ज़े" तथा "वाओ" में "अ" तथा "इ" नहीं लिखा जा सकता। अत: इन के स्थान पर "आ" तथा "ई" रूप मिलते हैं, यथा—

आंध्र – آندھرا [= आन्धरा]

रवि – روی [= रवी] आदि

७. उर्दू में कुछ नामों को हिंदी से भिन्न लिखने की परंपरा चल पड़ी है, यदचपि उर्दू में उन नामों को वहुत-कुछ हिंदी के अनुरूप लिखा जा सकता है। इस प्रकार "स" के स्थान पर उर्दू में "श" तथा "श" के स्थान पर उर्दू में "स" मिलता है, यथा—

राजेंद्र प्रसाद – راجیندر پرشاد [= पर्शाद्]

शरतचंद्र – سَرت چندر [= सरत्]

८. जिन नामों में हिंदी में "स्थान" लिखा जाता है, उर्दू में "स्तान" लिखा जाता है, यथा—

राजस्थान – راجستان [= राजस्तान्]

कुछ नामों में हिंदी में भी "स्तान" ही लिखा जाता है, यथा—पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, आदि।

९. नामों के संक्षिप्त रूप लिखने में उर्दू में अंग्रेजी के वर्णों का उनके उच्चारण के साथ प्रयोग होता है, यथा— آر-پی-اگروال – आर. पी. अग्रवाल। हिंदी में भी ऐसा है। किंतु संप्रति हिंदी में देवनागरी वर्णों के लिखने की प्रवृत्ति बढ़ रही है, यथा—'रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल' के लिए 'रा. प्र. अग्रवाल'।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

१०. कुछ विदेशी नामों के लिप्यंतरण में दो वातें द्रष्टव्य हैं :—

(क) चूंकि उर्दू अरवी-फ़ारसी लिपि में लिखी जाती है, अत: अरव देशों व ईरान के वहुत से नाम उर्दू में तत्सम रूपों में लिखे जाते हैं, जवकि हिंदी में ये ही नाम अंग्रेजी के माध्यम से प्राप्त होने के कारण कुछ भिन्न प्रकार लिखे जाते हैं, यथा—

हिंदी	उर्दू	उर्दू में उच्चारण
अफ्रीका	آفریقہ	अफ़्रीका
अलेक्ज़ेंडरिया	اسکندریہ	इस्कन्दरिया
कान्सटेंटीनोपिल	قسطنطنیہ	क़ुस्तुन्तुनिया
जिब्राल्टर	جبل الطارق	जव्लुल्तारीक़्
येरुसलम	یروشلم	येरोशलम्
पैलिस्टाइन ~ फ़िलिस्तीन	فلسطین	फ़लस्तीन्

(ख) कुछ विदेशी नामों के लिप्यंतरण मे हिंदी ने वर्ण को आधार बनाया और उर्दू ने स्वन को। रूसी में अंतिम "v" वर्ण का उच्चारण [फ़्] होता है। रूसी नामों के लिप्यंतरण मे हिंदी मे शव्दांत में भी "व" वर्ण देखा जा सकता है, जवकि उर्दू में वर्ण "फ़े" [फ़्], यथा—व्रेझनेव~व्रेज़नेव –بریژنیف [व्रेझ्नेफ़्~व्रेज़नेफ़्]।

५.७ आगत शब्दों का लिप्यंतरण :

हिंदी तथा उर्दू दोनों भापाओं में आगत शव्दों का स्रोत समान है। किंतु अंतर उनकी संख्या तथा प्रतिशत में है। उर्दू की अपेक्षा हिंदी में तत्सम शव्दों की वहुलता है। इनके स्थान पर उर्दू में तद्भव रूप अधिक मिलते हैं। इसके विपरीत उर्दू में अरवी-फ़ारसी के तत्सम (वर्तनी में अनिवार्यत:; उच्चारण भिन्न भी हो सकता है) शव्दों का वाहुल्य है। हिंदी में भी अरवी-फ़ारसी से आगत शव्दों की संख्या तो वहुत है, पर उनका हिंदी में एकीकरण हो गया है, इसलिए उर्दू की अपेक्षा हिंदी में इन शव्दों का उच्चारण अरवी-फ़ारसी के मूल उच्चारण से वहुत भिन्न है। हिंदी में अरवी-फ़ारसी के शव्दों को लिखने के लिए कुछ अतिरिक्त वर्णों का प्रयोग किया जाता है। ये वर्ण के नीचे विंदी लगाकर वनाए गए हैं, यथा— "क़, ख़, ग़, ज़," तथा "फ़"। हिंदी में इन वर्णों का प्रयोग कुछ लोग अनिवार्यत: करते हैं। कुछ लोगों के लिए इनका प्रयोग वैकल्पिक है तथा कुछ लोग इन वर्णों का प्रयोग विल्कुल नहीं करते। यही वात पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों पर भी लागू होती है।

अंग्रेज़ी से आगत शव्दों को दोनों भापाओं ने समान रूप से ग्रहण किया है। उदाहरणार्थ– "कैमरा, फ़ोटो, रेडियो, सिनेमा" आदि सैकड़ों शव्द दोनों भापाओं में समान उच्चरित होते हैं और तदनुसार लिखे भी जाते हैं। अंग्रेज़ी से आगत शव्दों के उर्दू में लिप्यंतरण से संवंधित कुछ तथ्य इस प्रकार हैं :—

१. अंग्रेज़ी के पश्च अर्धविवृत ह्रस्व व दीर्घ स्वरों के लिए हिंदी में "ऑ" वर्ण का प्रयोग होता है। उर्दू में इस स्वनों को व्यक्त करने के लिए "अलिफ़" [आ] का ही प्रयोग होता है या प्रचलित उच्चारणानुसार किसी अन्य वर्ण का।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

२. अंग्रेज़ी के दंत्योष्ठ्य संघर्षी [फ़्] तथा घोष वर्त्स्य संघर्षी [ज़्] के लिए उर्दू में क्रमशः "फ़े" तथा "ज़े" वर्णों का प्रयोग होता है। जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि हिंदी में इन स्वनों के लिए कुछ लोग "फ़" तथा "ज़" वर्णों का प्रयोग करते हैं, और कुछ लोग इनके स्थान पर "फ" और "ज" वर्णों का ही प्रयोग करते हैं।

३. अरब देशों व ईरान में अंग्रेज़ी के अघोष और घोष दंत्य संघर्षी स्वनों (जो अंग्रेज़ी में "th" द्वारा लिखे जाते हैं) को "ث" (से) तथा "ذ" (ज़ाल्) वर्णों द्वारा लिखा जाता है। अरबी तथा फ़ारसी शब्दों को, जिनमें "से" तथा "ज़ाल" वर्ण होते हैं, अंग्रेज़ी में "th" वर्णों द्वारा लिखा जाता है। उर्दू में ऐसा नहीं है, यद्यपि उर्दू अरबी-फ़ारसी लिपि का ही प्रयोग करती है। उर्दू में अंग्रेज़ी के इन स्वनों को क्रमशः "تھ" [थ्] तथा "ڈ" [द्] वर्णों द्वारा लिखा जाता है। उर्दू भाषी अपनी भाषा के [थ्] तथा [द्] स्वनों के लिए अंग्रेजी में क्रमशः "th" तथा "d" वर्णों का प्रयोग करते हैं और "ث" और "ذ" वर्णों के लिए अंग्रेज़ी में क्रमशः "s" तथा "z" वर्णों का प्रयोग करते हैं।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

षष्ठम अध्याय

हिंदी : अंग्रेज़ी

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

६. हिंदी तथा अंग्रेज़ी

६.१ अंग्रेज़ी भाषा, लिपि तथा साहित्य :

अंग्रेज़ी भारोपीय परिवार की एक समृद्ध भाषा है। यह कई देशों—इंग्लैंड, संयुक्तराज्य अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, आदि—में मातृभाषा के रूप में बोली जाती है। इन देशों के अतिरिक्त यह कई देशों की राजभाषा भी है। भारत में यह सह-राजभाषा है।

अंग्रेज़ी रोमन लिपि में लिखी जाती है, जो वर्णात्मक है। इसमें २६ वर्ण हैं। इन वर्णों में दो प्रकार का अंतर है—प्रथम, एक ही वर्ण बड़े (कैपिटल) तथा छोटे (स्माल) रूप में भिन्न-भिन्न लिखा जाता है। दूसरे, छपाई के वर्णों तथा हाथ से लिखे वर्णों के रूपों में थोड़ा सा अंतर रहता है। ये २६ वर्ण अंग्रेज़ी के २० स्वर व संध्यक्षर तथा २४ व्यंजनों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

संसार के साहित्यिक इतिहास में अंग्रेजी भाषा व साहित्य का विशिष्ट स्थान है। अंग्रेज़ी साहित्य का आरंभ १४ वीं शताब्दी से माना जाता है। "चॉसर" अंग्रेज़ी का प्रथम कवि माना गया है। तब से अब तक अंग्रेज़ी में हर विधा में अच्छे-से-अच्छा साहित्य विरचित हुआ है। "शेक्सपियर" का नाम संसार के महान कवियों व नाटक-कारों में गिना जाता है। जर्मन लेखक "गर्टी" के अनुसार, "अंग्रेजी साहित्य तथा अंग्रेज़ी भाषा में अथाह विचार-सागर लहराता है"। अतीत में भारतीय भाषाओं के साहित्य पर संस्कृत के प्रभाव का वर्चस्व रहा। १९ वीं शताब्दी से भारतीय भाषाओं व साहित्य पर अंग्रेजी प्रभाव देखा जा सकता है। इस साहित्य के प्रभाव का प्रथम दर्शन बंगला साहित्य में मिलता है। "रवींद्रनाथ ठाकुर" तथा "बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय" जैसे महान कलाकारों तक के लेखन में अंग्रेज़ी साहित्य की स्पष्ट छाया दिखाई देती है। बंगला साहित्य के साथ-साथ मराठी व गुजराती ने भी अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव को व्यक्त व अव्यक्त रूप से ग्रहण किया है। इस शताब्दी का हिंदी साहित्य भी अंग्रेजी साहित्य की विचार-शैली, लेखन-शैली तथा शब्द-भंडार से प्रभावित रहा है। भारतीय साहित्य की सभी विधाओं पर अंग्रेज़ी की छाप स्पष्ट देखी जा सकती है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि भारतीयों ने अंग्रेज़ी-इतर साहित्य को भी, चाहे वह विदेशी हो या अपने ही देश की किसी अन्य भाषा का, अंग्रेज़ी के ही माध्यम से जाना। हिंदी अंग्रेजी साहित्य की ही नहीं वरन अंग्रेजी भाषा की भी ऋणी है। आधुनिक काल में हिंदी ने अंग्रेजी के बहुत से तकनीकी तथा संस्कृति-शब्द लेकर अपनी भाषा को समृद्ध बनाया है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

६.२ संपूर्ण लिप्यंतरण :

देवनागरी से रोमन लिपि में (संस्कृत के संदर्भ में)

जैसा कि प्रथम अध्याय में कहा गया है कि यूरोपीय विद्वानों ने संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन रोमन लिपि में किया। इसके लिए उन्हें रोमन लिपि के वर्णों में कुछ परिवर्तन करने पड़े। उन्होंने संस्कृत की वर्णमाला को रोमन लिपि में इस प्रकार ग्रहण किया :—

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	लृ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
a	ā	i	ī	u	ū	ṛ	ḷ	e	ai	o	au	am	ah

क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ
k	kh	g	gh	ṅ	c	ch	j	jh	ñ
ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
ṭ	ṭh	ḍ	ḍh	ṇ	t	th	d	dh	n
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	
p	ph	b	bh	m	y	r	l	w/v	
श	ष	स	ह		क्ष	त्र	ज्ञ		
ś	ṣ	s	h		kṣ	tr	jñ		

रोमन लिपि वर्णात्मक है और देवनागरी अक्षरात्मक। देवनागरी के व्यंजन वर्णों में 'अ' जुड़ा रहता है। अतः रोमन में इन व्यंजनों को लिखने के लिए 'a' वर्ण जोड़ दिया जाता है, यथा— क=ka; ख=kha, आदि।

६.३ प्रासंगिक लिप्यंतरण :

६.३.१ हिंदी से अंग्रेजी :

६.३.१.१ व्यक्तिवाचक संज्ञाएं :

भारत में अंग्रेज़ी का प्रचार-प्रसार अंग्रेज़ी शासन काल से अब तक चला आ रहा है। अंग्रेज़ी में भारतीय नामों को कैसे लिखा जाए, इसके लिए कुछ परंपराएं निश्चित हो गई हैं यद्यपि इनके कुछ अपवाद भी मिल जाते हैं। व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के लिप्यंतरण में हिंदी के किस वर्ण के लिए अंग्रेज़ी में कौन सा वर्ण प्रयुक्त होगा, उसके संकेत निम्नांकित हैं :—

हिंदी वर्ण	अंग्रेज़ी वर्ण	उदाहरण
अ	a, e, u, o	रमा : Rama, सुंदर : Sunder, बदायूं : Budaun, टंडन : Tondon
आ	a, ah (केवल शब्दांत में), au	राम : Ram, एटा : Etah, आरा : Arah, कावेरी : Cauvery
	सिनेमा आदि के पोस्टरों में 'आ' के लिए "aa" का भी प्रयोग देखा जा सकता है।	साज : Saaz

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

हिंदी वर्ण	अंग्रेजी वर्ण	उदाहरण
इ	i	इला : Ila, निशि : Nishi
ई	i, ee, y	सीता : Sita, गीता : Geeta/Gita, स्वामी : Swamy
उ	u, o	उमा : Uma, मुरादाबाद : Moradabad
ऊ	u, oo	राजू : Raju, स्वरूप : Swarup, फूल सिंह : Phool Singh
ए	e, ey, a	रमेश : Ramesh, मुळे : Muley, वाजपेयी : Vajpayee
ऐ	ai, y	भैरों (सिंह) : Bhairon, हैदर अली : Hyder Ali
ओ	o, o – e	भोपाल : Bhopal, किशोर : Kishore
औ	au, ao, o – e	औरंगज़ेब : Aurangzeb, नौरोजी : Naoroji, इंदौर : Indore
ँ	n	बूँदी : Bundi, बदायूँ : Budaun
क	k, c, ck	कालीचरण : Kalicharan, कावेरी : Cauvery, मलिक : Mullick
क़	q	क़ुतुब मीनार : Qutub Minar
ख, ख़	kh	खंडवा : Khandwa, ख़लील : Khalil
ग	g	ग्वालियर : Gwalior, गणेश : Ganesh
ग़	gh	मुग़ल : Mughal, ग़ज़ल : Ghazal
घ	gh	घासीराम : Ghasi Ram
ङ	n	मङ्गल सिंह : Mangal Singh
च	ch	चित्रकूट : Chitrakoot
छ	chh	छर्रा : Chharra (एक स्थान नाम)
ज	j	जय सिंह : Jai Singh
ज़	z	आज़ाद : Azad
झ	jh	झम्मन लाल : Jhamman Lal
ञ	n	सञ्जय : Sanjay
ट, त	t	टनकपुर : Tanakpur, तोता राम : Tota Ram
ठ, थ	th	ठाकुर : Thakur, थम्मन लाल : Thamman Lal
ड, द	d	डूंगरपुर : Dungarpur, दौलत राम : Daulat Ram
ड़	r	खड़ग[1] सिंह : Kharag Singh, इमामबाड़ा : Imambara
ढ, ध	dh	ढंढेर : Dhandher, धनी राम : Dhani Ram
ढ़	rh	रायगढ़ : Raigarh
ण, न	n	पुणे : Pune, नानक : Nanak
प	p	पीलीभीत : Pilibhit

१. तत्समरूप—खड्ग ।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

हिंदी वर्ण	अंग्रेजी वर्ण	उदाहरण
फ	ph	फूलपुर : Phoolpur
फ़	f	फ़ैज़ाबाद : Faizabad
ब	b	बंसी लाल : Bansi Lal
भ	bh/v[1]	भैया लाल : Bhaiya Lal
म	m	मुरारी[2] लाल : Murari Lal
य	y, ai	यमुना : Yamuna, जयपुर : Jaipur
र	r	राम : Ram
ल	l	लक्ष्मी : Laxmi
व	v, w, o	वेद प्रकाश : Ved Prakash, विश्वास : Vishwas, देव : Deo, अमरावती : Amraoti/Amravati
श, ष	sh	शेष : Shesh
स,	s, ss	सुरेश : Suresh, उड़ीसा : Orissa, दास : Dass
ह	h	हरि प्रसाद : Hari Prasad
क्ष	ksh, chh, x	कुरुक्षेत्र : Kurukshetra, क्षेत्रपाल : Chhetrapal, बक्षी : Baxi, दीक्षित : Dixit
ज्ञ	gy	ज्ञान प्रकाश : Gyan Prakash

उपर्युक्त वर्णन एक सामान्य प्रवृत्ति का द्योतक है। इसके अतिरिक्त भारतीय नामों को अंग्रेजी में लिखने की कुछ अन्य परंपराएं इस प्रकार हैं :—

१. वर्ण "X" का प्रयोग "क्श" या "क्ष" के अतिरिक्त "क्स" के लिए भी देखा जा सकता है, यथा— सक्सेना=Saxena। इसका वैकल्पिक रूप Saksena भी प्रचलित है।

२. "सिंह" को "Singh" लिखा जाता है।

३. भारत में "बरेली" नाम के एक से अधिक स्थान हैं। उत्तर प्रदेश के संभागीय मुख्यालय "बरेली" की वर्तनी "Bareilly" है तथा मध्यप्रदेश राज्य के जिला रायसेन के तहसील मुख्यालय "बरेली" की वर्तनी "Bareli" है।

४. उर्दू से अनभिज्ञ हिंदी भाषी "क़" तथा "ग़" का प्रयोग नहीं करते। अतः वे इन स्वनों वाले नामों को क्रमशः "q" व "gh" के स्थानपर "k" व "g" द्वारा लिखते हैं। उदाहरणार्थ :—"क़मरुद्दीन" व "ग़ुलाम मुहम्मद" के लिए "Kamruddin" व "Gulam Mohammad" का लिखना इस बात का द्योतक है।

५. स्वतंत्रता पूर्व अंग्रेजी में कुछ भारतीय नाम इस प्रकार लिखे जाते थे :— कानपुर – Cawnpore, मथुरा – Muttra, सागर – Saugor, गंगा – Ganges, आदि। संप्रति इन नामों को इस प्रकार लिखा जाता है :—Kanpur, Mathura, Sagar, Ganga।

---

१. बंगाल में रहने वाले कुछ हिंदी भाषी "भ" के लिए "v" वर्ण का प्रयोग करते हैं, यथा– शोभा : Shova।

२. तत्समरूप—मुरारि।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

६. कुछ अन्य भारतीय नामों के अंग्रेज़ी में लिप्यंतरण के विचित्र उदाहरण इस प्रकार हैं :—

डॉ. आनंद कुमार स्वामी	Dr. Ananda Commara Swamy
राय (सरनेम)	Roy
लक्ष द्वीप	Laccadiv
उमेश चंद्र वैनर्जी	Woomesh Chandra Banerji
दादाभाई नौरोजी	Dadabhoy Naoroji
कलकत्ता (वंगला–कलिकाता)	Calcutta
जलंधर	Jullundur
भरुच	Broach, आदि

७. वंगला भाषी संस्कृत के तत्सम नामों को, जिनमें "व" है, अंग्रेज़ी में " b " वर्ण द्वारा लिखते हैं, यथा— रवींद्र नाथ : Rabindranath । इसी प्रकार "अ" वर्ण के लिए " o " वर्ण भी देखा जा सकता है, यथा— विमल : Bimol, आदि ।

८. भारतीय नामों को संक्षिप्त रूप में लिखते समय रोमन वर्णों का ही प्रयोग किया जाता है, यथा—वराहगिरि वेंकट गिरि : V. V. Giri । किंतु अंग्रेज़ी में हिंदी वर्णों का भी प्रयोग देखा जा सकता है, यथा—Ka, Naa, Subramanium ।

९. मराठी भी देवनागरी में लिखी जाती है। किंतु मराठी भाषी जब कुछ तत्सम नामों का अंग्रेज़ी में लिप्यंतरण करते हैं तब वे हिंदी भाषियों द्वारा किए गए लिप्यंतरण से भिन्न होते हैं, यथा—

तत्सम नाम	अंग्रेज़ी में लिप्यंतरण	
	हिंदी भाषियों द्वारा	मराठी भाषियों द्वारा
ऋ	ri	ru
ऋषि कुमार	Rishi Kumar	Rushi Kumar
झ	jh	z
अंबाझरी	Ambajhari	Ambazari
क्ष (आद्य)	chh	ksh
क्षेत्रपाल	Chhetrapal	Kshetrapal
ज्ञ	gy	dny
ज्ञान प्रकाश	Gyan Prakash	Dnyan Prakash

इसका कारण यह है कि इन वर्णों के उच्चारण हिंदी व मराठी में भिन्न हैं।

१०. तेलुगु आदि कुछ भाषाओं में शब्दांत "अ" उच्चरित होता है, अतः वे तत्सम नामों को लिखते समय शब्दांत में " a " वर्ण का प्रयोग करते हैं, यथा— "सरोज" को हिंदी भाषी "Saroj" लिखेगा और तेलुगु भाषी "Saroja" ।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

६.३.१.२ आगत शब्द :

जैसाकि प्रथम अध्याय में बताया जा चुका है कि दूसरी भाषाओं के नामों का लिप्यंतरण आगत शब्दों के लिप्यंतरण से भिन्न होता है, क्योंकि आगत शब्द प्रथम की अपेक्षा लिप्यंतरित भाषा में अधिक अनुकूलित हो जाते हैं। हिंदी के बहुत से शब्द अंग्रेज़ी में अनुकूलित हो चुके हैं। इनमें कुछ शब्द अंग्रेज़ी ने हिंदी से सीधे लिए हैं और कुछ शब्द किसी अन्य भाषा के माध्यम से अंग्रेज़ी ने प्राप्त किए हैं। इनमें कुछ शब्द ऐसे भी हैं, जो हिंदी में भी अरबी-फ़ारसी आदि भाषाओं से आए हैं। अंग्रेज़ी में इन शब्दों को किस प्रकार लिखा जाता है और हिंदी से इनका क्या व्यतिरेक है, इसे स्पष्ट करने के लिए यहां यह मान लिया गया है कि ये शब्द हिंदी के हैं, चाहे ऐतिहासिक दृष्टि से अंग्रेज़ी ने इन शब्दों को सीधे हिंदी से प्राप्त न कर किसी अन्य भाषा से ही क्यों न लिया हो। यहां केवल कुछ बहुप्रचलित शब्द हिंदी वर्ण-क्रम में दिए जा रहे हैं, यथा—

अवतार	avatar	आना	anna
कच्चा	kutcha/kuchcha	कढ़ी	curry
करोड़	crore	कुली	coolie
कौड़ी	cowrie	ख़ाकी	khaki
खाट	cot	गुरु	guru
घाट	ghat	घी	ghee
चटनी	chutney	चीता	cheetah
जंगल	jungle	छींट	chintz
ज़नाना	zenana	टमटम	tomtom
ठग	thug	डकैती	dacoity
धोती	dhoti	दरबार	durbar
पक्का	pukka/pucca	परदा	purdah
पाजामा	pyjamas	पालकी	palanquin
पैसे	paise	बंगला	bunglow
बाज़ार	bazar~bazaar	बाबू	baboo
मन	maund	महात्मा	mahatma
मुल्ला	mullah	मोहर	mohur
राजा	rajah	रुपया	rupee
लाख	lac~lakh	लूट	loot
वाला	walah	शिकार	shikar
साड़ी	sari	साहब	sahib
सिपाही	sepoy	सेर	seer
हरम	harem	हुक्का	hookah

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

टिप्पणी :

इन शब्दों का उच्चारण अंग्रेज़ी भाषी अपनी भाषा के स्वनिमिक दायरे के अंतर्गत करते हैं। यह उच्चारण हिंदी उच्चारण से काफ़ी भिन्न भी हो सकता है, यथा— हिंदी– हुक्का : अंग्रेजी– [हुक्अ], हिंदी– ठग : अंग्रेज़ी– [थग्], आदि।

६.३.२ अंग्रेज़ी से हिंदी :

यहां एक बात का उल्लेख करना अनिवार्य प्रतीत होता है। हिंदी से अंग्रेज़ी के प्रासंगिक लिप्यंतरण के संदर्भ में व्यक्तिवाचक संज्ञाओं तथा आगत शब्दों का उल्लेख अलग-अलग किया गया है। अंग्रेज़ी से हिंदी के प्रासंगिक लिप्यंतरण के संदर्भ में इन दोनों को मिला दिया गया है। अंग्रेज़ी की व्यक्तिवाचक संज्ञाएं तथा आगत शब्द जब हिंदी में लिखे जाते हैं, तो सामान्यत: स्वन को ही आधार माना जाता है, वर्ण को नहीं।

६.३.२.१ अंग्रेज़ी स्वन तथा उनके लिए प्रयुक्त हिंदी वर्ण :

अंग्रेज़ी से अन्य भारतीय भाषाओं में लिप्यंतरण अंग्रेज़ी के भारतीय उच्चारणानुसार होता है, न कि मानक अंग्रेज़ी के उच्चारणानुसार। दूसरे, अज्ञानता के कारण भारतीय जब अंग्रेजी के मानक उच्चारण से अनभिज्ञ होते हैं, तब अंग्रेज़ी वर्ण के सामान्य उच्चारण को आधार मानकर लिप्यंतरण कर दिया जाता है। हिंदी भाषी अंग्रेज़ी के किन स्वनों को देवनागरी के किन वर्णों द्वारा लिखते हैं, इसकी एक सामान्य रूपरेखा यहां प्रस्तुत है।

अंग्रेज़ी के स्वनों को मराठी भाषी देवनागरी के किस वर्णों द्वारा लिखते हैं, इसकी विस्तृत चर्चा की आवश्यकता नहीं है, फिर भी हिंदी से जहां अंतर है, उसको कोष्ठक में लिख दिया गया है।

निम्नांकित उदाहरणों के चयन में "गिम्सन" की पुस्तक की सहायता ली गई है, किंतु उसमें लिखे अपवादों को छोड़ दिया गया है।

अंग्रेज़ी स्वन	अंग्रेज़ी वर्तनी	हिंदी वर्ण	उदाहरण
[ई]	canteen, complete, season key, field, receive, machine	ई	कैंटीन, कंप्लीट, सीजन की, फ़ील्ड, रिसीव, मशीन
[इ]	kit, city, wicket, building business, England, ladies, private	इ ई, ए (वर्तनी के कारण)	किट, सिटी, विकिट, बिल्डिंग बिजनिस, इंग्लैंड लेडीज़, प्राइवेट
[ए]	set, head, Thames	ए	सेट, हेड, टेम्ज़∾टेम्स
[ऐ]	lamp, hand	ऐ (मराठी में) 'अॅ')	लैंप, हैंड

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

[अ]	cup, London, young, blood, does	अ	कप, लंदन, यंग, ब्लड, डज़्
[आ][1]	branch, heart, aunt, sergeant	आ	ब्रांच, हार्ट, आंट∾आन्ट, सार्जेंट
	किंतु clerk, Derby	अ	क्लर्क, डर्बी
[ह्रस्व ऑ]	boss, watch, knowledge, Australia	ऑ/आ	बॉस, वॉच, नॉलेज, ऑस्ट्रेलिया,
	किंतु cough	अ	कफ़
ऑ	horn, law, bought, fault, salt	ऑ/आ	हार्न, लॉ, बॉट, फ़ाल्ट, साल्ट
	door, more, oar, court, four	ओ	डोर, मोर, ओर, कोर्ट, फ़ोर

टिप्पणी :

हिंदी की कुछ पुस्तकों में जहां "ऑ" वर्ण का प्रयोग नहीं होता, इसके लिए "औ", "ओ" या "आ" वर्णों का प्रयोग देखा जा सकता है।

[उ]	sugar, wolf, book, should	उ	सुगर, वुल्फ़, बुक, शुड
[ऊ]	mood, do,	ऊ	मूड, डू,
	group, June,		ग्रूप, जून,
	shoe, juice, blue,		शू, जूस, ब्ल्यू,
	chew		च्यू
[दीर्घ अ]	first, earth, nurse, work, journey	अ	फस्ट∾फर्स्ट, अर्थ, नर्स, वर्क, जर्नी
[अ]	waiter, razor,	अ	वेटर, रेज़र
	woman, famous, colour, figure		वूमन, फ़ेमस, कलर, फ़िगर
	किंतु sofa, formula	आ	सोफ़ा, फ़ार्मूला

अंग्रेज़ी में किसी भी स्वर-वर्ण या स्वर-वर्णों के योग से [अ] उच्चरित हो सकता है। दूसरे, बलाघातहीन अक्षरों में कोई भी स्वर "अ" उच्चरित हो सकता है। हिंदी में अंग्रेज़ी मूल उच्चारण की अज्ञानता के कारण अंग्रेजी वर्तनी के स्वर-वर्ण का सामान्य उच्चारण लिप्यंतरित कर दिया जाता है, यथा— "इंग्लंड" के लिए "इंग्लैंड"। इस शब्द में "a" का उच्चारण [अ] है। किंतु "a" का उच्चारण अधिकतर शब्दों में [ऐ] होता है। अतः भारतीय मूल अंग्रेज़ी उच्चारण न जानने के कारण [ऐ] उच्चारण को ही सही मानते हैं।

संध्यक्षर :

[एँइ]	late, rail, eight, they, great	ए	लेट, रेल, एट, दे, ग्रेट
[आइ]	time	आइ	टाइम (मराठी-टाईम)
	guide, light, aisle		गाइड, लाइट, आइल
	high, dry	आई	हाई, ड्राई
	pie, dye		पाई, डाई

---

१. दीर्घ, विवृत, पश्च, गोलित मूल स्वर।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

[ह्रस्व आँइ]	boy	आँय	बॉय
	point	आँइ	पॉइंट
[अउ]	home, road, toe, soul	ओ	होम, रोड, टो, सोल
	blow		ब्लो
[आउ]	house, town	आउ	हाउस, टाउन
	housing	मराठी 'औ'	हौसिंग (मराठी)
[इअ]	beer, dear, period	इय/इअ	बिअर, डियर, पीरियड
	beard, fierce		बियर्ड, फ़ियर्स
	idea, Ian, museum		आइडिया, इअन, म्यूज़ियम
[ऍअ]	share, chair, pear, area	एय/ए	शेयर, चेयर, पियर, एरिया
[उअ]	poor	उअ	पुअर
	pure	यो/यौ	प्योर~प्यौर
	tour	ऊ	टूर
	security	यु	सेक्युरिटी
[ह्रस्व आँअ ~आँ]	store	ओ	स्टोर
		मराठी 'ओअ'	स्टोअर (मराठी)

व्यंजन :

[प्]	pen	प्	पेन
	hippy	प्प् (वर्तनी के कारण)	हिप्पी
[ब्]	bat	ब्	बैट
[ट्]	table, letter	ट् (मूर्धन्य)	टेबुल, लेटर
	Thames		टेम्ज़~टेम्स
	packed	ड् (वर्तनी के कारण)	पैक्ड
[ड्]	double, daddy	ड्	डबल, डैडी
	London	द्	लंदन
[क्]	Cake, bouquet	क्	केक, बुके
	cholera		कॉलरा

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

टिप्पणी :

बलाघातयुक्त अक्षर में आद्य /p, t, k/ अंग्रेज़ी में महाप्राण (हलका-सा) हो जाते हैं। हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं में ये अल्पप्राण ही उच्चरित होते हैं और तदनुसार "प, ट, क," वर्णों द्वारा लिखे जाते हैं।

[ग्]	garden, struggle	ग्	गार्डन, स्ट्रगिल
	ghost	घ् (वर्तनी के कारण)	घोस्ट
[च्]	church, catch	च्	चर्च, कैच
	lecture, question		लेक्चर, क्वेस्चन
[ज्]	jug, judge, gem	ज्	जग, जज, जेम
	suggest, grandeur		सजेस्ट, ग्रेंजर
	soldier		सोल्जर
[फ़्]	fan, pharmacy	फ़्/फ्	फ़ैन, फ़ार्मेसी
	off, cough	(मराठी में 'फ')	ऑफ़, कफ़
[व़्]	television	व़् (मराठी में 'व्ह')	टेलीविज़न~टेलिविज़न
	of, nephew	फ़् (वर्तनी के कारण)	ऑफ़, ने़फ्यू

टिप्पणी :

अंग्रेज़ी के इस स्वन के लिए मध्यप्रदेश में "व्ह" का प्रयोग देखा जा सकता है। बिहार के उस प्रदेश में, जो बंगाल से मिला हुआ है, "भ" का प्रयोग देखा जा सकता है।

[थ़्]	thermameter	थ़्	थर्मामीटर
[द़्]	leather, the	द़्	लेदर, द/दि[1]
[स्]	sample, pass	स्	सैम्पल~-पुल, पास
	science, piece		साइंस, पीस
	box	क्स्	बॉक्स
[ज़्]	zone, scissors	ज़्	ज़ोन, सीज़र्स
	(zz, x = [gz], भी)	(मराठी में 'झ')	

---

१. कुछ मराठी भाषी इस को "धि" लिखते हैं (देखिए–पु. ल. देशपांडे द्वारा लिखित 'बटाट्याची चाळ' में, पृ.–१, पंक्ति–११; पृ. –२, पंक्ति–२३, इत्यादि)।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

[श्]	shoe, machine, schedule, sure	श्	शू, मशीन, शिड्यूल, श्योर
	nation, mission, mansion,		नेशन, मिशन, मेंशन
	special,		स्पेशल
	luxury	ग्ज़ (अज्ञानता वश)	लग्ज़री
[ष़्]	–si–, s, u के पूर्व z, फ्रेंच से आगत शब्दों में-ge यथा–rouge	ज़्	रूज़
[ह्]	hill	ह्	हिल
	white	व्ह् (वर्तनी के कारण)	व्हाइट
[म्]	mat, summer, autumn	म्	मैट, समर, ऑटम
[न्]	nib, dinner	न्	निब, डिनर
	knowledge, sign, pneumonia		नॉलेज, साइन, निमोनिया
[ङ]	uncle	१. अनुस्वार	अंकल
	single, ring	२. अनुस्वार + ग	सिंगल, रिंग

टिप्पणी :

अंग्रेज़ी में यह स्वन "ng" द्वारा प्रदर्शित होता है, या कंठ्य स्वन के पूर्व "n" वर्ण द्वारा। शब्दांत में अंग्रेज़ी में यदि केवल [ङ] स्वन भी हो (यथा—रिङ), तो भी हिंदी में "अनुस्वार" + "ग" द्वारा ही दर्शाया जाता है।

[ल्]	light, hill	ल्	लाइट, हिल
	table		टेबुल~टेबल

टिप्पणी :

अंग्रेज़ी में /l/ स्वनिम के तीन स्वन हैं— (1) [ल्], (2) अघोष [ल्], (3) कोमल तालव्यरंजित [ल्]। अंतिम [ल्] अंग्रेज़ी में आक्षरिक भी है अर्थात स्वर की भांति प्रयुक्त होता है। हिंदी में आक्षरिक [ल्] के स्थान पर "उल", "इल" या "अल" प्रयुक्त होता है, यथा—टेबुल / टेबिल / टेबल।

[र्]	road, sorry	र्	रोड, सॉरी
	writers, diarrhoea		राइटर्स, डायरिया

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

अर्धस्वर :

[य्]	yak, Daniel	य्	याक, डेनियल
	u, ew, eu, eau, ui के द्वारा भी [यू] की ध्वनि निकलती है, यथा—union, Europe		यूनियन, यूरोप
	किंतु—suit	"यू" के स्थान पर "ऊ"	सूट
[व्]	wood	व्	वुड
	'q' व 'g' के बाद 'u' द्वारा भी, यथा—queen, language		क्वीन, लैंग्वेज
	whale, wheat	ह्व, व्ह (वर्तनी के कारण)	ह्वेल, व्हीट

६.३.२.२ वर्तनी से प्रभावित लिप्यंतरण :

कुछ अंग्रेज़ी शब्दों का मानक उच्चारण न जानने के कारण तथा उनकी वर्तनी के प्रभाव के कारण भारतीय भाषाओं में स्वन के स्थान वर्णानुसार लिखने के उदाहरण काफ़ी मिलते हैं। इनको निम्न शीर्षों के अंतर्गत रखा जा सकता है :—

(१) अनुच्चरित वर्ण :

अंग्रेज़ी शब्दों में बहुत से वर्ण अनुच्चरित रहते हैं। भारतीय अज्ञानतावश उनमें कुछ का उच्चारण करते हैं और तदनुसार लिखते भी है, यथा—

अंग्रेज़ी शब्द	मानक अंग्रेज़ी उच्चारण	हिंदी भाषियों द्वारा लिप्यंतरण
Cholomondeley (सरनेम)	च्अमलि	चोलोमॉन्डेले
Callaghan	कैल्अहन्	कैलेघन
asthma	ऐस्म्अ	अस्थमा
postman	पोॅउस्मन्	पोस्टमैन

(२) अंग्रेज़ी में व्यंजन के पूर्व तथा शब्दांत में आनेवाला "r" अनुच्चरित रहता है। हिंदी भापी इसका उच्चारण भी करते हैं और तदनुसार इसको लिखते भी हैं।

(३) अंग्रेज़ी में "घ" स्वन नहीं है। भारतीय अंग्रेज़ी में जहां भी "gh" देखते हैं, हिंदी में "घ" द्वारा लिखते हैं, यथा— 'Cuuingham' के लिए 'कनिंघम' जब कि इसका मानक उच्चारण है— [क्अनिङअम्]।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

(४) "wh" का उच्चारण अंग्रेज़ी में [व्] होता है। अंग्रेज़ी में इसका वैकल्पिक उच्चारण [ह्व्] भी है। हिंदी भाषी लिखने में इसके लिए "व्ह" का प्रयोग करते हैं, यथा— 'whitehouse' के लिए 'व्हाइट हाउस', जब कि इसका मानक उच्चारण है [वाइट्~ह्वाइट् हाउस्]।

(५) अंग्रेज़ी में "x" के कई उच्चारण हैं, यथा– [क्स्, क्श्, ग्ज़्]। हिंदी भाषी कुछ शब्दों में एक के स्थान पर दूसरा लिख देखते हैं, यथा— 'luxury' के लिए 'लग्ज़री'। इसका मानक उच्चारण है :— [ल्अक्शरि]।

(६) अंग्रेज़ी में घोष स्वन के बाद संज्ञा बहुवचन या क्रिया एक वचन वाचक परप्रत्यय "s" का उच्चारण [ज़्] होता है। हिंदी भाषी इसके स्थान पर "स्" लिखते हैं यथा— "लाइन्ज़" (Civil Lines) के स्थान पर "लाइन्स" का प्रयोग। यह ग़लती बहुत सामान्य है। जो अंग्रेज़ी के प्रोफ़ेसर हैं या जो इंग्लैंड व अमेरिका में कई वर्षों तक रह चुके हैं, वे भी इससे अछूते नहीं हैं। हिंदी के प्रसिद्ध कवि "बच्चन" जो इंग्लैंड भी रहे और अंग्रेज़ी के प्रोफ़ेसर भी रहे, ने २५ सितंबर १९७७ के 'धर्मयुग' में पृ. २९ पर "बसेरे से दूर" में "टर्न्स", "विङ्स" आदि लिखा है। संप्रति हिंदी में कुछ लोग "ज़" लिखने लगे हैं, यथा— "बुक्सेलर्ज़", आदि।

इसके विपरीत अंग्रेज़ी में क्रिया में "ed" प्रत्यय का उच्चारण [ट्] हो जाता है यदि इस प्रत्यय के पूर्व अघोष स्वन हो, यथा— fixed = [फ़िक्स्ट्]। हिंदी भाषी इन स्थानों पर भी "ड" लिखते हैं, यथा— 'फिक्स्ड'।

(७) अंग्रेज़ी में बलाघात स्वनिमिक है, हिंदी में नहीं है। अंग्रेज़ी में बलाघात के परिवर्तन के कारण उच्चारण में परिवर्तन हो जाता है, यथा—"man" का उच्चारण [मैन] है। पर "Englishman" में "man" पर बलाघात न होने के कारण इसका उच्चारण [मन्] होता है। भारतीय इसको भी "मैन" ही लिखते हैं।

(८) अंग्रेज़ी में व्यंजन–द्वित्व उच्चरित नहीं होता। यदि लेखन में दो समान व्यंजन वर्ण हों, तो भी एक ही व्यंजन का उच्चारण होगा। हिंदी भाषी ऐसे कुछ शब्दों में उस व्यंजन का द्वित्व उच्चारण भी करते हैं और तदनुसार लिखते भी हैं।

(९) "of" को हिंदी में प्रायः "ऑफ़" लिखा जाता है। कुछ लोग "ऑव" भी लिखते हैं। पर इसके मानक उच्चारण [ऑव्, अव्, व्, तथा फ़्] हैं।

(१०) कुछ रूप आजकल हिंदी में मुक्त परिवर्तन में प्रयुक्त हो रहे हैं, यथा—सीमेंट~सिमेंट, युनिवर्सिटी~यूनीवर्सिटी, आदि।

६.३.२.३ अंग्रेज़ी संयुक्त शब्दों के आद्य वर्णों से निर्मित नाम :

कुछ कई शब्दों वाले नाम अंग्रेज़ी में उन शब्दों के आद्य वर्णों को लेकर एक शब्द के रूप में प्रयुक्त होते हैं। अब ये नाम इतने प्रचलित हो गए हैं कि बहुत से लोग यह नहीं जानते हैं कि इनके संपूर्ण रूप क्या हैं। हिंदी ने भी कुछ ऐसे संयुक्त शब्दों को एक शब्द

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

के रूप में ग्रहण कर लिया है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :—

हिंदी में प्रयुक्त शब्द	अंग्रेजी में प्रयुक्त शब्द	अंग्रेजी में प्रयुक्त पूर्ण रूप
मीसा	MISA	Maintenance of Indian Security Act
नेफ़ा	NEFA	North East Frontier Agency
आजकल इस शब्द की आवश्यकता नहीं रही है। अतः इसका प्रयोग नहीं होता।		
पिन	PIN	Postal Index Number
सीटो	SEATO	South East Asiatic Treaty Organisation
यूनीसेफ़	UNICEF	United Nations International Children Emergency Fund

---

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

सप्तम अध्याय

उपसंहार

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

७. उपसंहार

७.१ भविष्य में सभी भारतीय भाषाएं देवनागरी में भी लिखी जाएं, यह कोई असंभव बात नहीं है। किसी योजना को पूर्ण करने हेतु उस से पूर्व में किए जाने वाले कार्यों का विशेष महत्व रहता है, जो नींव का कार्य करते हैं। ऐसे कार्यों की भूमिका के फलस्वरुप ही कोई योजना सफल हो पाती हैं। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए लेखक ने यह कार्य अपने हाथ में लिया है। अभी कई भारतीय भाषाओं पर कार्य करना शेष है। यदि अन्य भाषाएं देवनागरी में लिखी जाएं, तो निम्न बातें द्रष्टव्य हैं :—

१. कुछ भाषाओं के लिये देवनागरी में नए वर्णों की आवश्यकता होगी, जैसे तेलुगु आदि भाषाओं के लिए ह्रस्व "ए" तथा ह्रस्व "ओ" के लिए देवनागरी में दो नए वर्ण चाहिए।

२. नए वर्ण कई प्रकार से बनाए जा सकते हैं। पुराने वर्णों में विशेषक चिह्न लगा कर भी नए वर्णों का निर्माण किया जा सकता है। देवनागरी में यह तरीक़ा पहले से ही सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है। अरबी-फ़ारसी तथा अंग्रेज़ी के कुछ स्वनों को प्रकट करने के लिए हिंदी-देवनागरी में कुछ वर्णों के नीचे बिंदी लगाकर काम चलाया जाता है, यथा— "क़, ख़, ग़, फ़" तथा "ज़"।

३. कुछ भाषाओं के लिए देवनागरी के कुछ वर्ण अतिरिक्त हो सकते हैं। ऐसे वर्णों को इन भाषाओं में प्रयुक्त देवनागरी में जारी रखने का कोई औचित्य नहीं है। जब फ़ारसी ने अरबी लिपि को अपनाया तथा उर्दू ने अरबी–फ़ारसी लिपि को अपनाया, तब लिपि के कुछ वर्ण, जिनकी फ़ारसी व उर्दू में कोई आवश्यकता नहीं थी, को बनाए रखा गया। यह प्रवृत्ति अवैज्ञानिक है। अतः इस प्रकार की ग़लती को अन्य भाषाओं को देवनागरी में लिखते समय दोहराना नहीं चाहिए।

४. प्रत्येक वर्ण का स्वनात्मक मूल्य हिंदी से निर्णित न होकर लिप्यंतरित भाषा के संदर्भ में ही निश्चित करना उचित व वैज्ञानिक होगा। उदाहरणार्थ बंगला के संदर्भ में "क्ष" का स्वनात्मक मूल्य [ख] तथा [क्ख] ही मानना होगा।

५. प्रत्येक भाषा के संदर्भ में उपस्थित समस्याओं पर पृथक-पृथक विचार करना ही समीचीन होगा। उदाहरणार्थ बंगला में "ब" तथा "व" दोनों के लिए एक ही वर्ण है। जिन शब्दों में बंगला में [व] उच्चारण है, उनको देवनागरी में "व" द्वारा तथा यदि इस का उच्चारण [व] नहीं है, तो "ब" द्वारा लिखना ठीक रहेगा, यथा-विश्व, बिश्वास, आदि। "विश्ब" या "विश्वास' लिखना मेरी दृष्टि से ठीक नहीं है।

६. बंगला, ओड़िया, गुजराती आदि भाषाओं में "क़, ख़, ग़" आदि स्वनों का प्रयोग नहीं होता है। अतः जब इन भाषाओं को देवनागरी में लिखा जाए, तो भी इन वर्णों के प्रयोग की आवश्यकता नहीं है।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

७.२ व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का लिप्यंतरण :

आधुनिक भारतीय संदर्भ में भारतीय भाषाओं में व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के लिप्यंतरण की समस्या का आकलन ठीक प्रकार से नहीं हो पाया है। भारतीय रेलवे और डाक विभाग को इसकी विशेष आवश्यकता है। मुझे लगभग पूरे भारत की यात्रा का अवसर मिला। मुझे यह देखकर बड़ा दुख हुआ कि कुछ स्टेशनों पर जो स्थान-नाम लिखे हैं, उनके हिंदी, अन्य क्षेत्रीय भाषा, तथा अंग्रेजी के संस्करणों में तालमेल बैठाना कठिन प्रतीत होता है। स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद तक इस भूल को नहीं सुधारा गया। रेलवे विभाग द्वारा प्रकाशित हिंदी व अंग्रेज़ी टाइम-टेबलों को यदि देखा जाए, तो कुछ नामों के लिप्यंतरण में काफ़ी अंतर दिखाई देता है। विदेशी व भारतीय भाषाओं की पुस्तकों के अनुवाद जब हिंदी में किए जाते हैं, तब व्यक्तियों, पुस्तकों के शीर्षक आदि के नामों के लिप्यंतरण की समस्या उपस्थित होती है। विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रचलित लिप्यंतरण की विभिन्न प्रवृत्तियों को देखते हुए ऐसा आवश्यक प्रतीत होता है कि लिप्यंतरण से संबंधित कोई एक सामान्य नीति का पालन किया जाना चाहिए। इस बात पर बल देना चाहिए तथा व्यक्तियों व संस्थाओं को समझाना चाहिए कि वे इस संबंध में समान नीति का परिपालन करें। सौभाग्यवश भारत में प्रचलित अधिकतर लिपियां ब्राह्मी से विकसित हुई हैं और उन सभी में वर्णों की संख्या लगभग समान है। यह सत्य है कि शत प्रतिशत एकरूपता लाना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। फिर भी एक नीति निर्देशक सिद्धांत यही होना चाहिए कि, जहां तक संभव हो, सभी भारतीय भाषाओं में नामों के लिप्यंतरण में एकरूपता रहे। रेलवे ओर डाक विभाग इस कार्य को अधिक सरल बना सकते हैं। इस संबंध में निम्न सुझाव दिए जा सकते हैं:—

(१) जो नाम जिस रूप में एक भाषा में रूढ़ हो गए हैं, उनको देवनागरी में भी वैसे ही लिखना चाहिए। हिंदी रूपों को अन्य भाषाओं में लादना ठीक नहीं होगा।

(२) अभी तक भारतीय दूसरी भाषाओं में प्रयुक्त नामों को अंग्रेज़ी के माध्यम से प्राप्त करते रहे हैं। इस प्रवृत्ति को तत्काल त्याग देना चाहिए। इस बात का प्रयत्न करना चाहिए कि जहां तक संभव हो प्रत्येक नाम को भारतीय भाषाओं में मूल उच्चारण के अनुसार लिखा जाए। वैसे यह विवादास्पद विषय है। इससे कई समस्याएं सामने आएंगी। बहुत से मूल नामों से हम परिचित नहीं है। उदाहरणार्थ कितने लोग जानते हैं कि 'जर्मनी' का नाम "जर्मनी" नहीं, वरन इसका नाम "डॉयचलांट्" है। हो सकता है कि इस प्रवृत्ति को यदि बढ़ावा दिया जाए तो आरंभ में थोड़ी अराजकता बढ़ सकती है। किंतु भविष्य में इसके बहुत लाभ होंगे। हिंदी भाषी जैसे-जैसे विदेशी भाषाओं के संपर्क में आ रहे हैं, यह प्रवृत्ति अपने आप बढ़ रही है। 'धर्मयुग' आदि पत्रिकाओं में कुछ लेखक कुछ नामों को अंग्रेज़ीकृत रूप में न लिख कर मूल भाषा के उच्चारणानुसार लिखते हैं, यथा—तोल्स्तोइ/तल्स्तोइ, म्यूनिख, हेरमान हेसे (एक जर्मन विद्वान), तोक्यो/तोकियो, मिज़ोरम, गुवाहाटी, आदि। अंग्रेजी के माध्यम से प्राप्त करने के कारण इन के लिए कुछ समय पूर्व तक केवल ये रूप प्रचलित थे— टॉल्सटॉय, म्यूनिच~-क, हरमन हेस, टोकियो/टोक्यो, मिजोराम, गोहाटी।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

इस प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलना चाहिए। जब हम 'कोलंब' लिख सकते हैं, तो क्या कारण है कि हम अंग्रेज़ी की नक़ल पर 'कोलंबू' लिखें। भारत सरकार को भी चाहिए कि वह अन्य देशों व उनके नेताओं के नामों को देवनागरी में लिखते समय मूल उच्चारण के बारे में जानकारी प्राप्त कर ले।

(३) कुछ देशों के लिए संस्कृत में प्रचलित नामों को भारतीय भाषाओं में लिखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा नहीं मिलना चाहिए, जैसे 'वियतनाम' के लिए 'चम्पा' लिखना ठीक नहीं है।

(४) संस्कृत के तत्सम नामों को संस्कृत वर्णानुसार लिखा जाना ठीक है, चाहे अन्य भारतीय भाषा में उसका उच्चारण कितना ही भिन्न क्यों न हो। कुछ नाम आधुनिक भाषाओं में इतने प्रचलित हो गए हैं कि लोग मूल संस्कृत वर्तनी से अनभिज्ञ हैं। ऐसे नामों का पुनः-संस्कृतीकरण करना ठीक नहीं होगा। उदाहरणार्थ, संस्कृत में 'कैलास,' रूप मिलता है जब कि हिंदी में 'कैलाश' रूप ही बहुप्रचलित है।

बहुप्रचलित तद्भव नामों को भी तत्सम बनाने का प्रयास नहीं किया जाना चाहिए। हिंदी में कुछ लोग अपने नामों में 'सरन, किसन' आदि रूप लिखते हैं। इनको ज्यों का त्यों ही रहने दिया जाना चाहिए।

(५) भारतीय भाषाओं में प्रचलित तत्सम-इतर नामों को दूसरी भाषाओं में लिखते समय क्षेत्रीय भाषा में प्रचलित उच्चारण को लिप्यंतरण का आधार बनाना उचित होगा।

(६) शुद्ध स्वनात्मक तथा वर्णात्मक लिप्यंतरण के अपने-अपने लाभ और हानियाँ हैं। विदेशी नामों के लिप्यंतरण में स्वनात्मक लिप्यंतरण को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। वैसे वर्णात्मक लेखन का यह लाभ है कि इसको पुनः अपनी मूल लिपि में लिप्यंतरित किया जा सकता है, यद्यपि यह लिपि स्वनात्मक हो या न हो। फिर भी इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि एक ही शब्द के लेखन में दोनों का मिलाना बिल्कुल ग़लत होगा।

(७) विदेशी नामों को हिंदी में लिखते समय किसी नए वर्ण के निर्माण की आवश्यकता नहीं है। फिर भी जिन वर्णों, यथा—'क़, ख़, ग़, फ़, ज़, ऑ'— का हिंदी में प्रयोग होने लगा है, उनको जारी रखना ही ठीक है।

७.३ आगत शब्दों का लिप्यंतरण :

भारतीय भाषाओं में आगत शब्दों के लिप्यंतरण के संबंध में निम्नांकित नीतियों का पालन करना उचित होगा :—

(१) विदेशी शब्द किसी भारतीय भाषा में जिन रूपों में समीकृत हो गए हैं, उनको देवनागरी में भी लिखते समय उन्हीं रूपों में लिखना श्रेयस्कर होगा।

(२) किसी भारतीय भाषा में किसी विदेशी स्वन के लिए जिस वर्ण के प्रयोग की परंपरा है, उसी का पालन किया जाना चाहिए। जैसे बंगला में अंग्रेज़ी घोष दंतोष्ठ्य संघर्षी स्वन के लिए 'भ' वर्ण का प्रयोग होता है। यदि बंगला को देवनागरी में लिखा जाए, तो भी इस अंग्रेज़ी स्वन के लिए 'भ' वर्ण का ही प्रयोग किया जाना चाहिए, न कि हिंदी की भांति 'व' वर्ण का।

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

(३) हिंदी (तथा अन्य भारतीय भाषाओं में भी) में कुछ विदेशी शब्द एकीकृत होकर जिस रूप में लिखे जाने लगे हैं, उनको उसी रूप में लिखा जाना चाहिए। पुनः तत्समीकरण (विदेशी भाषा के संदर्भ में) की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना ठीक नहीं है। उदाहरणार्थ, हिंदी में 'अर्दली' रूप इतना अधिक प्रचलित है कि इस के स्थान पर 'ऑर्डर्ली' लिखना ठीक नहीं होगा।

७.४ नए रूपों की आदात्री भाषा की वर्तनी-व्यवस्था से अनुरूपता तथा दात्री भाषा-भाषी की ग्राह्यता के सिद्धांत :

दूसरी भाषाओं के नए शब्दों (व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ तथा आगत शब्द दोनों ही) को भारतीय भाषाओं में लिखते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इन शब्दों की वर्तनी आदात्री भाषाओं (भारतीय भाषाओं) की वर्तनी-व्यवस्था के अनुरूप हो। साथ ही इस बात का प्रयत्न करना चाहिए कि उस वर्तनी से जो उच्चारण हो, वह दात्री भाषा के उच्चारण से, यदि शत प्रतिशत संभव न हो तो, अधिक से अधिक निकट हो। दात्री भाषा तथा आदात्री भाषा की स्वनिमिक व्यवस्था की भिन्नता के कारण कुछ शब्द दात्री भाषा के उच्चारणानुसार आदात्री भाषा में नहीं लिखे जा सकते हैं। इसलिए कई वैकल्पिक वर्तनियाँ सुझाई जा सकती हैं। ऐसे अवसर पर इन में से उस वर्तनी को स्वीकार करना चाहिए, जो दात्री भाषा के बोलने वालों को अधिक ग्राह्य हो। यह बात उदाहरण से अधिक स्पष्ट हो जाएगी। फ्रेंच में संवृत अग्र गोलित स्वर होता है, जिस को अंतर्राष्ट्रीय स्वन लिपि में [y] लिखा जाता है। देवनागरी में इस के लिए कोई चिह्न नहीं है। हिंदी में इस के लिए तीन विकल्प हैं। या तो इस स्वर को 'इ' लिखा जाए या 'उ' या 'उइ'। इस प्रकार '**Dupont**' को तीन प्रकार से लिखा जा सकता है:—(१) दुपों, (२) दिपों, (३) दुइपों। इन रूपों में प्रथम रूप फ्रेंच भाषी को अधिक ग्राह्य होगा। अतः हिंदी में प्रथम रूप को ही स्वीकार करना ठीक होगा। जहाँ तक मुझे मालूम है 'ग्राह्यता की मात्रा' (degree of acceptability) पर किसी ने कुछ कार्य नहीं किया है। लेखक का विचार भविष्य में इस पर कुछ शोध कार्य करने का है। शोध के बाद ही यह तय किया जा सकता है कि क्या ग्राह्यता की मात्रा को वस्तुनिष्ठ ढंग से मापा जा सकता है या यह केवल व्यक्तिनिष्ठ है। फिर भी इस समय इतना तो कहा ही जा सकता है कि नए शब्दों की वर्तनी के चयन में इस सिद्धांत का सहारा लिया जा सकता है।

———

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

परिशिष्ट

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

परिशिष्ट

(अ) सहायक ग्रंथ सूची

(क) हिंदी तथा मराठी

१. कुलकर्णी, सुधाकर बालकृष्ण : नाव काय ठेवाल? अर्थात मराठी व्यक्तिनाम कोश
पुणे, रुचि प्रकाशन, शनिवार पेठ, १९७२

२. केळकर, अशोक रामचंद्र : शब्दवेध (मराठी लेख)
'महाराष्ट्र-साहित्य-पत्रिका', जोड अंक १७६–१७७, वाङमय-समालोचन विशेषांक,
पुणे, महाराष्ट्र साहित्य परिषद, १९७१

३. केंद्रीय हिंदी निदेशालय : देवनागरी – विकास, परिवर्धन और मानकीकरण
दिल्ली, १९७४

४. चाटुर्ज्या, सुनीतिकुमार : भारतीय-आर्य भाषा और हिंदी
दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५७

५. तिवारी, भोलानाथ : १. अनुवाद-विज्ञान
दिल्ली, शब्दकार, १९७२
२. भाषा विज्ञान कोश
वाराणसी, ज्ञानमंडल, १९६४

६. द्विवेदी, देवीशंकर : देवनागरी और हिंदी
'वार्षिक लेखक गोष्ठी'
चंडीगढ़, भाषा विभाग, हरियाणा, १९७७

७. नरवणे, विश्वनाथ दिनकर : भारतीय व्यवहार कोश
(सोलह भाषाओं का शब्द-कोश)
मुंबई, त्रिवेणी संगम, भाषा विभाग, १९६१

८. पाठक, गंगाप्रसाद : अंग्रेज़ी भाषा में प्रयुक्त हिंदी शब्द
'भाषा' त्रैमासिक का विश्व हिंदी सम्मेलन अंक,
दिल्ली, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, १९७५

९. महरोत्रा, रमेश चंद्र : हिंदी ध्वनिकी और ध्वनिमी
दिल्ली, मुंशीराम मनोहरलाल, १९७०

१०. वर्मा, धीरेंद्र : हिंदी भाषा का इतिहास
इलाहाबाद, हिंदुस्तानी एकेडेमी, १९६२

११. वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का स्थायी आयोग, भारत सरकार : मानविकी-शब्दावली–V— भाषाविज्ञान,
दिल्ली, १९६९

१२. शास्त्री, सीताराम : उर्दू-हिन्दी परिचय कोश
'गवेषणा' वर्ष-११, अंक-२२
आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, १९७३

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

(ख) अंग्रेज़ी

13—Chatterji, S. K. : The Origin and Development of the Bengali Language
London, George Allen & Unwin Ltd., 1970.

14—Census of India : Language Monographs (1961 Series)
Grammatical Sketches of Indian Languages with Comparative Vocabulary and Text
Delhi, Controller of Publications, 1975.

15. Encyclopaedia Britannica Inc. : The New Encyclopaedia Britannica : Micropaedic, Vol. X, 15th ed., Chicago, 1964.

16—Gimson, A. C. : An Introduction to the Pronunciation of English
London, Edward Arnold Ltd., 1969.

17—Jones, Daniel : Everyman's English Pronouncing Dictionary
London, The English Language Book Society, 1971.

18—Kelkar, A. R. : Studies in Hindi-Urdu—I : Introduction and Word Phonology
Pune, Deccan College, 1968.

19— Pei, Mario A. & Gaynor, Frank : A Dictionary of Linguistics
New York, Philosophical Library, 1954.

20—Platts, John T. : A Grammar of the Hindustani or Urdu Language
Delhi, Munshiram Manoharlal, 1967.

(आ) सामग्री प्राप्ति के अन्य स्रोत

१. हिंदी व अंग्रेज़ी में नागपुर, दिल्ली व बंबई से प्रकाशित विभिन्न समाचारपत्र व पत्रिकाएँ।

२. विभिन्न भाषाओं की एटलसें :

३. बटाटचाची चाळ (मराठी) (लेखक-पु. ल. देशपांडे) : मौज प्रकाशन, बंबई से १९७६ में प्रकाशित लेख-संग्रह।

४. तरुण भारत (मराठी) : नागपुर से प्रकाशित दैनिक समाचारपत्र।

५. महाराष्ट्र टाइम्स (मराठी) : बंबई से प्रकाशित दैनिक समाचारपत्र।

६. जन्मभूमि (गुजराती) : बंबई से प्रकाशित दैनिक समाचारपत्र।

७. संदेश (गुजराती) : अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक समाचारपत्र

८. अमृत बाजार पत्रिका (बंगला) : कलकत्ता से प्रकाशित दैनिक समाचार-पत्र।

९. सोवियत भूमि (हिंदी) : सोवियत संघ के भारत स्थित दूतावास के सूचना विभाग के लिए, २५, बारा खंबा रोड नई दिल्ली से प्रकाशित।

१०. सोवियत देस (उर्दू) : " " " " " "

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji

CC.0 Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

अभिमत

लिप्यंतरण के संबंध में हिंदी में कतिपय फुटकर लेख पत्रिकाओं में अवश्य प्रकाशित हुए हैं। किंतु सभी तथ्यों को दृष्टि-पथ में रखकर पूर्वापर पर विचार करते हुए वास्तव में यह पुस्तक प्रथम प्रयास है। इस दृष्टि से डॉ. राम प्रकाश सक्सेना की इस कृति का ऐतिहासिक महत्व है। डॉ. सक्सेना ने अपनी इस कृति में लिप्यंतरण के सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक पक्षोंपर गहराई से विचार किया है। आपने इस पुस्तक में यूरोप की विविध भाषाओं में महीनों, देशों, नगरों एवं व्यक्तियों के नामों का लिप्यंतरण कर इन भाषाओं में उपलब्ध व्यतिरेकी स्थिति पर विशिष्ट प्रकाश डाला है। इस पुस्तक की यह विशेषता है कि इसमें हिंदी के साथ मराठी, गुजराती, बंगला, उर्दू तथा अंग्रेजी के स्वनों का तुलनात्मक अध्ययन करके लिप्यंतरण की विधि को स्पष्ट किया गया है। उपसंहार में लेखक ने लिप्यंतरण के संबंध में अनेक तथ्यपरक सुझाव देकर इस पुस्तक को अत्याधिक उपादेय बना दिया है।

भारत तथा दक्षिण एशिया की सभी लिपियाँ ब्राह्मी से व्यत्पन्न हैं। आज इस बात की आवश्यकता है कि इन सभी भाषाओं के लिए लिप्यंकन एवं लिप्यंतरण की समान व्यवस्था की जाए। इससे इन लिपियों के प्रयोग करने वालों में भावात्मक एकता का विकास होगा। इस दिशा में डॉ. सक्सेना का प्रयास प्रशंसनीय है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिंदी जगत, विशेषकर भाषाविज्ञान के विद्वानों में यह पुस्तक समादृत होगी।

उदयनारायण तिवारी

इलाहाबाद

Vidya Niwas Mishra Collection, Varanasi. Courtesy. Dayanidhi Mishra ji